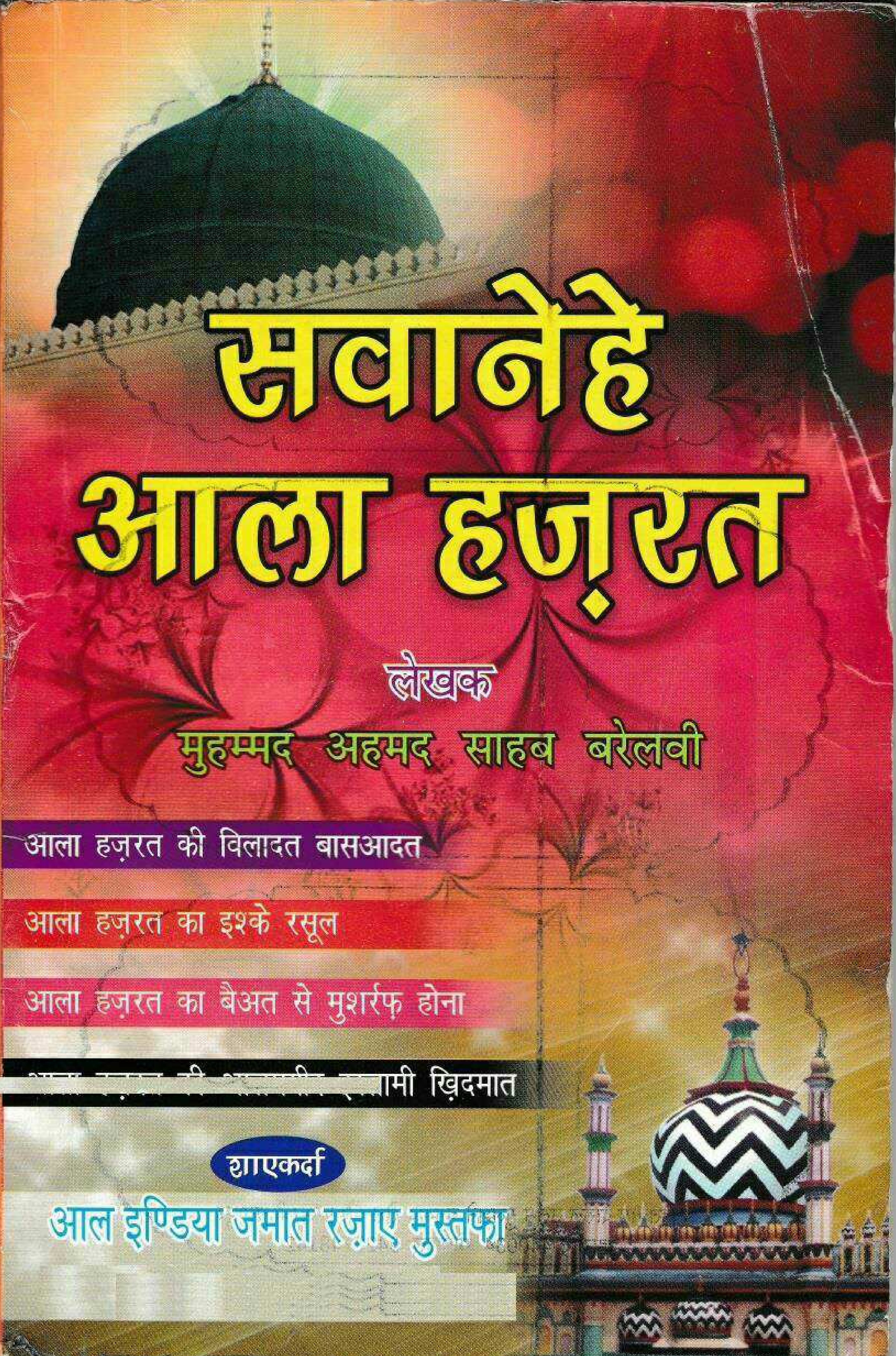

सवानेहे आला हज़रत

लेखक

मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी

आला हज़रत की विलादत बासआदत

आला हज़रत का इश्के रसूल

आला हज़रत का बैअत से मुशर्रफ़ होना

[redacted]ामी ख़िदमात

शाएकर्दा

आल इण्डिया जमात रज़ाए मुस्तफा

नाम किताब	सवानेहे आला हज़रत
मुसन्निफ़	मुहम्मद अहमद नूरी रज़वी क़ादिरी उर्फ़ मुहम्मद महताब अली M.Sc. CAIIB
माख़ज़	हयाते आला हज़रत –मलिकुल उलमा सय्यद मौलाना सय्यद ज़फर उद्दीन बिहारी अलैर्रिरहमा सवानेहे आला हज़रत –हज़रत अल्लामा बद्रुद्दीन साहब कादिरी रज़वी अलैहिर्रहमा सीरते आला हज़रत –हज़रत मौलाना हसनैन रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्मो दानिशवरों की नज़र में –हज़रत मौलाना यासीन अख़तर मिस्बाही साहब इमाम अहमद रज़ा नम्बर (अलमीज़ान) इमाम अहमद रज़ा नम्बर(हिजाज)
नाशिर	रज़ा दारूल इशाअत मदरसा जामिया नूरिया रज़विया बाकर गंज बरेली
कम्पयूटर कम्पोजिग	मुहम्मद अहमद मिर्ज़ा तौहीद बेग रजवी

पेश लफ़्ज़

एक अरसे से तमन्ना थी कि आला हज़रत मुजद्दिद दीनो मिल्लत शाह मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु की सवानेह उम्री और जीवन परिचय हिन्दी में कुछ इस अन्दाज़ से पेश किया जाये जो आला हज़रत पर शाय दूसरे हिन्दी किताबचों से कुछ अलग हो और उसमें सफ़हात भी ज़्यादा हों और साथ ही साथ कुछ रद्दे वहाबिया (जो कि आला हज़रत की ज़िन्दगी का अहम मक़सद रहा) भी हो।

आला हजरत पर मुख़्तलिफ़ .ज़ुबानों में काम हो रहा है जैसे उर्दू, अरबी, हिन्दी, गुजराती, मलायालम, बंगला और अंग्रेज़ी वग़ैरह यहाँ तक कि आला हज़रत पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, इंगलैन्ड, दक्षिणी अफ़्रीका, अमेरीका वग़ैरह में रिर्सच भी होती रहती हैं। आज हिन्दी जो आला हज़रत के ज़िले की पहली ज़ुबान बन चुकी है, सबसे कम काम शायद इसी .ज़ुबान में हुआ है। मुझे अल्लाह तआला और उसके हबीब की ज़ात से उम्मीद है कि यह किताब काफ़ी टापिक कवर कर रही है। ये सब फ़ैज़ाने आला हज़रत और मेरे पीर–ओ–मुर्शिद शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ नूरी हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़मे हिन्द का ख़ास करम है जो मुझ नाचीज़ से यह काम लिया।

अल्लाह तआला और उसके हबीब के हुक्म फ़ज़्ल–ओ–करम से और बुज़ुर्गाने दीन सिलसिलए क़ादिरिया बिलख़ुसूस पीराने पीर दस्तगीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अबदुल क़ादिर जीलानी के फ़ैज़ से यह किताब " सवानेहे आला हज़रत " आपके हाथों में है। उम्मीद है आशिक़ाने आला हज़रत को यह किताब बहुत पसन्द आयेगी। उम्मीद है यह किताब आला हज़रत के मुख़ालफ़ीन को भी राह दिखएगी चूंकि इसमें आला हज़रत के ख़िलाफ़ फैलाई गई बातों को भी जगह जगह समझाने की कोशिश की गई है।

आला हज़रत से लोग सिर्फ़ इसलिए मुख़ालिफ़ हो जाते हैं कि आप बदमज़हबों के ख़िलाफ़ बहुत सख़्त रवय्या रखते थे। उन लोगों से मैं यह कहना चाहूँगा कि पहले वह समझें कि बदमज़हबियत क्या है, उसके क्या नुक़सान हैं और अल्लाह व रसूल ने बदमज़हबों से कैसे बर्ताव का हुक्म दिया और यह हुक्म क्यूँ दिया। अगर आला हज़रत ने हमें .क़ुरआन और हदीस का वही हुक्म याद दिलाया और उस पर चलने की हिदायतें देते रहे और हमें भी बदमज़हबों के ख़िलाफ़ सख़्त रहने का हुक्म देते रहे तो इसमें ग़लत क्या है।

आला हज़रत ने हमेशा अल्लाह और रसूल की महब्बत का दर्स दिया सबसे ज़्यादा इसी बात पर ज़ोर दिया है और महब्बत का तक़ाज़ा भी यही है कि दोस्त के दुश्मन को दुश्मन ही की नज़र से देखा जाता है। अल्लाह व रसूल का दोस्त मुसलमान का दोस्त और अल्लाह व रसूल का दुश्मन मुसलमान का दुश्मन है।

बहरहाल जिसे अल्लाह हिदायत दे वह हिदायत पाता है और जिसे वह गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता।

इस किताब में हो सकता है कि कुछ ख़ामियाँ रह गई हों। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि उन ख़ामियों से हमें आगाह करें, इसमें सुस्ती या तकल्लुफ़ न करके लिखने की ज़हमत गवारा करें ताकि उन ख़ामियों को अगले उडीशन में दूर किया जा सके। एक कमी जो बाज हिन्दी दाँ को महसूस होगी वह यह कि इस किताब में उर्दू के अलफ़ाज़ ज़्यादा हैं। हमने उसके लिए जगह जगह ब्रेकेट में मायनी दे दिए हैं और साथ ही किताब के आख़िर में मुश्किल अलफ़ाज़ के मायनी अलग से भी दिए हैं। फिर भी अगर परेशानी हो तो हमें इसकी इत्तेला करें। इन्शा अल्लाह अगले एडीशन में आपके मशवरों का ख़्याल रखने की कोशिश की जाएगी।

आख़िर में मैं उन हज़रात का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने इस किताब को लिखने में मेरी मदद की बिलख़ुसूस अल्लामा बहा उल मुस्तफ़ा साहब, मौलाना क़ाज़ी शहीद आलम साहब, मौलाना मुहम्मद हनीफ़ ख़ाँ साहब, मिर्ज़ा मुहम्मद तौहीद बेग रज़वी अजहरी साहब,जनाब फ़रीद हुसैन साहब, जनाब नवाब आतिफ़ अली ख़ाँ साहब। जनाब मौलाना क़ाज़ी शहीद आलम साहब ने एस्ट्रानामी से मुताल्लिक़ मज़मून को समझाने में अपनी क़ाबलियत और सलाहियत का इस्तेमाल करते हुए बड़ी महब्बत से अपना क़ीमती वक़्त देकर आला हज़रत से अपनी अक़ीदत का इज़हार फ़रमाया और मज़मून को आसान किया। और जनाब तौहीद बेग साहब ने तो मेरे साथ रातों में जाग जागकर कम्पयूटर पर काम किया बल्कि बाज़ औक़ात मैं सो जाता और वह काम करते रहते जबकि अभी नौउम्र हैं, इण्टरमीडिएट में पढ़ते हैं।

आपसे गुज़ारिश है कि हम सभी लोगों के लिए ख़ातमा बिल ख़ैर और आइन्दा इसी तरह काम करने की दुआ करें।

शुक्रिया

मुहम्मद अहमद नूरी रज़वी क़ादिरी
यकुम सफ़र 1418 हिजरी

फ़ेहरिस्त

कमांक	उनवाल	सफ़ा नम्बर
1	पेश लफ़्ज़	3
2	शजरए तरीक़त	8
3	आला हज़रत का नसब नामा और ख़ानदानी हालात	11
4	आला हज़रत की विलादत ब सआदत	13
5	बिस्मिल्लाह ख़्वानी	14
6	सिलसिलए तालीम	16
7	बचपन के हालात	17
8	भाई बहन	19
9	शादी	19
10	आला हज़रत का बैत स मुशर्रफ़ होना	20
11	निज़ामें क़ुदरत	21
12	ज़िन्दगी मुबारक के आम हालात	23
13	सय्यदों से महब्बत व ताज़ीम	40
14	आला हज़रत की क़ुव्वते हाफ़ज़ा और एक माह म हिफ़्ज़े क़ुरआन	43
15	आला हज़रत का फ़रीज़ए हज	46
16	आला हज़रत एक मुक़र्रिर	46
17	अल्लाह के दोस्त से दोस्ती दुश्मन से दुश्मनी	47
18	आला हज़रत के वहबी (बख़्शे हुए) उलूम	52
1	आठ साल की उम्र में किताब लिखना	52
2	अरबी में गुफ़्तगू	52
3	कमाल की ज़हानत	52
4	सर ज़िया उद्दीन बारगाहे रज़वी में	53
5	अमरीकी प्रोफ़ेसर अलबर्ट की ख़तरनाक पेशीनगोई	54
6	आला हज़रत का फ़ने तकसीर	62
7	इल्मे तौक़ियत में आला हज़रत का कमाल	62
8	वाइसचांसलर अलीगढ यूनीवर्सिटी का जर्मनी सफ़र मन्सूख़	63

9 मतन की तहक़ीक़ 65
10 बिस्मिल्लाह की बे पर तक़रीर 66
11 वद्दुहा की तफ़सीर 66
19 चौद्यवी सदी के मुजद्दिद आला हज़रत 68
20 रद्दे वहाबिया पर ज़ोर की वजह 80
21 फ़ैज़ाबाद के तारीख़ी मुक़दमें मे हुसामुल हरमैन का ऐलाने हक़ 84
22 सेशन जज का फ़ैसला 85
23 मुकफ़्फ़िर मुसलेमीन 36
24 हरमैन मुक़द्दस की दोबारा हाज़री 88
25 कुतुबख़ाना हरम और फ़ाज़िले जलील मौलाना सय्यद इस्माईल अलैहिर्रहमा 89
26 दौलते मक्कीया 90
27 शाहे हिजाज़ का दरबारे पुर वक़ार 93
28 ख़तरनाक मन्सूबा 95
29 गवर्रनर मक्का मुअज़्ज़मा अहमद रातिब पाशा 95
30 रईसुल उलमा की ख़िदमत में रिशवत की पेशकश 96
31 मौलाना अब्दुल्लाह इब्ने सिद्दीक़ मुफ़्ती हनफ़िया की 98
हुसामुल हरमैन पर उलमा की तक़रीज़ात 100
32 उलमाए जफ़र बारगाहे आला हज़रत में 100
33 सरकारे आज़म मदीने तय्यबा को रवानगी 102
34 एक मुख़ालिफ़ मदीना तय्यबा की जेल में 102
35 आलमे बेदारी में दौलते कुबरा 103
36 आला हज़रत उलमाए मदीना के झुमुरट में 104
37 हिन्दुस्तान को वापसी 105
38 ज़मानए क़रीब के उलमाए मक्का शरीफ़ 105
39 मौलाना सय्यद मौलबी अलवी क़ाज़ी उल क़ुज़ात 106
40 अल्लामा शैख़ मुहम्मद मग़रिबी अलजज़इरी 106
41 मौलाना अब्दुर्रहमान दुरवेश 108
42 आला हज़रत के शागिर्द और ख़ुलफ़ा 108

43 आला हज़रत की आलमगीर इसलामी खिदमात 109
44 फतावा रज़विया का मुख़्तसर ताअर्रूफ़ 118
45 आला रद्दे बिदआत व मुन्किरात 127
46 **आला हज़रत की नातिया शयरी पर एक नज़र** 132
47 कन्जुल ईमान 143
48 मुसाफ़िर आलमे बाला की पेशीनगोई 145
49 नसीहत की आख़री मजलिस 146
50 दस्ते हक़ परस्त की आख़री तहरीर 147
51 शहीदे महब्बत की दुनिया से रवानगी 148
52 आला हज़रत बारगाहे रिसालत में 151
53 मज़ारे पुर अनवर 152
54 शजरा 152

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शजरए आलिया क़ादिरिया बरकातिया रज़विया

सरवरे कायनात मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

⇩

मौलाए कायनात सय्येदिना हज़रत अ़ली

⇩

सय्येदिना इमामे हुसैन

⇩

सय्येदिना इमाम ज़ैनुल आबेदीन

⇩

सय्येदिना इमामे बाक़र

⇩

सय्येदिना इमाम जाफ़र

⇩

सय्येदिना इमाम मूसा काज़िम

⇩

सय्येदिना इमाम अली रज़ा

⇩

सय्येदिना शेख़ मारूफ़ करख़ी

⇩

सय्येदिना शेख़ सिर्री सक़ती

⇩

सय्येदिना अबूबक्र शिबली

⇩

सय्येदिना जुनैद बग़दादी

⇩

सय्येदिना अब्दुल वाहिद तमीमी

⇩

सय्येदिना अबुल फ़रह तरतूसी

⇩

सय्येदिना अबुल हसन हंकारी

⇩

सय्येदिना अबू सईद मख़ज़ूमी

⇩

सय्येदिना ग़ौसुल आज़म शैख़ अब्दुल क़दिर जीलानी बग़दादी

⇩

सय्येदिना अब्दुल रज़्ज़ाक़

⇩

सय्येदिना अबू स्वालेह नस्र

⇩

सय्येदिना मुहिउद्दीन अबू नस्र

⇩

सय्येदिना सय्यद अली

⇩

सय्येदिना सय्यद मूसा

⇩

सय्येदिना सय्यद हसन

⇩

सय्येदिना सय्यद अहमद जीलानी

⇩

सय्येदिना बहाउद्दीन

⇩

सय्येदिना इब्राहीम ईरजी

⇩

सय्येदिना मुहम्मद भिकारी बादशाह

⇩

सय्येदिना सय्यद क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन

सय्येदिना शैख़ जमालुल औलिया
⇩
सय्येदिना सय्यद मुहम्मद
⇩
सय्येदिना सय्यद अहमद
⇩
सय्येदिना सय्यद फ़ज़्लुल्लाह
⇩
सय्येदिना शाह बरकतुल्लाह
⇩
सय्येदिना शाह आले मुहम्मद
⇩
सय्येदिना शाह हमज़ा
⇩
सय्येदिना शाह आले अहमद अच्छे मियाँ
⇩
सय्येदिना शाह आले रसूल
⇩
सय्येदिना शाह मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ मुजद्दिदे आज़म

आला हज़रत का नसब नामा और ख़ानदानी हालात का मुख़्तसर ख़ाका

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा इब्ने हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ाँ इब्ने मौलाना रज़ा अली ख़ाँ इब्ने मौलाना हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ इब्ने मौलाना शाह मुहम्मद सईदुल्लाह ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन।

1–हज़रत मुहम्मद सईदुल्लाह ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह कन्धार (अफ़ग़ानिस्तान) के बाअ़ज़मत क़बीला भड़ेच के पठान थे। हुकूमते मुग़लिया के ज़माने में लाहौर तशरीफ़ लाए और मुअज़्ज़िज़ ओहदों पर रहे। लाहौर का शीशमहल इन्हीं की जागीर था फिर वहाँ से देहली तशरीफ़ लाए। इस वक़्त आप शश हज़ारी ओहदे पर फ़ाएज़ थे। दरबारे शाही से आप को शुजाअत जंग का ख़िताब मिला।

२–हज़रत मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान को हुकूमते मुग़लिया ने एक जंग के लिए रुहेलखंड भेजा। फ़तह के बाद हुकूमत का फ़रमान पहुँचा कि आपको इस इलाक़े का सूबेदार बनाया गया है लेकिन उस वक़्त आप बिस्तर पर थे और अपने आख़री सफ़र की तैयारी फ़रमा रहे थे।

3–हज़रत मौलाना मुहम्मद आज़म ख़ाँ अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान बरेली में रहे। कुछ दिन हुकूमत के ओहदे विज़ारत (मंत्री का पद) पर रहे फिर इससे बिल्कुल अलग हो गए और इबादत ओ रियाज़त में मशग़ूल रहने लगे। आपने दुनिया को तर्क किया और मुहल्ला मेमरान में रहने लगे। वहीं मज़ारे पाक भी है। आपका शुमार साहिबे करामत औलिया (यानी जिन बुज़ुर्गों से करामत ज़ाहिर हो) में से है।

4– हज़रत मौलाना काज़िम अली ख़ाँ अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान शहर बदायूँ के तहसीलदार थे। उस ज़माने में यह ओहदा आजकल के डी. एम.

की तरह था। दो सौ सवारियों की बटालियन आपकी ख़िदमत में रहा करती थी। आठ गाँव आपकी जागीर में थे।

(5) .कुतबुलवक़्त मौलाना शाह रज़ा अली ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु अपने ज़माने के बहुत बड़े आलिम और वलीए कामिल गुज़रे हैं। आला हज़रत के ख़ानदान में आप ही के वक़्त से हुकमरानी का रंग ख़त्म होकर फ़क़ीर ओ दुरवेशी का रंग ग़ालिब आ गया वरना आपसे पहले के बुज़ुर्गों का यह आलम था कि शुरू में उमुरे सलतनत (राजकाज) के ओहदों पर रहते फिर आख़िर में उससे अलग होकर इबादत ओ रियाज़त में मशग़ूल हो जाते लेकिन यह सिलसिला हज़रत मौलाना शाह रज़ा अली की ज़ात से ख़त्म हो गया। चुनांचे आपने दुनयवी हुकूमत का कोई ओहदा इख़्तेयार न फ़रमाया और शुरू से ही ज़हद-ओ-तक़वा, फ़क़्र-ओ-तसव्वुफ़ की ज़िन्दगी गुज़ारी आपसे बहुत सी करामतों का .ज़ुहूर हुआ।

(6) हज़रत मौलाना शाह नक़ी अली ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने वालिद से उलूमे ज़ाहिरी व बातनी हासिल किए। आप अपने ज़माने के जलीलुलक़द्र आलिम बेमिस्ल मुनाज़िर बेनज़ीर मुसन्निफ़ गुज़रे हैं। आपकी सबसे बड़ी .ख़ुसूसियत यह है कि अल्लाह तआला ने आपको हज़ूरे अक़दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की .ग़ुलामी व ख़िदमत और हुज़ूरे अनवर के दुश्मनों पर शिद्दत के लिए पैदा फ़रमाया।

आला हज़रत की विलादत बासआदत

आला हज़रत की विलादत बासआदत (पैदाइश) 10 शव्वाल 1272 हिजरी मुताबिक़ 14 जून 1856 रोज़े शम्बा ज़ोहर के वक़्त शहर बरेली शरीफ़ के मुहल्ला जसोली (ज़ो अब मुहल्ला ज़ख़ीरा में लगता है) में हुई। पैदाइशी नाम "मुहम्मद" और तारीख़ी नाम 'अलमुख़तार' है। जद्दे अमजद (दादा) मौलाना रज़ा अली ने आपका नाम "अहमद रज़ा" रखा। ख़ुद आला हज़रत ने अपनी विलादत का सन् हिजरी इस आयते करीमा से निकाला यानी इस आयत के अदद 1272 हैं और आपकी विलादत इसी हिजरी में हुई।

أُولٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ

١٢ ٧٢

तर्जमा :- ये हैं वो लोग जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया है और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद फ़रमाई।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :-

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ
أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ

तर्जमा :- तू न पायेगा उन्हें जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते हैं कि उनके दिल में ऐसों की महब्बत आने पाये जिन्होंने ख़ुदा और रसूल से मुख़ालफ़त की है चाहे वह उनके बाप या बेटे या भाई या अज़ीज़ ही क्यूँ न हों वह लोग जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद फ़रमाई।

मतलब यह है कि जो शख़्स अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से नफ़रत करेगा। उनसे बेज़ार होकर तिनका तोड़ अलग रहेगा, उनसे मेलजोल दोस्ती न रखेगा तो उसके लिए अल्लाह का वायदा है कि अल्लाह तआला उसके दिल में ईमान नक़्श फ़रमा देगा और उसको अपनी मददे ख़ास से नवाज़ेगा। अपने और ग़ैर सब जानते हैं कि आला हज़रत की ज़ाते गिरामी ख़ुदा और रसूल के मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों से नफ़रत करने पर अमल करने में संगे मील (मील का पत्थर) हैसियत रखते थे। लिहाज़ा यह कहना बिल्कुल दुरूस्त है कि आला हज़रत ख़ुदा तआला के उन ख़ास बन्दों में से हैं जिनके दिलों में अल्लाह पाक ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया है। चुनांचे आला हज़रत खुद फ़रमाया करते थे कि अगर मेरे दिल के दो टकड़े कर दिये जायें तो एक पर "लाइलाहाइल्लल्लाह" और दूसरे पर 'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" लिखा होगा। (जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

बिस्मिल्लाह ख़्वानी

हुज़ूर आला हज़रत मुजद्दिद दीनो मिल्लत शाह अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु के बिस्मिल्लाह ख़्वानी की रस्म के मौक़े पर एक अजीब – ओ – ग़रीब वाक़या पेश आया। आपके उस्ताद मोहतरम ने दस्तूर के मुताबिक़ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद अलिफ़, बे, ते, से, जीम वगैरह आपको पढ़ाना शुरू किया। उस्ताद के बताने के मुताबिक़ आप पढ़ते गये। जब लाम अलिफ़ (لا) तक पहँचे तो उस्ताद ने फ़रमाया कहो लाम अलिफ़ तो आला हज़रत ख़ामोश हो गए और लाम अलिफ़ नहीं पढ़ा। उस्ताद ने दोबारा कहा मियाँ साहबज़ादे कहो लाम अलिफ़। हुज़ूर ने फ़रमाया ये दोनों हरूफ़ तो मैं पढ़ चुका हूँ अब दोबारा क्यों पढ़ाया जा रहा है ?

आपके दादा हज़रत मौलाना शाह रज़ा अली खाँ कुदिदसा सिर्रुहुल अज़ीज़ ने फ़रमाया बेटा जैसा उस्ताद कहते हैं वैसा ही पढ़ो। आपने उनके हुक्म की तामील की मगर सवालिया नज़रो से अपने दादा मोहतरम की तरफ़ देखा । दादा हुज़ूर ने अपनी फ़िरासते इमानी से भांप लिया कि यह नन्हा बच्चा कह रहा है कि आज के सबक़ मुफ़रदह (अक्षर) का बयान है उस के दरमियान एक मुरक्कब लफ़्ज़ (Word) कहाँ से आ गया । अगरचे बच्चे की नन्ही उम्र के ऐतबार से यह बात अजीब थी मगर दादा हुज़ूर ने अपने नूर ए बातनी से मुलाहिज़ा फ़रमाया कि यह लड़का फ़ज़्ले रब्बानी से बहुत बड़ा आलिम होने वाला है इस वक़्त बच्चे की उम्र तो ज़रूर कम है मगर उसकी समझ और शऊर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से कम नहीं। इसलिए आपने आला हज़रत से फ़रमाया बेटा शुरू में सबसे पहला हर्फ़ जो तुमने पढ़ा है वह हकीकत में हम्ज़ा है अलिफ़ नहीं और अब जो लाम के साथ जो हरूफ़ तुम मिला कर पढ़ रहे हो वह अलिफ़ है लेकिन चूंकि अलिफ़ हमेशा साकिन रहता है और साकिन हर्फ़ अकेला पढ़ा नहीं जा सकता इसलिए लाम के साथ अलिफ़ को मिलाकर उसका भी तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) करा दिया गया। आला हज़रत ने फ़रमाया अगर यही मक़सूद था कि अलिफ़ का तलफ़्फ़ुज़ कराया जाये तो किसी भी हर्फ़ के साथ मिला सकते थे जैसे बे, जीम या दाल के साथ भी मिलाकर अलिफ़ का तलफ़्फ़ुज़ कराया जा सकता था लेकिन उन सारे हर्फों को छोड़कर लाम के साथ अलिफ़ मिलाकर उसकी अदायगी कराई गई, ऐसा क्यूँ हुआ ? लाम से अलिफ़ का ख़ास रिशता क्या है ? आला हज़रत का यह सवाल सुनकर दादा हुज़ूर ने जोशे–ए महब्बत में आप को गले से लगा लिया और दिल से दुआंए दीं। फिर फ़रमाया बेटा लाम और अलिफ़ के दरमियान सूरतन और सीरतन बड़ा गहरा ताअल्लुक़ है। लिखने में एक दूसरे की शक्ल बहुत मिलती हैं। और सीरतन यूँ ताअल्लुक़ है कि लाम का क़ल्ब अलिफ़ है और अलिफ़ का क़ल्ब लाम है। यानि लाम के बीच में अलिफ़ और अलिफ़ के बीच में लाम आता है।

ज़ाहिर में तो दादा हुज़ूर ने इस अलिफ़ लाम के मुरक्कब लाने की वजह बताई मगर बातों ही बातों में असरार–ओ हक़ाइक़, रूमूज़ --ओ– इशारात की समझ बचपन ही से आला हज़रत के दिल--ओ– दिमाग़ में पैदा फ़रमा दी जिसका असर बाद में सब ने देख लिया कि आला हज़रत अगर

शरीअत में सय्येदिना इमाम–ए– आज़म के क़दम ब क़दम हैं तो तरीक़त में सरकार ग़ौस–ए–आज़म के नाएब हैं।

नोट :– हो सकता है यह वाक़या आप हिन्दी दाँ की समझ में न आए । ऐसे लोग किसी अच्छे सुन्नी आलिम से इसे समझ लें, हिन्दी में हर बात समझाना बड़ा मुश्किल हो जाता है।

सिलसिलए तालीम

रस्म बिस्मिल्लाह ख़्वानी के बाद आला हज़रत की तालीम का सिलसिला जारी हो गया। आपने अपनी चार बरस की नन्हीं सी उम्र में जबकि इस उम्र में दूसरे बच्चे अपने वजूद से भी बेख़बर होते हैं, क़ुर्आन मजीद नाज़रा ख़त्म कर लिया । छह साल की उम्र में माह मुबारक रबीउल अव्वल की तक़रीब में मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ होकर बहुत बड़े मजमें की मौजूदगी में मीलाद शरीफ़ पढ़ी। उर्दू फ़ारसी की किताबें पढ़ने के बाद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग अलैहिर्रहमा से मीज़ान व मुनशब वग़ैरह की तालीम हासि की और उसके बाद आप अपने वालिद–ए– माजिद ताजुल उल्मा शा. मौलाना नक़ी अली ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु से पढ़ते रहे और तेरह साल दस माह पाँच दिन की उम्र में 14 शाबान 1286 हिजरी मुताबिक़ 19 नवम्बर 1869 ई. में फ़ारिग़ हो गए और दस्तारे फ़ज़ीलत से नवाज़े गये इसी दिन मसअला रज़ाअत से मुताल्लिक़ एक फ़तवा लिखकर अपने वालिद –ए– माजिद की ख़िदमत में पेश किया । जवाब बिल्कुल सही था। वालिद माजिद ने आपकी बारीक नज़र और तनक़ीदी ज़हन को देखते हुये, उसी दिन से फ़तवा लिखने की ख़िदमत आपके सुपुर्द कर दी। आपने तालीम–ए– तरीक़त मुर्शिद –ए– बरहक़ उस्ताज़ुल आरफ़ीन मौलाना सय्यद आले रसूल मरहरवी रदियल्लाहु तआला अन्हु से हासिल की। मुर्शिद–ए– बरहक़ के विसाल के बाद बाज़ तालीमे तरीक़त, इब्तेदाई इल्मे तकसीर व इब्तेदाई इल्मे जफ़र वग़ैरह उस्तादुस्सालेकीन हज़रत मौलाना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी रदियल्लाहु तआला अन्हु सें हासिल फ़रमाया। शरहे चग़मीनी का कुछ हिस्सा हज़रत मौलाना अब्दुल रामपुरी अलैहिर्रहमा से पढ़ा । फिर फ़ज़्ल–ए– रब्बानी व फ़ज़ले नब्बी ने आप पर ख़ास इनायत फ़रमाई जिसके नतीजे में किसी उस्ताद से बग़ैर पढ़े आपने बक़िया उलूम हासिल किया। पचास से ज़्यादा उलूम का

इल्म आला हज़रत के लिए साबित है जिनकी फ़ेहरिस्त आला हज़रत पर लिखी किताबों में आप देख सकते हैं । नई रिसर्च के मुताबिक बाज़ उलमा ने यह माना है कि आला हज़रत 105 उलूम जानते थे।

बचपन के हालात

आला हज़रत में तक़वा –ओ– तहारत, इत्तेबाए सुन्नत पाकीज़ा अख़लाक हुस्नो सीरत बचपन ही से पाये जाते हैं। तक़रीबन पाँच या छ्ह साल की उम्र का आपका एक वाक़या है। आप एक नीचा कुर्ता पहने हुए बाहर से दौलत ख़ाने की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे। सड़क पर एक गाड़ी से कुछ तवाइफ़े बैठी हुई किसी रईस की तक़रीब में गाने बजाने के लिये जा रहीं थी उनका सामना होते ही फ़ौरन आप ने कुर्ते का दामन उठाकर आँखों पर रख लिया। यह देखकर वह तवाइफ़े हसँने लगीं फिर उनमें से एक बोली वाह मियाँ साहबज़ादे आखों को छिपा लिया और सतर को खोल लिया। आप ने फ़ौरन जवाब दिया कि जब नज़र बहकती है तब दिल बहकता है और जब दिल बहकता है तो सतर बहकता है। यह जवाब सुनकर वह सकते में हो गई। आपके इस मुबारक अमल और हैरत अंगेज़ जवाब से यह सवाल पैदा होता है कि आप नन्ही सी उम्र में इस क़द्र फ़िक्रो शऊर रखते थे तो फिर दामन के बजाये अपने हाथों ही से अपनी आखें क्यों न बंद कर लीं। इस सूरत में आपका सतर बेपर्दा न होता और मक़सद भी हासिल होता लेकिन थोड़ी सी तवज्जो के बाद यह बात वाज़े हो जाती है कि अगर आप हाथों ही से अपनी आँखें छिपा लेते तो उस तवाइफ़ का यह मसख़रा सवाल न होता और न उसको यह नसीहत आमेज़ जवाब मिलता और न गुज़रने वालों को यह सबक़ मिलता यानी आप ने जानबूझ कर यह तरीक़ा इख़्तेयार फ़रमाया बल्कि मिनजानिब अल्लाह आपने गैर इरादी तौर पर दामन से आखें छिपाई कि बचपन की अदा यूँही हुआ करती हैं। यह और बात है कि इस अदा में इल्में फ़कीरी के हकाइक़ छुपे थे।

आला हज़रत के बचपन के ज़माने में जो मौलवी साहब आपको पढ़ाया करते थे। एक दिन बच्चों ने उन्हें सलाम किया मौलवी साहब ने जवाब दिया जीतें रहो। इस पर आला हज़रत ने मौलवी साहब से फ़रमाया यह तो सवाल का जवाब नहीं हुआ। वालेकुमअस्सलाम कहना चाहिये था। मौलवी साहब सुनकर बहुत .ख़ुश हुये आपको बहुत दुआँये दीं।

एक मरतबा की बात है आला हज़रत पढ़ रहे थे कि मौलवी साहब किसी आयते करीमा में बार बार एक लफ़्ज़ हुज़ूर को बताते थे मगर आपकी ज़बान से नहीं निकलता था। वह ज़बर बताते थे और आप ज़ेर पढ़त थे। यह कैफ़ियत आला हज़रत के दादा हुज़ूर को मालूम हुई तो उन्होंने आला हज़रत को अपने पास बुलाया और कलामे पाक मगांकर देखा तो उसमें कातिब की ग़लती से ज़बर छप गया था। जबकि ज़ेर होना चाहिए था। ज़ेर ही सही था। यानी आला हज़रत की ज़बान से जो निकलता था वह ही सही था। दादा हुज़ूर ने आला हज़रत से पूछा मौलवी साहब जिस तरह बताते थे वैसे क्यों नहीं पढ़ते थे। अर्ज़ किया मैं इरादा करता था कि मैं उसी तरह पढ़ूँ मगर ज़बान पर काबू न पाता था। दादा हुज़ूर ने फ़रमाया बहुत ख़ूब और मुस्कुरा कर सर पर हाथ फेरा और दिल से दुआएं दी फिर उन मौलवी साहब स फ़रमाया बच्चा सही पढ़ रहा था कातिब ने ग़लत लिख दिया है फिर क़लम मगंवा कर ठीक फ़रमा दिया।

उन्हीं मौलवी साहब का बयान है कि इस क़िस्म के वाक़्यात मौलवी साहब को बार–बार पेश आए। एक रोज़ तन्हाई में हुज़ूर आला हज़रत से कहने लगे साहबज़ादे सच–सच बता दो मैं किसी से नहीं कहूँगा। तुम इन्सान हो या जिन्न हो। आप ने फ़रमाया ख़ुदा पाक का शुक्र है मैं इन्सान हूँ। हाँ अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम शामिल है।

उन्हीं का बयान है रमज़ानुल मुबारक और हुज़ूर पुरनूर आला हज़रत के पहले रोज़े की तक़रीब है। जहाँ और इन्तेज़ामात हैं वहाँ एक कमरे में फ़ीरनी के प्याले जमाने के लिए चुने हुए थे। दोपहर का वक़्त है। हुज़ूर क वालिद –ए– माजिद आपको उसी कमरे में ले जाते है और किवाड़ों को बं करके एक प्याला उठाकर देते हैं कि इसे खा लो। आला हज़रत अर्ज़ करत हैं कि मेरा तो रोज़ा है , कैसे खाऊँ। इरशाद होता है कि बच्चों का रोज़ा ऐस ही होता है, लो खा लो मैंने किवाड़ बंद कर दिए हैं,कोई नहीं देख रहा है आला हज़रत ने फ़रमाया कि जिसके हुक्म से रोज़ा रखा है वह तो देख रह है। यह सुनते ही हुज़ूर के वालिद –ए– माजिद की आँखों मे आँसू आ गए औ कमरा खोलकर बाहर आ गए।

छः बरस की उम्र में आपने मालूम कर लिया था कि बग़दा शरीफ़ किधर है तब से आपने आख़िर दम तक उधर पैर नहीं किए

आला हज़रत के भाई बहन

आला हज़रत कुंद्दिसा सिर्रूहू तीन भाई थे और तीन बहने थीं।सबसे छोटी बहन का जवानी में ही इन्तेक़ाल हो गया था। आला हज़रत अपने भाईयों में सबसे बड़े और उन दो बहनों से छोटे थे। मगर रब्बुल इज़्ज़त ने उनको इज़्ज़त व विक़ार में सबसे बड़ा कर दिया था। वह अपने बड़ों की इज़्ज़त और छोटों से शफ़क़त का बर्ताव करते। उनकी इज़्ज़त हर छोटा बड़ा [illegible] करता था। आला हज़रत क़िबला के वालिद –ए– माजिद जब तक ज़िन्दा रहे उन्होंने आला हज़रत की हर ज़ुरूरत का बड़ा लिहाज़ रखा। और ख़ुद ही इन्तेज़ाम फ़रमाया। हत्ताकि उनकी ख़ुसूसी ग़िज़ाओं और लिबासों का ख़ुद ही इन्तेज़ाम फ़रमाते थे। उनकी उम्र तक़रीबन 52 साल की हुई थी कि विसाल फ़रमा गये। आला हज़रत की शुरू जवानी ही में बाप का साया सर से उठ गया और भाईयों मे सबसे बड़े होने की वजह से सब ज़िम्मेदारी आप पर आ गई। अपने काम कुछ दिन तक एक मुख़तारे आम से करवाये। कुछ दिन के बाद वालदा से इजाज़त लेकर इलाके का सारा काम अपने मजले भाई मौलवी हसन रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाह तआला अलैह की सुपुर्द कर दिया।

शादी

तालीम मुकम्मल होने के बाद आला हज़रत की शादी का नम्बर आया। जनाब फ़ज़ले हसन साहब की साहबज़ादी से निसबत क़रार पाई। शरई पाबन्दीयों के साथ शादी हो गई। आला हज़रत की अहलिया मोहतरमा आला हज़रत की फुफी ज़ाद थीं। नमाज़ रोज़े की बहुत पाबन्द थी, निहायत ख़ुश अख़लाक मेहमान नवाज़ और बहुत संजीदा थीं। आला हज़रत क़िबला के यहाँ महमानो की बहुत आमद थी। ऐसा भी हुआ कि ऐन खाने के वक़्त रेल से मेहमान उतर आये। और जो कुछ खाना पकना था वह पक चुका था। अब पकाने वालियों ने नाक भौं समेटी। आप ने फ़ौरन महमानों के लिए खाना उतार कर बाहर भेज दिया। और सारे घर के लिये दाल चावल या खिचड़ी पकाने के लिए रख दी गयी कि उसका पकना कोई दुश्वार काम न था। जब तक महमानों ने बाहर खाना खाया, घर वालों के लिये भी खाना तैयार हो गया। किसी को कानों कान ख़बर भी हुई कि क्या हुआ। आला हज़रत क़िबला की ज़ुरूरी खिदमात भी अपने हाथों से अन्जाम देती थीं। ख़ुसूसन आला हज़रत के सर में तेल मलना उनका रोज़ मर्रा का काम था। जिसमें लगभग आधा घन्टा खड़ा रहना होता

था और इस शान से तेल जज़्ब किया जाता था कि उनके लिखने में कोई फ़र्क़ न पड़े। यह अमल उनका मुसलसल ता हयात जारी रहा। सारे घर का इन्तेज़ाम और मेहमानों का इन्तेज़ाम बड़े सब्र के साथ बर्दाश्त कर गईं। विसाल के बाद भी कई साल ज़िन्दा रहीं मगर अब यादे इलाही के अलावा कोई काम न था। अल्लाह तआला ने आला हज़रत क़िबला की दीनी ख़िदमात के लिए जो आसानी अता फरमाई थीं उनमें से एक आपकी पाक दामन नेक सीरत बीवी थीं।

आला हज़रत का बैअत से मुशर्रफ़ होना

एक रोज़ आला हज़रत क़िबला कैलूला (दिन में थोड़ी देर लेटना जो कि सरकार –ए– दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत है) फ़रमा रहे थे। और किसी ख़्याल में डूबे रोते – रोते सो गए। ख़्वाब में अपने दादा को देखा जो फ़रमा रहे हैं कि बेशक अनक़रीब आने वाला है जो तुम्हारे इस दर्द की दवा करेगा। चुनांचे इस वाकये के दूसरे या तीसरे रोज़ ताजुलफ़हूल हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब बदायूँनी रहमतुल्लाह तआला अलैह तशरीफ़ लाये। उन से बैअत के मुताल्लिक मशवरा हुआ और यह तय हुआ कि जल्द ही मारहरा शरीफ़ चलकर बैअत हो जाना चाहिये। चुनांचे आप दोनों यानी आला हज़रत और आपके वालिद –ए– माजिद मारहरा शरीफ़ चल दिये। आला हज़रत और आपके वालिद –ए– माजिद मौलाना नक़ी अली ख़ाँ मारहरा शरीफ़ में हुज़ूर पुरनूर सय्यद शाह आले रसूल रदियल्लाहु तआला अन्हु से हिजरी 1294 (सन् 1877) में सिलसिलाए आलिया, क़ादिरिया, बरकातिया, में बैअत हुये। उसी वक़्त मुरशिदे बरहक़ मौलाना सय्यद आले रसूल ने आप दोनों हज़रात को ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमा कर ख़रक़ए मुक़द्दिसा से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन नूरी उर्फ़ मियाँ साहब ने अर्ज़ किया कि आपके यहाँ तो बहुत मशक़्क़त, मुजाहेदात और रियाज़ात के बाद ख़िलाफ़त दी जाती है कि इसकी क्या वजह है कि दोनों हज़रात को बैअत करते ही ख़िलाफ़त भी दे दी गई। हज़रत मुर्शिदे बरहक़ ने फ़रमाया और लोग रंग आलूदा मैले कुचैला दिल लिये हुए आते हैं उनकी सफ़ाई के लिए मुजाहिदात और रियाज़ात की .ज़ुरूरत पढ़ती है। और यह दोनों हज़रात साफ़ सुथरा पाकीज़ा दिल लिए हमारे पास आये। उनको सिर्फ़ निसबत की .ज़ुरूरत

थी जो कि मुरीद होते ही हासिल हो गई फिर आप ने फ़रमाया कि मुझ इस बात की बड़ी फ़िक्र रहती थी कि जब क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि आले रसूल तू मेरे लिए क्या लाया है तो मैं बारगाहे इलाही में कौन सी चीज़ पेश करूँगा! लेकिन आज वह फ़िक्र मेरे दिल से दूर हो गई क्यों कि जब अल्लाह तआला पूछेगा कि आले रसूल मेरे लिए क्या लाया है तो मैं अर्ज़ करूँगा कि मैं तेरे लिए अहमद रज़ा लाया हूँ।

निज़ामे .क़ुदरत

मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाह तआला अलैह ने इलाके के काम के साथ–साथ आला हज़रत क़िबला की ऐसी ख़िदमत अन्जाम दी कि आज उनकी मिसाल मिलना मुश्किल है। वह आला हज़रत की तमाम ज़रूरयात का पूरा–पूरा ख़्याल रखते और आला हज़रत को आपने दुनिया की फ़िक्रों से आज़ाद कर दिया था। आला हज़रत तो फ़तावो का जवाब देने और तसानीफ़ वग़ैरह में लगे रहते थे। आला हज़रत का यह काम मर्ज़ में भी जारी रहता, ज़रा सहूलत होती काम जारी फ़रमा देते। उन्हें घर की तरफ़ निगाह करने की .ज़ुरूरत न पड़ती। आला हज़रत के ज़िम्में .क़ुदरत ने दीन ही की ख़िदमात सुपुर्द की थीं। इसलिए उनको .क़ुदरती असबाब ने दुनिया से बिल्कुल बेनियाज़ कर दिया था। ऐसा कि उन्हें इस की तरफ़ देखने की ज़ुरूरत न पड़ती। आला हज़रत क़िबला की दो बेटियों की शादी होने वाली थी। दोनों के निकाह .ख़ानदान के दस्तूर के मुताबिक पहले ही हो चुके थे। रुख़सती का जब तक़ाज़ा हुआ तो मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ आला हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया की भाईजान हाजी इमदादुल्लाह ख़ाँ साहब (समधी) का रूख़सती के लिए तक़ाज़ा आया है। वह आप से ब्याह की तारीख़ माँगते हैं । मेरी राय यह है कि हम दोनों बेटियों की शादी एक साथ कर दें। आला हज़रत ने इरशाद फ़रमाया की एक बेटी की शादी कोई आसान काम नहीं नाकि एक साथ दो की। बेटी की शादी में लोग बड़े साजो सामान करते हैं। तुमने कुछ .ज़ुरूरी सामान भी कर लिया है या मुझ से तारीख़ मुक़र्रर करने आ गए। मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ ने अर्ज़ किया कि सामान की तैयारी के मुताल्लिक़ आप भाभी जान से दरयाफ़्त फ़रमा लीजिए । आला हज़रत ने उन से फ़रमाया बेटियों की शादी के लिए क्या क्या सामान तैयार हो गया है। और क्या क्या कमी रह गयी है बीवी साहेबा ने अर्ज़ किया की हमारे पास तो

मसाले भी पिसे तैयार रखे हैं । दोनो के दहेज़ मुकम्मल हो गये हैं । सिर्फ़ तारीख़ की देर है। आला हज़रत ने जब बीवी साहेबा के मुँह से यह लफ़्ज़ सुने तो .ख़ुशी के मारे आँसू निकल आये। फ़रमाया हसन मियाँ तुमने मुझे दुनिया से बिल्कुल बेनियाज़ कर दिया है। मेरी बेटियों की शादी है मैं उनका बाप होते हुये बिल्कुल बेख़बर और आज़ाद बैठा हूँ। तुमने मुझे यह सोचने की भी ज़हमत नहीं दी थी कि दहेज में क्या क्या दिया जायेगा और वह कहाँ से आयेगा या यह कि बारात में क्या-क्या खाने दिये जायेगें। हसन मियाँ मैं जो भी दीन की ख़िदमात कर रहा हूँ उसके अज्र से तुम भी हिस्सेदार हो । इस बात से कि तुमने मुझे दीन की ख़िदमत के लिए दुनिया से आज़ाद कर दिया है । इस पर मौलाना हसन रज़ा खाँ रो पड़े। कुछ देर बाद तारीख़ भी मुक़र्रर फ़रमा दी। मौलाना हसन रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह का यह अमल भी मुद्दतो जारी रहा कि हफ्ता दस दिन में अपने यहाँ से दो कलम बनाकर ले जाते और आला हज़रत के क़लमदान में रख आते। और उनके घिसे हुए क़लम को .ख़ुद ले आते उन्हें इतनी .फ़ुरसत कहाँ थी कि लिखना छोड़कर क़लम बनाएं । अगर लिखते-लिखते क़लम एक तरफ़ से घिस जाती तो दूसरी नोक से लिखने लगते, मज़मून की आमद में ख़लल न आने देते। मौलाना हसन रज़ा खाँ तहसील वसूल के लिए गाँव जाते तो पहले अपनी बड़ी भावज के यहाँ आते और घी तेल ईधन और ग़ल्ले के वज़न वग़ैरह मालूम करते और चारपाईयों तख़्त चौकी वग़ैरह के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त करते कि घर में अगर इन चीज़ों की कमी हो तो यह सामान भी गाँव से ग़ल्ले की गाड़ियों में आ जाए। एक बाज़ार मुक़र्रर कर रखा था। जो हर फसल पर फ़सली .ज़ुरूरतों के कपड़ों के थान लाता वह कपड़ा अपनी भावज साहिबा से पसंद कराते और सारे घर का कपड़ा ख़रीद कर देते । सिर्फ़ रोज़ाना का तरकारी गोशत ऐसा था जो आला हज़रत क़िबला का ड्यूड़ीबान लाया करता था ग़र्ज़ उन्होनें ज़मीदारी के काम के साथ-साथ आला हज़रत की ख़िदमात इस तरह अन्जाम दी कि आला हज़रत को दुनिया से बेनियाज़ कर दिया। 1336 हि. में जब मौलाना हसन रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात हो गई तो ये ज़िम्मेदारी मौलाना मुहम्मद रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह ने सभांली। आप भी सारे ज़िम्मेदारी के काम करते और सारी रकम अपनी भावज की ख़िदमत में पेश कर देते. ग़ल्ला ईधन वग़ैरह का माक़ूल इन्तेज़ाम करते। आपको भी मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ

रहमतुल्लाह अलैह जैसा ही ख़िदमत का मौका मिला। उन्होंने अपने इन्तेज़ाम से आला हज़रत के एक बेटे और दो बेटियों की शादियाँ की। और मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आला हज़रत के एक बेटे और तीन बेटियों की शादियाँ अपने एहतेमाम से कीं। आला हज़रत क़िब्ला की औलाद की सात शादियाँ हुईं, निकाह आला हज़रत ने पढ़ाये। उनके दोनो भाईयों ने उन्हें दुनिया की चपक़लशों में न पड़ने दिया। हांलाकि उनकी दुनिया काफी बड़ी थी। यह था निज़ामें क़ुदरत जब अल्लाह ने उन्हें चौधवीं सदी का मुजद्दिद बनाया गया तो उनके दुनिया के कामों में आसानियाँ फ़राहम फ़रमा दीं और सारी रुकावटें ख़त्म फ़रमा दीं। और आला हज़रत क़िबला ने भी अपने भाईयों से कभी न पूछा कि तुमने कितना रूपया वसूल किया और कितना अपनी भावज को दिया।

ज़िन्दगी मुबारक के आम हालात

1386 हिजरी मुताबिक़ 1869 ईसवी में जबकि उम्र शरीफ़ सिर्फ 13 साल 10 माह की थी आप जलीलुश्शान आलिम अज़ीमुलबरकत फ़ाज़िल हो गए। और इस वक़्त से सफ़र 1340 हिजरी यानी 54 बरस मुसलसल दीनी इल्मी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आपका ज़ाहिर और बातिन एक था जो कुछ आपके दिल में होता वही ज़ुबान पाक से अदा फ़रमाते और जो कुछ ज़ुबान पाक से फ़रमाते उसी पर आपका अमल रहता। कोई शख़्स कैसा ही प्यारा हो कितना ही मुअज़्ज़िज़ हो कभी उसकी रिआयत के लिए कोई बात शरा के ख़िलाफ़ न ज़ुबान से निकालते न लिखते। जिस क़द्र मुरतदों वगैरह पर सख़्त थे मुसलमानों पर उसी क़द्र रहम दिल थे। किसी सुन्नी आलिम से मुलाक़ात होती देखकर बाग़–बाग़ हो जाते और उसको ऐसी इज़्ज़त देते जिसके लाएक़ वह अपने आपको न समझता। जब कोई साहब हज–ए–बैतुल्लाह शरीफ़ करके आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते तो उनसे पहले यही पूछते सय्यदे आलम बेकस पनाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़री दी या नहीं ? अगर वह हाँ कहते तो फ़ौरन उनके क़दम चूम लेते और अगर कहते नहीं तो फिर कोई तवज्जो न फ़रमाते। कभी कोई मांगने वाला आपके दर से ख़ाली हाथ नहीं जाता। बेवाओं की मदद करते ज़रूरतमंदों की हाजत रवाई फ़रमाते। आपकी जानिब से बहुतेरे लोगों की माहवार रक़में भी मुक़र्रर थीं और यह इमदाद सिर्फ़ मक़ामी लोगों के लिए न

थी बल्कि बाहर भी बज़रिए मनी आर्डर इमदादी रक़में रवाना फ़रमाते थे।

आपके सब, काम महज़ अल्लाह के लिए थे। न किसी की तारीफ़ से मतलब न किसी की मलामत का ख़ौफ़ करते। अल्लाह ही के लिए दोस्ती करते अल्लाह के लिए दुश्मनी। अल्लाह के दोस्त को दोस्त रखते। अल्लाह व रसूल के दुश्मन को अपना सख़्त दुश्मन जानते।

हफ़्ते में दो बार मंगल और जुमे को लिबास तबदील फ़रमाते हाँ अगर कोई तक़रीब या ईद या ईद मीलादुन्नबी जुमेरात या हफ़्ते को भी पड़ जाती तो दोनों दिन लिबास तबदील फ़रमाते।

आप हमेशा बशक्ल नाम –ए– अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सोया करते। इस तरह कि दोनों हाथ मिलाकर सर के नीचे रखते और पाँव समेट लेते जिससे सर मीम, कोहेनियाँ ह्, कमर मीम और पाँव दाल बनकर गोया नाम –ए– पाक मुहम्मद का नक़्शा बन जाता सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

किताबे हदीस पर दूसरी किताब न रखते अगर किसी हदीस शरीफ़ की तर्जमानी फ़रमा रहे हैं और दरम्यान में कोई शख़्स बात काटता तो सख़्त नाराज़ होते। मजलिस मिलाद शरीफ में ज़िक्र –ए– नबी विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिए खड़े होते बाक़ी शुरू से आख़िर तक अदब से दो ज़ानू बैठे रहते।

हँसतें में कभी ठट्ठा नहीं लगाते। जमाही आने पर उंगलियाँ दबा लेते जिसकी वजह से कोई आवाज़ न होती। क़िबले की तरफ़ मुँह करके कभी न थूकते, न क़िबले की तरफ़ पाँव फैलाते। बग़ैर सौंफ़ पड़ी दवात इस्तेमाल नहीं करते। यूँही लोहे के क़लम से परहेज़ करते। ख़त बनवाते वक़्त अपना कंघा शीशा इस्तेमाल फ़रमाते।

तसनीफ़ –ओ– तालीफ़, कुतुब बीनी, फ़तवा नवीसी और औराद अश्ग़ाल(वज़ाइफ़ वग़ैरह) के ख़्याल से ज़्यादतर तन्हाई पसंद फ़रमाते । पाँचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में हाज़िर होते। और हमेशा नमाज़ बजमाअत अदा फ़रमाया करते। बावुजूद ग़र्म मिजाज़ होने के हमेशा अमामा व अगरखे के साथ नमाज़ अदा करते। .ख़ुसूसन फ़र्ज़ तो कभी सिर्फ़ टोपी के अदा नहीं किया करते। अक्सर मकान ही से वुज़ू करके मस्जिद तशरीफ़ लाते और कभी ऐसा भी होता कि मस्जिद मे आकर मिट्टी के लोटे से उत्तर की तरफ़ बैठकर वुज़ू

फरमाते। आप वुज़ू और .गुस्ल में बहुत एहतियात फ़रमाया करते। आप के वुज़ू के लिए उमूमन दो लोटे पानी रखा जाता। नमाज़ से फ़ारिग होकर मकान से तशरीफ़ ले जाया करते लेकिन अस्र पढ़कर फ़ाटक में चारपाई पर तशरीफ़ रखते। और चारों तरफ़ कुर्सियाँ बिछा दी जातीं। ज़्यारत का इश्तेयाक़ रखने वाले लोग कुर्सियों पर बैठते और अपनी हाजतें पेश करते। उनकी हाजतें पूरी की जातीं अगर किसी शख़्स को कोई चीज़ देते और वह बायाँ हाथ बढ़ाता तो फ़ौरन अपना हाथ रोक लेते और फ़रमाते दायें हाथ में लो बांए में शैतान लेता है। बिस्मिल्लाह शरीफ़ की अदद 786 लिखने का आम दस्तूर है कि पहले 7 लिखते हैं फिर 8 फिर 6 लिखते हैं। लेकिन आप पहले 6 फिर 8 फिर 7 लिखते यानी अदाद को भी दाई जानिब से लिखते ।

आला हज़रत .खुतूत के जवाब का बहुत ख़्याल रखते थे। जो ख़त तसव्वुफ़ से मुताअल्लिक़ होता उसको आला हज़रत .खुद रख लेते और जवाब भी .खुद लिखते। तावीज़ात से मुताअल्लिक़ .खुतूत मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन साहब, हुज्जतुल इसलाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ या मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु अन्हुम के हवाले फ़रमाते। इस्तिफ़ता के मुताल्लिक़ ख़ुतूत हस्बे मरातिब मौलवी के हवाले फ़रमाते । बहुत पेचीदा मसाइल का जवाब .खुद तहरीर फ़रमाते । मदरसे के मुताल्लिक़ मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ के पास भिजवाते। इस सबके अलावा बाज़ लोग आपको गाली भरा ख़त लिखते। एक मरतबा की बात है एक ख़त गालियों भरा आया। उसकी कुछ लाइनें मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन साहब ने पढ़कर रख दिया। एक मुरीद साहब ने जो अभी हाल ही में मुरीद हुए थे, ,. उस ख़त को उठा लिया और पढ़ने लगे। ख़त भेजने वाले उनकी ही तरफ़ के थे। पता नहीं नाम असली था या फ़र्ज़ी। यह देखकर उन साहब को बहुत रंज हुआ। उस वक़्त तो ख़ामोश रहे। लेकिन जब आला हज़रत मग़रिब के बाद मस्जिद से घर तशरीफ़ ले जाने लगे तो अर्ज़ किया उस वक़्त जो ख़त मैंने पढ़ा जिसे मौलाना ज़फ़र उद्दीन ने थोड़ा पढ़कर छोड़ दिया था। उसमें किसी बदतमीज़ ने निहायत ही कमीनापन किया है। और उसमें गालियां लिखी है। मेरी राय है कि उस पर मुक़दमा किया जाये और सज़ा दिलवाई जाये ताकि दूसरों को इबरत हो और आइन्दा ऐसी हरकत न करें। आला हज़रत ने फ़रमाया तशरीफ़ रखें। और अन्दर तशरीफ़ ले गए और दस पन्द्रह ख़त लिए वापस तशरीफ़ लाए फ़रमाया

पढ़िए। सब हैरान थे कि किस तरह के .ख़ुतूत हैं। शायद यह भी गाली भ ख़ुतूत होंगे क्योंकि यह कोई नई बात न थी। आए दिन लोग इस क़िस्म की बदतमीज़ियाँ करते रहते थे। लेकिन ख़त पढ़ते ही उन साहब का चेहरा .ख़ुशी से दमकता जाता था। आख़िर जब सब ख़त पढ़ चुके तो आला हज़रत ने फ़रमाया कि पहले इन तारीफ़ करने वालों को इनामात दिये जायें फ़िर गाली देने वालों को सज़ा दिलाने की फ़िक्र कीजिएगा। वह कहने लगे जी तो यही चाहता है कि इन लोगों को ख़ूब ईनाम व इकराम दिया जाए। मगर इतनी वुसअत नहीं। आला हज़रत ने फ़रमाया जब आप मुख़िलस को नफ़ा नहीं दे सकते तो मुख़ालिफ़ को नुक़सान भी न प्हँचाइये। एक मरतबा की बात है आला हज़रत ने इसी बात का जवाब कुछ इस तरह दिया था कि इन्हें गालियाँ लिखने दो, देने दो कम से कम इतनी देर जितनी देर मुझे गालियां देते हैं उतनी देर प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गालियां देने से तो रूके रहते है।

आला हज़रत की ज़िन्दगी के हर लम्हें की बातं वाक़्यात हमारे लिए बड़े सबकं आमोज़ हैं ऐसे न जाने कितने वाक़्यात हैं जिनमें से कुछ वाक़्यात पेश किए जाते है। जिनसे आला हज़रत के हुस्ने अख़्लाक, मिजाज़ तवाज़ो इनकेसारी, इसलामी मसावात, शफ़कत –ओ– रहमत, करम –ओ– सख़ावत, अख़लाक –ए– करीम और ज़िन्दगी के आम हालात पर रौशनी डाली जा रही है।

एक मरतबा एक साहब ने आला हज़रत को बदाँयूनी पेड़ों की एक हांडी नज़्र की। हुज़ूर ने फ़रमाया क्यों तकलीफ़ की। उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर को सलाम करने के लिये हाज़िर हुआ हूँ। हुज़ूर जवाबे सलाम फ़रमाकर कुछ देर ख़ामोश रहे और फिर पूछा कोई काम है। कहने लगे यूँही मिजाज़ पुर्सी के लिए हाज़िर हुआ था। आप ने फ़रमाया इनायत व नवाज़िश फिर कुछ देर की ख़ामोशी के बाद फ़रमाया। कुछ फ़रमाईए। उन्होंने फिर न में जवाब दिया। हुज़ूर ने वह हांडी अन्दर भिजवा दी। थोड़ी देर के बाद उन्होंने एक तावीज़ की दरख़्वास्त की। इरशाद फ़रमाया मैंने तो आप से तीन बार दरयाफ़्त किया। मगर आप ने कुछ न बताया, अच्छा तशरीफ़ रखिए और अपने भांजे अली अहमद के पास से एक तावीज़ मंगा कर उन्हें दिया। और साथ ही हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब ने हुज़ूर का इशारा पाते ही मकान से व

ठाई की हांडी मगांकर उनके सामने रख दी। आला हज़रत ने फ़रमाया ठाई लेते जाईए। मेरे यहाँ तावीज़ बिकता नहीं है। उन्होंने बहुत चाहा आला हज़रत मिठाई ले लें मगर आपने क़बूल न फ़रमाई। आख़िर वह स ले गए।

एक मरतबा आला हज़रत ने जहांगीर खाँ साहब. कादिरी रज़वी किन मोहल्ला छीपी टोला क़िला से फ़रमाया मुझे एक पीपा मिटटी के तेल ज़रूरत है। क्योंकि वह तेल फ़रोख़्त किया करते थे। लिहाज़ा वह तेल ले ए। हुज़ूर ने कीमत दरयाफ़्त फ़रमाई। उन्होंने उसकी क़ीमत बताई फिर रमाया हुज़ूर आप कुछ कम दे दें। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया मुझ से वही मत लो जो सब से लेते हैं। उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर आप आलिम हैं। और ज़ुर्ग हैं, आप से आम बिक्री के पैसे कैसे ले सकता हूँ। आला हज़रत ने रमाया मैं इल्म नही बेचता और वही आम ब्रिकी वाले दाम दिए।

हज़रत मुहद्दिस सूरती मौलाना क़ारी अहमद साहब तहरीर फ़रमाते हज़रत शाह माना मियाँ साहब सज्जादा नशीन हज़रत मुहद्दिस सूरती मतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि आला हज़रत की आदत करीमा थी कि जब जिद से फ़ारिग होकर फाटक को तशरीफ ले जाते तो अपना अमामा उतार र बगल में दबा लिया करते थे और निहायत आहिस्ता क़दम उठाते हुए ते ऐसा मालूम होता कि हर क़दम पर कुछ पढ़ते हुए जा रहें है। निगाहें सर नीची रहती मगर कभी सामने भी देख लिया करते थे।

आला हज़रत एक मरतबा किसी .ज़ुरूरत से रामपुर तशरीफ़ ले । हज़रत के .ख़ुसर जनाब शैख़ फ़ज़ले हुसन साहब मरहूम नवाब रामपुर वाब कल्बे अली खाँ साहब बहादुर के मग़फ़ूर के यहाँ बहुत ही आला ओहदे र थे। नवाब साहब के दरबार में आला हज़रत का तज़करा हुआ। नवाब हब आला हज़रत से मिलने के ख़्वाहिश मन्द हुए। आला हज़रत उनके यहाँ शरीफ़ ले गए नवाब साहब ने ख़ास अपने पास बिठाया और इल्मी बाते पूछते । इसी दरम्यान फ़रमाया यहाँ अब्दुल हक़ साहब ख़ैराबादी मशहूर मन्तिक़ी । आप उनसे कुछ मन्तिक़ की किताबें पढ़ लीजिए। आला हज़रत ने फ़रमाया लिम साहब की इजाज़त हुई तो कुछ दिन यहाँ ठहर सकता हूँ यह बातें हो रही थी कि इत्तेफ़ाक़न जनाब मौलाना अब्दुल हक़ साहब ख़ैराबादी भी शरीफ़ ले आए। नवाब साहब ने आला हज़रत का ताअर्रुफ़ कराया। और

फ़रमाया इतनी कम उम्र के बावजूद इनकी सब किताबें ख़त्म हैं। मौलाना ने आला हज़रत से पूछा मन्तिक कहाँ तक पढ़ी है। आला हज़रत ने फ़रमाया "काज़ी मुबारक" तक। यह सुनकर दरयाफ़्त फ़रमाया "शरहे तहज़ीब" पढ़ चुके हैं। यह ताना भरा सवाल सुनकर आला हज़रत ने फ़रमाया कि जनाब के यहाँ काज़ी मुबारक के बाद शरहे तहज़ीब पढ़ाई जाती है। यह सेर का सवा सेर जवाब पढ़कर मौलाना अब्दुल हक़ साहब ने सवाल का रूख़ दूसरी तरफ़ फेरा और पूछा अब क्या मशग़ला है। फ़रमाया तदरीस, इफ़ता तसनीफ़। फ़रमाया किस फ़न मे तसनीफ़ करते हैं।फ़रमाया मसाइले दीनिया और रद्दे वहाबिया। यह सुनकर बोले रद्दे वाहबिया ? एक मेरा वह बदायूँनी ख़ब्ती है कि हमेशा इसी ख़ब्त में रहता है और रद्दे वहाबिया किया करता है। (इशारा उनका ताजुल फ़हूल मुहिब्बे रसूल मौलाना शाह अब्दुल कादिरं .कुद्दिसा सिर्रूहू की तरफ़ था)। आला हज़रत ने सुनते ही फ़रमाया जनाब को मालूम होगा कि सबसे पहले रदद –ए– वहाबिया आपके वालिद जनाब शाह फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने किया और मौ० इस्माईल को भरे मजमें में मनाज़रा करके ख़ामोश कर दिया और उसके रदद में लिखा भी है। इस पर मौलाना ख़ामोश हो गए और कोई जवाब नहीं दिया।

जनाब सय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है कि एक साहब जिनका नाम याद नहीं आला हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करते थे।और आला हज़रत भी कभी–कभी उनके यहाँ जाया करते थे। एक मरतबा आला हज़रत उनके यहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे कि उनके मौहल्ले का एक बेचारा ग़रीब मुसलमान टूटी हुई पुरानी चारपाई पर जो सहन के किनारे पड़ी थी, झिझकते हुए बैठा ही था कि साहिबे ख़ाना ने निहायत ही कड़वे तेवर से उसकी तरफ़ देखना शुरू किया। यहाँ तक की वह शर्म से सर झुकाए चला गया। हुज़ूर को साहिबे ख़ाना की इस मग़रूराना हरकत से सख़्त तकलीफ़ पहुँची मगर कुछ फ़रमाया नहीं। कुछ दिनों के बाद वह आला हज़रत के यहाँ आए। हुज़ूर ने अपनी चारपाई पर जगह दी। वह बैठे ही थे कि इतने में करीम बख़्श हज्जाम हुज़ूर का ख़त बनाने के लिए आए, वह इस फ़िक्र में थे कि कहाँ बैठूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया भाई करीम बख़्श क्यों खड़े हो मुसलमान आपस में सब भाई–भाई हैं और उन साहब के बराबर बैठने का इशारा किया। वह बैठ गए फिर तो उ

साहब के ग़ुस्से की यह कैफ़ियत थी जैसा सांप फुंकारे मारता है। फ़ौरन उठकर चले गए और कभी न आए। काफ़ी दिन के बाद आला हज़रत ने फ़रमाया फलाँ साहब नहीं आते फिर .ख़ुद ही फरमाया मैं भी ऐसे मुताकब्बिर मग़रूर शख़्स से मिलना नहीं चाहता।

उन्हीं का बयान है कि एक मरतबा पीलीभीत शरीफ़ हज़रत मौलाना मौलवी वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती .कुद्दिसा सिर्रूहू के उर्स से वापसी सुबह की गाड़ी से हुई। हुज़ूर ने उस वक़्त स्टेशन पर आकर वज़ीफ़े की सन्दूकची हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब से मंगाई। किसी ने जल्दी से विज़िटिंग रूम से आराम कुर्सी लाकर बिछा दी। इरशाद फ़रमाया यह तो बड़ी मुताकब्बिराना कुर्सी है, जितनी देर वज़ीफ़ा पढ़ा कुर्सी से टेक लगाकर न बैठे।

मौलवी मुहम्मद हुसैन. साहब मेरठी का बयान है कि एक साल मैंने रमज़ानुल मुबारक में 20 तारीख़ से एतकाफ़ किया। आला हज़रत मस्जिद में आते और फ़रमाते जी बहुत चाहता है कि मैं भी एतकाफ़ करूँ मगर फ़ुरसत नहीं मिलती। आख़िर 26 तारीख़ को फ़रमाया आज से मैं भी एतकाफ़ करूँगा। आला हज़रत अफ़्तार के बाद पान नौश फ़रमाते। शाम को खाना खाते मैंने किसी दिन नहीं देखा। सहर को सिर्फ़ एक छोटे से प्याले में फ़ीरनी और एक प्याले में चटनी आया करती थी, वह नौश फ़रमाया करते थे। एक दिन मैंने दरयाफ़्त किया हुज़ूर फ़ीरनी और चटनी का क्या जोड़। फ़रमाया नमक से खाना शुरू करना और नमक़ पर ही ख़त्म करना सुन्नत है। इसलिए यह चटनी आती है। एक दिन शाम को पान नहीं आए और यह बहुत पुख़्ता आदत थी कि खाने की कोई चीज़ तलब नहीं फ़रमाते, ख़ामोश रहते मगर पान की आदत की वजह से नागवारी ज़रूर पैदा हुई। मग़रीब से तक़रीबन दो घन्टे बाद घर का मुलाज़िम एक बच्चा पान लाया। हज़रत ने उसे एक चपत मारकर फ़रमाया कि इतनी देर में लाया। सहर के वक़्त सहरी खाकर मस्जिद के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए। उस वक्त रहीमुल्लाह ख़ाँ मुलाज़िम और मैं दो शख़्स मस्जिद में थे। फ़रमाया आप मेरे काम में दख़ल न दें। मैं घबराया और अर्ज़ की हुज़ूर हम तो ख़ादिम हैं दख़ल के क्या मायनी। इसके बाद उस बच्चे को बुलवाया जो शाम को पान देर में लाया था। और फ़रमाया शाम को मैंने

ग़लती की जो तुम्हारे चपत मारी तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं था, देर से पान भेजने वाले की ग़लती थी। लिहाज़ा अब तुम मेरे सर पर चपत मारो और टोपी उतार कर इसरार फ़रमा रहे हैं। हम दोनों बहुत परेशान और बच्चा भी परेशान और वह कांपने लगा। उसने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया मैंने माफ़ किया। फ़रमाया तुम नाबालिग़ हो तुम्हें माफ़ करने का हक़ नहीं, तुम चपत मारो । मगर वह बच्चा यही कहता रहा की मैंने माफ़ किया। आख़िरकार आला हज़रत ने उसका हाथ पकड़कर बहुत सी चपतें अपने सरे मुबारक पर उसके हाथ से लगाई और फ़िर उसको पैसे.देकर रूख़सत किया ।

हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन मियाँ साहब क़ुद्दिसा सिर्रूहू का बयान है कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ को अल्लाह तआला ने ज़ाहिरी और बातनी दोनों कमालात से नवाज़ा था। वालदैन की इत्तेबा का हाल यह था कि जब आपके वालिद –ए– माजिद मौलाना नक़ी अली ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह का इन्तेक़ाल हुआ। आप अपने हिस्से ज़ायदाद के ख़ुद मालिक थे मगर सब इख़्तेयार वालदा के सुपुर्द था। वही सब ख़र्च अन्जाम देती थीं, जिस तरह चाहें ख़र्च करती थीं । जब आला हज़रत को किताबों की ख़रीदारी के लिए किसी ग़ैर मामूली रक़म की ज़ुरूरत होती तो वालिदा माजिदा की ख़िदमत में दरख़्वास्त करते और अपनी ज़ुरूरत ज़ाहिर करते जब वह इजाज़त देती और दरख़्वास्त मंज़ूर करतीं तब किताबें मंगवाते।

मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी रहमतुल्लाहि ताआला अलैह फ़रमाते है। आला हज़रत के भाई और साहबज़ादे वग़ैरह हज को जा रहे थे। तब आला हज़रत उन्हें लखनऊ तक छोड़ने गए थे। उन लोगो के जाने के बाद आला हज़रत के दिल में भी बेक़रारी हुई मगर चूंकि हज कर चुके थे। और नफ़ीली हज के लिए वालदैन की इजाज़त ज़ुरूरी है। आला हज़रत वापस बरेली आए। जब इजाज़त मिल गई तब सफ़र का सामान बाधना शुरू किया। इत्तेफ़ाक़ से आला हज़रत के ही अपने रिश्तेदारों के साथ जगह भी मिल गई । और आपने दूसरा हज अदा किया।

मौलवी मुहम्मद इब्राहीम साहब फ़रीदी सदर मुदर्रिस शमसुल उलूम बदायूँनी का बयान है कि हज़रत मेंहदी हसन मियाँ साहब सज्जादा नशीन मारहरा शरीफ़ ने फ़रमाया कि मैं जब बरेली आता तो आला हज़रत

ख़ुद खाना लाते और हाथ धुलाते। एक बार हाथ धुलाते वक़्त फ़रमाया हज़रत शहज़ादे साहब अगूंठी और छल्ले मुझे दे दीजिए। मैनें उतार कर दे दिए और वहीं से बम्बई चला गया। बम्बई से मारहरा वापस आया तो मेरी लड़की फ़ातमा ने कहा बरेली के मौलाना साहब के यहाँ से पार्सल आया था जिसमें छल्ले और अगूंठी थे। यह दोनों सोने के थे और लिखा था कि शहज़ादी साहिबा यह दोनों सोने की चीज़ें आप की हैं और साथ की चाँदी की अगूंठी साढ़े चार माशे से कम की नक़्श वाली हुज़ूर मेंहदी मियाँ के लिए थी। यह था आला हज़रत का अम्र बिल मारूफ़ नही अनिलमुन्कर (किसी की इस्लाह का तरीक़ा) और साथ-साथ अकाबिर की ताज़ीम।

जनाब ज़का उल्लाह ख़ाँ साहब का बयान है कि सर्दी का मौसम था आला हज़रत फाटक में तशरीफ़ लाकर सब लोगों को रूख़सत कर रहे थे। ख़ादिम को देखकर फ़रमाया आपके पास रज़ाई नहीं है। ख़ादिम ख़ामोश हो गया। उस वक़्त जो रज़ाई आला हज़रत .ख़ुद ओढ़े थे, ख़ादिम को उतार कर दे दी। फ़रमाया ओढ़ लीजिए ख़ादिम ने क़दम बोसी की और उनके फ़रमान के मुताबिक़ रज़ाई ओढ़ ली

उन्हीं का बयान है कि जब रज़ाई मुझे इनायत फ़रमाई उसके दो तीन दिन के बाद हज़रत की नई रज़ाई तैयार होकर आ गई । नई रजाई ओढ़े हुए चन्द ही रोज़ गुज़रे थे कि मस्जिद में एक मुसाफ़िर साहब रात को आये और आला हज़रत से अर्ज़ किया मेरे पास कुछ ओढ़ने को नहीं है। आला हज़रत ने वही नई रज़ाई उन मुसाफ़िर साहब को ओढने के लिए अता फ़रमा दी।

जनाब अय्यूब अली साहब का बयान है कि अल्लामा शीरी ज़बान वाएज़ .ख़ुश बयान मौलवी हाजी क़ारी शाह अब्दुल अलीम साहब सिद्दीक़ी रज़वी क़ादिरी मेरठी हरमैन तय्ययेबैन की हाज़री से मुशर्रफ़ होकर वापसी में हुज़ूर आला हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और आला हज़रत की शान में अपनी बेहतरीन आवाज़ में एक मनक़बत पढ़ी। जब मौलाना पढ़ चुके तो आला हज़रत ने इरशाद फ़रमाया मौलाना मैं आपकी खिदमत में क्या पेश करूँ । अपने अमामे की तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए जो बहुत क़ीमती था, फ़रमाया अगर इस अमामे को पेश करूँ तो आप उस दयारे पाक से तशरीफ़ ला रहे हैं। यह अमामा आपके क़दमों के लाएक भी नहीं अल्बत्ता मेरे पास एक

बेशक़ीमती जुब्बा है वह हाज़िर किए देता हूँ और वह क़ीमती जुब्बा निकाल कर लाए और अता फ़रमाया जो कि ढेड़ सौ रूपए से किसी तरह भी कम क़ीमत का न होगा। मौलाना साहब ने वह जुब्बा चूमा, आँखों से लगाया और देर तक सीने से लगाए रहे।

जनाब सय्यद अय्यूब अली साहब का ही बयान है एक मरतबा एक साहब की ख़िदमत में पचास रूपए रवाना करने थे। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त आला हज़रत के पास कुछ न था। हुज़ूर ने बारगाहे रिसालत में रूजू किया यानी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इल्तिजा की कि सरकार मैंने कुछ बन्दगाने .ख़ुदा के महीने हुज़ूर के भरोसे पर अपने ज़िम्में मुक़र्रर कर लिए हैं अगर कल मनी आर्डर पचास रूपए का रवाना हो जाएगा तो डाक के जहाज़ के वक़्त पहुँच जाएगा, वरना देर हो जाएगी। यह रात हुज़ूर ने बेचैनी में गुज़ारी। सुबह को एक सेठ साहब आए और इक्यावन रूपए बतौर नज़्र मौलवी हसन रज़ा ख़ाँ साहब के हाथ दे गए। हुज़ूर पर बहुत रिक़्क़त तारी हुई इरशाद फ़रमाया यह यक़ीनन सरकारी अतिया है। इसलिए कि इक्यावन रूपए मिलने के कोई मायने नहीं सिवाए इसके कि पचास रूपए भेजने के लिए फ़ीस भी तो चाहिए। चुनांचे उसी वक़्त फ़ार्म भरा गया और डाकख़ाना खुलते ही रवाना कर दिए।

उन्हीं का बयान है कि एक मरतबा एक ज़रूरत मन्द साहब हाज़िर हुए इरशाद फ़रमाया इस वक़्त मेरे पास सिर्फ़ साढ़े तीन पैसे हैं और वह भी .ख़ुतूत के जवाब के लिए रखे है, आप फ़रमाए तो हाज़िर कर दिए जाएं। हालांकि आज की डाक में एक मनी आर्डर ढाई सौ रूपए का आया था। और वह सब तक़सीम कर दिए गये। पहले से आप आ जाते तो मिल जाते उन बेचारे ने अपनी डगडबाई आँखें नीची कर लीं। हुज़ूर ने वह साढ़े तीन आने उनके हवाले कर दिए। यहाँ यह भी अर्ज़ कर देना ज़ुरूरी है कि हुज़ूर ने ढाई सौ रूपए आने और उनको तक़सीम होने का ज़िक्र क्यों फ़रमाया।क्या इसलिए सब जाने और नाम हो हर्गिज़ नहीं बल्कि बात यह थी कि ढाई सौ रूपए सब के सामने आए और तक़सीम हुए थे। आपने यह बात सब लोगों के वसवसे दूर करने की वजह से फ़रमाई । यह बात कोई नई बात न थी ऐसा अक्सर होता रक़म आती और आप हाथ के हाथ तक़सीम फ़रमा देते ।

उन्हीं का बयान है की आला हज़रत अपने पीर –ओ– मुर्शिद

शाह आले रसूल अहमदी मारहरवी रदियल्लाहु तआला अन्हु का उर्स 16,17,18 ज़िल्लहिंज्जा को करते।कुल शरीफ़ के बाद नज़्र वग़ैरह की रक़म ख़ुद्दाम वग़ैरह पर तकसीम होना शुरू हो जाती। और इसी वजह से आला हज़रत के छोटे साहबज़ादे हुज़ूर मुफ्ती ऐ आज़म मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब (रदियल्लाहु तआला अन्हु) मुझ से जल्दी से उर्स का हिसाब करने की ताकीद फ़रमाते और मैं भी जल्दी करता मगर फिर भी काफ़ी रक़म तकसीम हो जाया करती थी। आख़िर में लोगों की हाजतें अपने पास से पूरी करते। एक मरतबा तक़सीम करते हुए ऐसे ही मौक़े पर फ़रमाया कि कभी भी मैंने एक पैसा ज़कात का नहीं दिया और बिल्कुल सही इरशाद फ़रमाया कि हुज़ूर पर ज़कात फ़र्ज़ ही नहीं होती थी। ज़कात फ़र्ज़ तो जब हो मिक़दार निसाब उनके पास साल भर तक रहे,यहाँ तो हाल यह था कि एक तरफ़ से आया दूसरी तरफ़ गया।

जनाब सय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है कि एक मरतबा जनाब सय्यद महमूद जान साहब क़ादिरी बरकाती नूरी अलैहिर्रहमा मौहल्ला गढ़ी के रहने वाले हाज़िर हुए और अर्ज़ करते हैं हुज़ूर जो मैं माँगू अता फ़रमा दें। इरशाद फ़रमाया साहब अगर मेरे मकान में हो तो ज़ुरूर हाज़िर करूँगा। सय्यद साहब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर के मकान में है। फ़रमाया मुझे कोई उज़्र नहीं है, फ़रमाया क्या चाहिए। सय्यद साहब ने अर्ज़ किया सिर्फ़ बाइस गज़ कपड़ा कफ़न के लिए चाहता हूँ। चुनाचे सुबह बाज़ार खुलते ही बाइस गज़ कपड़ा सय्यद साहब को नज़्र कर दिया।

उन्हीं का बयान है कि जो जबलपुर के सफ़र के दौरान तहरीर फ़रमाया कि हज़रत जनाब मौलाना मौलवी अब्दुल सलाम साहब ने एक हज़ार रुपए बतौर नज़राना आला हज़रत की ख़िदमत में पेश किए जिसे कबूल फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि मौलाना यही क्या कम था जो आपने इस वक़्त तक ख़र्च किया। और हाजी क़िफ़ायतुल्लाह साहब से फ़रमाया इसे रख लो और मेरे वज़ीफ़े की सन्दूक़ची उठा लाओ हाजी साहब ने वह रूपए सामने कमरे में रख दिए और वज़ीफ़े की सन्दूक़ची उठा लाए जिसका तूल लगभग एक फिट होगा और जिस पर एक सफ़ेद कपड़े पर स्याह डोरे के हुरूफ़ थे। यह वज़ीफ़ा हुज़ूर को अपने शैख़ से मिला था जिस बाद नमाज़े फ़र्ज़ पढ़ा करते थे और सन्दूक़ पर हमेशा ताला लगा रहता था जिसकी कुन्जी हुज़ूर

अपने पास रखा करते थे। इस सन्दूक़ची में वज़ीफ़े के अलावा और कोई चीज़ नहीं रहती थी और न उस में गुंजाइश थी कि दूसरी चीज़ रखी जाती अब हुज़ूर उस सन्दूक़ची को अपने पास रखकर खोलते हैं। और ढक्कन बिल्कुल नहीं खोलते बल्कि थोड़ा सा उठाकर हाथ से झुकाए रखते और सीधा हाथ बार–बार बग़ैर देखे अन्दर डालते और रूपये निकालते और एक–एक करके मौलाना के मुलाज़मीन, मुलाज़मा, ख़ादिम व रज़ाकारान वग़ैरहुम को निहायत फ़राख़दिली से देते जाते। तआज्जुब होता था कि इस क़द्र रूपए इस सन्दूक़ची में कहाँ से आए गए। और बस इसी पर नहीं हुआ बल्कि मौलाना अब्दुल सलाम साहब की बहू यानी बुरहान मियाँ की बीवी को, उनके बच्चों को सोने के ज़ेवरात और छोटे बच्चों के लिए सिला हुआ कुर्ता टोपी उसी सन्दूक़ची से देते गये। हालांकि वज़ीफ़े की सन्दूक़ची को जब सफ़र के दौरान देखा था तो सिर्फ़ वज़ीफ़े की किताब के उसमें कुछ न था।

हज़रत मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि इस वाक़्ये को मुझसे मौलाना हसनैन रज़ा साहब ने उसी ताअज्जुब के साथ बयान किया था बल्कि उन्होंने यह भी कहा था कि न सिर्फ़ मौलाना अबदुल सलाम के अज़ीज़ों बल्कि ख़ास–ख़ास सेठों की बच्चीयों के लिए भी सोने के ज़ेवरात आला हज़रत ने वज़ीफ़े की सन्दूक़ची में से निकाल–निकाल कर अता फ़रमाए। यहाँ तक की सेठ साहबों ने कहा कि हम लोगों ने आला हज़रत की क्या ख़िदमत की, जो कुछ दावत और ख़ातिर मदारात में ख़र्च हुआ उससे कहीं ज़्यादा आला हज़रत ने हम लोगों की बहुओं बच्चीयों के लिए अता फ़रमाए। मौलवी हसनैन रज़ा ख़ाँ बहुत ही हैरत और ताअज्जुब के साथ यह कहते थे कि कुछ समझ में नहीं आता कि वह ज़ेवरात कब आला हज़रत ने ख़रीदे और कब उस सन्दूक़ची में रखे इस के अलावा उस सन्दूक़ची में तो वज़ीफ़े की किताबों के सिवा कुछ जगह भी न थी इतने ज़ेवर उसमें कहाँ से आ गए। इस वाक़ये में आला हज़रत की जूदो सख़ा के अलावा करामत का भी सुबूत मिलता है।

हज़रत मेंहदी मियाँ साहब सरकार कलान का बयान है कि आला हज़रत ने इरशाद फ़रमाया कि मक्का मुअज़्ज़मा से एक साहब का ख़त आया कि मेरी दो लड़कियों की शादी है आप कुछ इमदाद कीजिए। मैंने ख़्याल किया कि दोनों लड़कियों की शादी के लिए एक हज़ार की रक़म काफ़ी होगी

इस मकसद के लिए शजराह ज़र का अमल किया। अमल का चालीसवां दिन था कि मैं मअमूल से फ़ारिग़ होकर बैठा था कि हामिद रज़ा आए और एक बँधा हुआ रूमाल दिया और कहा कि एक साहब मिलने की ख़ातिर आए थे, मैंने कहा इस वक़्त मशग़ूल हैं दूसरे वक़्त तशरीफ़ लाइएगा। वह साहब यह रूमाल देकर चले गए। मैंने जब यह रूमाल खोला उसमें एक हज़ार रूपये से ज़्यादा रक़म थी। ख़्याल आया ज़्यादा क्यों है, फ़ौरन ज़हन में आया कि मक्का मुअज़्ज़मा तक पहुँचाने का ख़र्च है। फ़ौरन अमल को हटा दिया कि इससे तवक्कल में फ़र्क़ आता है।

मौलाना हसनैन रज़ा ख़ाँ का बयान है .ख़ुदाबख़्श मरहूम आला हज़रत और दूसरे मौहल्ले वालों के यहाँ पर पानी भरा करते थे। और उनका सबसे बड़ा मगर नाबालिग़ लड़का मुहम्मद बख़्श आला हज़रत के यहाँ अपने छोटे डोल से पानी भरता था। उसके बालिग़ होने पर उसका छोटा भाई महमूद बख़्श यह ख़िदमत अंजाम देने लगा। इसी तरह .ख़ुदा बख़्श के बच्चे आला हज़रत के यहाँ पानी भरा करते थे। एक बार की बात है दारूल उलूम मन्ज़रे इस्लाम के जलसे हो रहे थे उल्मा भी आए हुए थे। एक बच्चा पानी भर रहा था जब उसने पानी ऊपर खीचा तो एक साहब ने अपना लोटा बढ़ा दिया। लड़के ने उनकी तरफ़ बग़ौर देखा और डोल अपनी मशक में लौटकर कहाँ मैं नाबालिग़ हूँ मेरे दिये हुए पानी से आपका वुज़ू न होगा। मसअला अपनी जगह सही था। उन साहब ने पूछा कि तुम कहाँ–कहाँ पानी भरते हो। उसने बताया आला हज़रत के यहाँ फिर पूछा उनका वुज़ू कैसे हो जाता है। इस पर बच्चा ख़ामोश हो गया। हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब उस जगह आ गये थे और यह गुफ़्तगू सुन रहे थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि पानी का मुआहिदा तो उसके बाप से है। वह .ख़ुद भरे या अपने बच्चों से भरवाए चाहे बच्चे बालिग़ हों या नाबालिग़ हों वुज़ू सही हो जाएगा इस पर मौलाना सय्यद सुलेमान अशरफ़ साहब ने फ़रमाया कि फकीह ऐसे होते हैं कि जिनके .ख़ुद्दाम भी मसाएल फ़िक़ह जानते हैं।

एक रोज़ एक कमसिन साहबज़ादे आ.ला. हज़रत क़िबला की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से आप से कहने लगे मेरी बुआ (जी) ने आपकी दावत की है। कल सुबह बुलाया है। आला हज़रत ने उनकी बेतकल्लुफ़ी पर दरयाफ़्त फ़रमाया दावत में क्या खिलाओगे। साहबज़ादे ने अपने

कुर्ते का दामन फैला कर दिखा दिया। उसमें माश की दाल और कुछ मिर्चे थीं। और कहा देखिए यह लाया हूँ आला हज़रत ने उनके सर पर हाथ फेरा और फ़रमाया मैं और यह (हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब की तरफ़ इशारा करके) आयेंगे और हाजी साहब को हुक्म दिया कि इन से मकान का पता पूछ लें। साहबज़ादे मकान का पता बता कर ख़ुशी–ख़ुशी लौट गए। दूसरे दिन जब आला हज़रत उनके मकान पर पहुँचे तो साहज़ादे दरवाज़े पर खड़े इन्तेज़ार कर रहे थे। आला हज़रत को देखते हुए ही यह कहते हुए माँ लो मौलवी साहब आ गये, अन्दर भागे। उनके दरवाज़े के आगे एक छप्पर पड़ा था जहाँ आला हज़रत कुछ देर इन्तेज़ार करते रहे। उसके बाद बोसीदा चटाई आई और एक डलिया में बाजरे की गर्म–गर्म रोटियाँ आईं मिट्टी की रकाबी में माश की दाल आई। जिसमें मिर्चों के टुकड़े पड़े हुए थे। साहबज़ादे ने खाने को कहा फ़रमाया हाथ धोने के लिए पहले पानी तो लाईए। जब वह पानी लेने को अन्दर गये तो हाजी साहब ने अर्ज किया यह मकान तो नक़्क़ारची का है। आला हज़रत ने उनसे परेशान होकर कहा अभी से क्यों कह दिया खाने के बाद कहते। उसके बाद साहबज़ादे पानी लेकर आ गए। आपने उन से सवाल किया कि आपके वालिद कहाँ हैं और क्या करते हैं। पर्दे की आड़ से माँ ने अर्ज़ किया कि मेरे शौहर का इन्तेकाल हो गया है। वह पहले कभी नौबत बजाया करते थे उसके बाद उन्होंने तौबा कर ली थी और अब तो कमाने वाला सिर्फ़ यह लड़का है जो राजों के साथ मज़दूरी करता है। आला हज़रत ने .ख़ुदा का शुक्र अदा किया और उन लोगों के लिए ख़ैर —ओ-- बरकत के लिए दुआएं की। हाजी साहब के दिल में यह ख़्याल आया कि आला हज़रत घर पर तो खाने में बहुत ऐहतयात करते हैं कि बजाए चपाती के सूजी के बिस्कुट खाते हैं और यहाँ बाजरे की रोटी और माश की दाल खाना पड़ी है। .कुरबान इस अखलाक़ पर कि मेज़बान की दिलशिकनी के अन्देशे से कुछ नहीं फ़रमाते बल्कि मेज़बान का दिल रखने के लिए .ख़ूब सैर होक़र खाना खाया। वापसी पर हाजी साहब से फ़रमाया कि अगर ऐसी .ख़ुलूस से दावत हो तो मैं रोज़ खाऊँ। घर पर तो थोड़ा शोरबा और दो सूजी के बिस्कुट या फिर वह मीठी या ठंडी चीज़ें जो उन्हें नुक़सान न करती, वह लेते थे। इसकी वजह उनकी क़मजोरी थी जो कि चौदह साल की उम्र से मुसलसल बैठ कर लिखने की वजह से थी। आख़िर वक़्त तक यही हालत रही और दर्दे गुर्दा के वह

मुसलसल मरीज़ रहे जिसके कभी–कभी दौरे पड़ जाते थे मगर अपने काम और दीनी ख़िदमात में कभी भी फ़र्क न आने दिया।

उन्हीं का बयान है एक रोज़ एक साहब तशरीफ़ लाए। आला हज़रत क़िबला और उनके साथियों की दावत करके चले गए। दूसरे दिन गाड़ी आ गई आला हज़रत के साथ इस रोज़ मौलाना ज़फ़र उद्दीन साहब भी थे। हाथ धुलाने के बाद एक डलिया में रोटियाँ और रकाबियों में गाय के गोश्त का क़ीमा रख दिया और खाना शुरू हुआ। मौलाना ज़फ़र उद्दीन साहब को ख़्याल आया कि आला हज़रत तो गाय का गोश्त खाते नहीं उनके लिए सख़्त नुक़सानदे है, अगर गोश्त शोरबे का पकाते तो आला हज़रत शोरबे से खा लेते मगर यहाँ क़ीमें में तो बग़ैर खाए चारा नहीं है। इसी ख़्याल में उलझे हुए थे कि आला हज़रत क़िबला ने ख़ुद ही फ़रमाया मौलाना एक दुआ हदीस शरीफ़ में है कि मुसलमान अगर पढ़कर जो कुछ खाए वह खाना हरगिज़ नुक़सान न देगा। वह दुआ यह है-- بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ
وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۔

तर्जमा :– मैं उस अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जिसका नाम नामी होते हुए ज़मीन व आसमान में कोई चीज़ नुक़सान नहीं करती। वह अल्लाह सब कुछ सुनता व जानता है।

मुसलमान यह दुआ याद करें अपने घर की औरतों और बच्चों को याद करायें जो खाने पीने की हर चीज़ से पहले यह दुआ पढ़कर दम करें। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हर इरशाद से मुसलमानों को फ़ायदा उठाना चाहिए। मौलाना समझ गये कि यह आला हज़रत ने मेरे दिल की बात का जवाब दिया है। और इस दुआ की भी तालीम फ़रमाई है। मौलाना साहब की साहिबेख़ाना से बेतकल्लुफ़ी थी। मौलाना ने मौक़ा पाकर उन से कहा कि जब आप की माली हालत इस क़द्र कमज़ोर थी कि आला हज़रत के लिए परहेज़ी खाना न पका सकते थे तो दावत ही की क्या ज़रूरत थी। साहिबेख़ाना बोले इसी ग़ुरबत की वजह से तो दावत की है कि आला हज़रत के क़दम मेरे घर आयें और वह दुआ करें और गुरबत दूर हो ख़ुशहाली हो और दीनो दुनियाँ की बरकतें हों।

उन्हीं का बयान है कि जब आला हज़रत जबलपुर गये थे तो एक रोज़ जुमा को आला हज़रत के लिए हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब ने

कपड़े निकाल कर दिए। कुर्ता बहुत फटा हुआ था। आला हज़रत ने फ़रमाया जुमे के दिन यह फटे कपड़े पहनाओगे हाजी साहब वह कुर्ता ले गए और दूसरा लाकर वह पेश कर दिया आला हज़रत ने देखा कि कुर्ता नया .ज़ुरूर है मगर उस में बटन नहीं हैं। आला हज़रत को जलाल आ गया और इरशाद फ़रमाया यह हाजी यह हाजी तो मेरा मर कर भी पीछा न छोड़ेगा। आवाज़ तेज़ थी जो दूसरों कमरों में भी सुनी गई। अब सुनने वालों ने आला हज़रत की इस आवाज़ पर तबसरा शुरू किया। किसी ने कहा कि इरशाद का मतलब क्या है। किसी ने कहा सिर्फ़ .ग़ुस्से में ऐसा हुआ जिसका कोई मतलब नहीं। मैं आला हज़रत के इस अन्दाज़ से वाक़िफ़ था और मैंने यह मतलब निकाला और कह भी दिया कि आला हज़रत का विसाल पहले होगा और हाजी साहब मुजाविर बनकर मज़ार पर बैठेंगे। इसलिए कि उनकी ऐसे वक़्त पर भी कोई बात बेमायनी नहीं देखी थी। चुनांचे ऐसा ही हुआ जब 1340 हिजरी में आला हज़रत का विसाल हुआ तो हाजी साहब ज़िन्दा थे और आला हज़रत क़िबला की ख़िदमत में मसरूफ़ थे। यह भी दुनियाँ ने देख लिया कि वह मुजाविर बनकर बैठ भी गये। इस बात का मफ़हूम पूरी तरह बरसों बाद मनज़रे आम पर आया जब हाजी साहब ने अपनी वफ़ात से कुछ पहले अपने दफ़न होने के लिए दरगाहे रज़विया में तहरीरी इजाज़त माँगी। मुख़ालफ़त तो दूर बल्कि इजाज़त के साथ मज़ामिन लिखे गये। हाजी साहब ने उसे किताबी शक्ल में छपवा कर बाट भी दिए। आपने क़ब्र भी खुदवा दी और आपका विसाल भी मज़ार शरीफ़ से दो ढाई गज़ के फ़ासले पर हुआ। अब समझ आया जो आला हज़रत ने फ़रमाया कि हाजी तो मर कर भी मेरा पीछा न छोड़ेगा।

मौलाना हसनैन रज़ा खाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब सीरते आला हज़रत में फ़रमाते हैं कि हज़रत शाह जी मियाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह को आला हज़रत से बहुत प्यार था। उन्होंने विसाल के वक़्त वसीयत फ़रमाई थी कि हमारे विसाल की इत्तेला हमारे मौलवी साहब को फ़ौरन दे देना। चुनांचे जिस रात में शाह जी मियाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह का विसाल हुआ उसकी सुबह को पहली गाड़ी से एक साहब आला हज़रत को इत्तेला देने की ग़र्ज़ से बरेली के लिए चल पड़े।

यहाँ आला हज़रत ने फ़ज्र के फ़र्ज़ों के बाद हुक्म दे दिया कि जल्दी मोटर लाओ मैं पीलीभीत जाऊँगा। मैं फ़ौरन अपने एक दोस्त के यहाँ

पहुँचा और उनसे जल्दी मोटर तैयार करने को कहा और यह भी बता दिया कि आला हज़रत क़िबला को पीलीभीत जाना आना है। मैं जैसे ही मोटर से सौदागरी मौहल्ले उतरा हूँ, हाजी किफ़ायत उल्लाह साहब सामाने सफ़र मोटर में रखने लगे मुझ से कहा की घर में इत्तेला कर दीजिए आला हज़रत तैयार ही बैठे हैं मैंने जाकर अर्ज़ किया कि मोटर आ गई है। आला हज़रत उठे और फौरन रवाना हो गए। यह सब कुछ बहुत जल्दी हो गया मगर किसी को समझ न आया कि इतनी उजलत क्यों हुई। जब एक घन्टे के बाद एक साहब पीलीभील से हज़रत शाह जी मियॉं रहमतुल्लहि तआला अलैह के इन्तेकाल की ख़बर लाए तब मालूम हुआ कि उजलत की वजह यह थी। उन साहब से कहा गया कि आला हज़रत तो गए। शायद अभी ख़करांदी के पुल से गुज़रे होंगे उन्होंने कहा कि मैं पहला आदमी हूँ जो शाह जी मियॉं रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़बर देने भेजा गया हूँ। उन्हें पहले किस ने इत्तेला दे दी। किसी ने कहा शाह जी मियॉं ख़्वाब में कह गये होंगे। या यह कहना ही पड़ेगा–

اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ ۔

तर्जमा:–

मोमिन की फ़िरासते इमानी से बचो कि वह अल्लाह के नूर से देखता है

उन्हीं का बयान है कि आला हज़रत हमेशा जमाअत की पाबन्दी फरमाते गर्म मिजाज़ होने के बावजूद हमेशा दस्तार और अगंरखे के साथ नमाज़ पढ़ते ख़ुसुसन फ़र्ज़ तो सिर्फ़ कभी टोपी और कुर्ते के अदा नहीं की। नमाज़ बा इत्मेनान पढ़ते जितनी देर में दूसरे लोग चार रकआत पढ़ते आप दो रकआत पढ़ते। एक दिन की बात है नमाज़े अस्र पढ़ा कर तशरीफ़ ले गए। मैं मस्जिद ही में रहा कि एक साहब कह रहे हैं कि आला हज़रत नमाज़ पढ़ रहे हैं। मुझे यकीन नहीं आया कि अभी तो नमाज़ पढ़ाकर गए हैं। अस्र के बाद नवाफिल वगैरह भी नहीं होते और अगर नमाज़ किसी वजह से नहीं हुई तो आला हज़रत का हाफ़ज़ा ऐसा नहीं कि हमें भूल जाये। मैंने देखा कि वाक़ई नमाज़ पढ़ रहे थे। मुझे बहुत हैरत हुई। सलाम फेरने पर अर्ज़ किया। इरशाद फरमाया कायदा आख़िरा में तशह्हुद के बाद सांस की हरकत से मेरे अगंरखे का बटन टूट गया था क्योंकि नमाज़ तशह्हुद तक ख़त्म हो जाती है, इस वजह से, मैंने आप से नहीं कहा और घर जाकर बटन दुरूस्त कराकर अपनी नमाज़ फिर पढ़ ली।

एक मरतबा आपकी आँखे दुखने आ गईं इस दौरान बार–बार कभी नमाज़ से पहले कभी नमाज़ के बाद में लोगों से पूछते की देखिए कि पानी आँख के हलक़े के बाहर तो नहीं आया वरना वुज़ू करके नमाज़ दोबारा पढ़ लूँ।

ये चन्द वाक़यात में आला हज़रत के तक़वा तहारत, अदब, सादात की ताज़ीम, इबादत, इत्तेबाए सुन्नत, अदाए फ़र्ज़, इल्म और रौशन ज़मीरी का पता चलता है।

सय्यदों से महब्बत व ताज़ीम

सादाते किराम से आपको बेपनाह महब्बत थी और उनसे बेहद अक़ीदत रखते और बेहद ऐहतराम करते क्यूँकि जिन चीज़ों की निसबत हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से है उनकी ताज़ीम भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ताज़ीम है। चन्द वाक़यात ताज़ीमे सादात से मुताल्लिक़ पेश हैं।

एक कम उम्र सहबज़ादे को घर में मुलाज़िम रखा गया। बाद में मालूम हुआ कि सय्यद ज़ादे हैं। लिहाज़ा घर वालों को ताकीद फ़रमा दी कि सहबज़ादे साहब से ख़बरदार कोई काम न लिया जाये। खाना वग़ैरह जिस चीज़ की .ज़ुरूरत हो हाज़िर की जाये। जिस तन्ख़्वाह का वायदा है, वह बतौर नज़राना पेश होती रहे। चुनांचे ऐसा ही किया जाता रहा। कुछ अरसे के बाद वह साहबज़ादे .ख़ुद ही चले गये।

मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि मेरे क़याम बरेली शरीफ़ के ज़माने में एक सय्यद साहब तशरीफ़ लाये और ज़नाना दरवाज़े के पास जाकर आवाज़ दी "दिलवाओ सय्यद को"। आला हज़रत ने अपनी आमदनी से दीनी ख़र्चों के लिए दो सौ रूपये माहावार मुक़र्रर किया था। उस महीने के रूपये उसी दिन हज़रत मंझले मियाँ साहब अलैहिर्रहमा ने हाज़िर किए थे जिसमें दस, पाँच, दो के नोट और अठन्नियाँ, दुअन्नियाँ, चवन्नियाँ सभी तरह के रूपये पैसे थे। आला हज़रत आवाज़ सुनते ही वह बकसा जिसमें वह रक़म थी, लेकर बाहर तशरीफ़ लाये और इन सय्यद साहब की ख़िदमत में पेश करके फ़रमाया हुज़ूर हाज़िर है। सय्यद साहब उस रक़म को देर तक देखते रहे जो एक एक ख़ाने में एक एक रक़म अलाहिदा अलाहिदा रखी हुई थी। उसके बाद चवन्नी के ख़ाने में से एक चवन्नी उठा

की और फरमाया बस आप ले जाइये। उसी वक़्त आला हज़रत ने ख़ादिम से फरमाया जब सय्यद साहब को देखो चवन्नी नज़्र कर दिया करो।उनको मांगने की जुरूरत न पड़े। हज़रत हसन मियाँ साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने क्या खूब नातिया शैर कहा है :–

क्यूँ अपनी गली मे वह रवादारे सदा हो
जो भीक लिये राहे गदा देख रहा हो

वह सय्यद साहब वाक़ई सय्यद थे और बक़द्रे .जुरूरत ही सवाल करते थे वरना अगर वह चाहते तो दस बीस रूपये के नोट उठा लेते। बल्कि आला हज़रत ने मेरे दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया उस वक़्त अगर सय्यद साहब पूरे दो सौ रूपये ले लेते तो मुझे कोई उज़्र न होता मैं तो इसी ग़र्ज़ से लाया ही था। मैंने वह रक़म एक साइल (माँगने वाला) के सामने नहीं पेश की थी बल्कि औलादे रसूल की ख़िदमत में लाया था।

मौलाना सय्यद मुहम्मद कछौछवी। मुहद्दिसे आज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी तालिबे इल्मी के वक़्त का वाक़या बयान करते हुए फरमाते हैं। इफ़्ता के काम के लिए जब मैं बरेली हाज़िर हुआ, जुमे का दिन था मैं सबसे आख़िरी सफ़ में बैठा था। नमाज़ हो गई तो मुझे दरयाफ़्त किया कि कहाँ हैं। मैं बरेली में बिल्कुल नया शख़्स था। लोग एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यहाँ तक कि आला हज़रत .खुद खड़े हो गए और मुझे देख लिया ही मुसल्ले से उठकर आख़िरी सफ़ में आकर मुझे मुसाफ़े से नवाज़ा उससे [illegible] का इरादा फ़रमाया तो मैं थर्रा कर गिर पड़ा। आला हज़रत फिर मुसल्ले पर तशरीफ़ ले गए और सुनन व नवाफ़िल अदा करने लगे।

एक साहब ने सवाल किया हुज़ूर कोई उस्ताद किसी सय्यद ज़ादे को मार सकता है या नहीं। आप ने इरशाद फ़रमाया –

क़ाज़ी जो हुदूदे इलाहिया क़ायम करने पर मजबूर है, उसके सामने अगर किसी सय्यद पर हद (कोड़ वग़ैरह लगाना) साबित हुई तो बावजूद यह कि उस पर हद लगाना फ़र्ज़ है और वह हद लगाएगा लेकिन उस को हुक्म है कि सज़ा देने की नियत न करे। बल्कि दिल में यह नियत करे कि शहज़ादे के पैर में कीचड़ लगी है उसे साफ़ कर रहा हूँ। क़ाज़ी जिस पर सज़ा देना फर्ज़ है उसको तो यह हुक्म है और उस्ताद पर तो मारना फ़र्ज़ नहीं आला हज़रत की नात का एक शेर भी है–

तेरी, नस्ले पाक में है बच्चा–बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

आला हज़रत अगर घर में किसी से ना ख़ुश होते तो खाना य हुक्का या पान छोड़ देते। इससे उन्हें सख़्त तकलीफ़ होती। पहले तो लो ख़त्म कराने की कोशिश करते। अगर कामयाब न होते तो किसी सय्यद अर्ज़ कराते। आला हज़रत को सय्यद के हुक्म की तामील करनी पड़ती औ एक बार आला हज़रत ने खाना छोड़ दिया और सिर्फ़ नाशता ही करते औ इसमें इज़ाफ़ा भी नहीं फ़रमाते सबने कोशिश की मगर कामयाब न हुए। सय्य मक़बूल मियाँ साहब भी खिदमत में हाज़िर हुए और उनसे भी अर्ज़ किया आज़ दो महीने होने को आए, आला हज़रत ने खाना छोड़ दिया हम स कोशिश करके थक गए हैं। आप ही उन्हें मजबूर कर सकते हैं इस पर उन्हों फ़रमाया हमारी ज़िन्दगी में उनकी यह हिम्मत हो गई कि वह खाना छोड़ बै है अभी खाना तैयार कराता हूँ और लेकर आता हूँ। वह खाने के साथ तशरीफ़ लाए। आला हज़रत सय्यद साहब के क़दम बोस हुए और बात चीत शुरू हुई। सय्यद साहब ने फ़रमाया सुना है आप ने खाना छोड़ दिया है। आला हज़रत ने अर्ज़ किया मैं रोज़ खाता हूँ। सय्यद साहब ने फ़रमाया मुझे मालूम है जैसा आप खाते हैं। आला हज़रत ने फ़रमाया मेरे कामों में कोई फ़र्क नहीं पड़ा सारे काम ठीक ठाक कर रहा हूँ, मुझ इस से ज़्यादा की ज़रूरत नहीं मालूम होती तो सय्यद साहब क़िबला नाराज़ हो गए और खड़े होकर फ़रमाने लगे अच्छा तो मैं खाना लिये जाता हूँ। कल मैदाने क़यामत में सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दामन पकड़कर अर्ज़ करूँगा कि एक सैदानी ने बड़े शौक़ से खाना पकाया और एक सय्यद लेकर आया मगर आप के अहमद रज़ा ख़ाँ ने किसी तरह न खाया। इस पर आला हज़रत काँप गये और अर्ज़ किया कि मैं हुक्म की तामील के लिए हाज़िर हूँ अभी खाए लेता हूँ सय्यद साहब क़िबला ने फ़रमाया अब तो खाना तुम जब ही खा सकते हो जब यह वायदा करो कि अब उम्र भर खाना नहीं छोड़ोगे। चुनांचे आला हज़रत ने उम्र भर खाना न छोड़ने का वायदा किया तो सय्यद साहब क़िबला ने अपने सामने खाना खिलाया और ख़ुश–ख़ुश तशरीफ़ ले गए। आला हज़रत के लिए सादाते किराम का–हर–जायज़ हुक्म आख़िरी होता था और उस की तामील ज़ुरूर फ़रमाते थे।

आला हज़रत का .क़ुव्वते हाफ़ज़ा और एक माह में हिफ़्ज़े .कुरआन

अल्लाह पाक ने आला हज़रत को .क़ुव्वते याददाश्त में बड़ा कमाल दिया था। यूँ तो .कुर्आन मजीद का अक्सर और बेश्तर हिस्सा आपको याद था लेकिन पूरे .क़ुर्आन मजीद के हाफ़िज़ न थे। एक बार किसी नावाक़िफ़ शख़्स ने अलक़ाब के साथ आपको हाफ़िज़ भी लिख दिया यह अरीज़ा 29 शाबान को आपको मिला।दूसरे ही दिन से आपने .कुर्आन मजीद याद करना शुरू कर दिया और हर रोज़ एक पारा हिफ़्ज़ करके आप तरावीह में सुना देते। रमज़ान शरीफ़ की सत्ताइसवीं तारीख़ को मग़रिब से पहले पूरा .कुर्आन हिफ़्ज़ कर लिया। और सिर्फ़ एक माह की मुख़्तसर मुद्दत में आप हाफ़िज़ हो गए। फिर बड़ी .ख़ूबी यह कि रोज़ मर्रा के मामूलात फ़तावा मुबारक लिखना और दीगर दीनी कामों में फ़र्क न आया ।

मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब मेरठी का बयान है कि मैंने एक साल रमज़ान शरीफ़ में आला हज़रत की मस्जिद में ऐतकाफ़ किया मैंने सहर के वक़्त कुर्आन पढ़ने में गलती की आला हज़रत आराम फ़रमा रहे थे मगर जाग रहे थे। मुझे वह ग़लती बताई। मैंने दोबारा पढ़ा। फ़रमाया अब मुझसे सुनो और पूरा रूकूअ सुना दिया सुबह को फ़ज्र की नमाज़ में वही रूकूअ बिना तकल्लुफ पढ़ा।

उन्ही का बयान है कि एक मरतबा मेरठ से बरेली गया मालूम हुआ आला हज़रत की तबीयत नासाज़ है डाक्टरों ने मिलने और बातें करने को मना कर दिया है इस वजह से शहर से बाहर एक कोठी में मुक़ीम हैं। और वहाँ आम लोगों को जाने की इजाज़त नहीं है मगर मुझ से लोग वाक़िफ़ थे, मुझे पता बता दिया। जब मैं पहुँचा तो देखा कि कोठी का दरवाज़ा बन्द है। दस्तक देने पर एक साहब आए और नाम पूछ कर अन्दर चले गए। जब इजाज़त मिली तो अन्दर गया, देखा बड़ा मकान है सिर्फ़ दो एक आदमी हैं। मग़रिब की नमाज़ के बाद आला हज़रत अपने पलंग पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए हम लोग कुर्सियों पर बैठे। चार साहब पहुँचे मुफ़्ती –ए–आज़म हज़रत मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब, सदरूश शरिया मौलाना अमजद अली साहब, जनाब मौलवी हशमत अली ख़ाँ साहब एक और कोई साहब। यह चारों साहब आला

हज़रत के पास पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए। आला हज़रत ने .ख़ुतूत की एक गड्डी मौलाना अमजद अली साहब को देकर फ़रमाया आज तीस ख़त आए थे एक मैंने खोल लिया है यह उन्तीस हैं, गिन लीजिए। उन्होंने उन्तीस गिनकर एक लिफ़ाफ़ा खोला जिस में कई वर्क़ पर चन्द सवालात थे। वह सब सुनाए आला हज़रत ने पहले सवाल के जवाब में एक फ़िक़रा फ़रमा दिया वह लिखने लगे और लिखकर अर्ज़ की 'हुज़ूर'। आला हज़रत ने उसके आगे एक फ़िक़रा फ़रमाया वह लिखकर फिर हुज़ूर कहते। वह सिलसिलेवार उसके आगे का फ़िक़रा फ़रमा दिया करते और दूसरे साहब ने हुज़ूर कहने के दरमियान में अपना ख़त सुनाना शुरू किया। यह हुज़ूर कहते वह रुक जाते और जब वह फ़िक़रा सुनकर लिखने लगते तो वह अपना ख़त सुनाने लगते। इसी तरह उन्होंने अपना ख़त ख़त्म किया और उनको भी उनके पहले सवाल के मुताल्लिक़ जो फ़िक़रा मुनासिब था, वह इरशाद फ़रमा दिया। अब दोनो हज़रात अपना-अपना फ़िक़रा ख़त्म होने पर हुज़ूर कहते और जवाब मिलने पर लिखना शुरू कर देते। इसी हालत में उन दो हुज़ूर हुज़ूर के बीच में जितना वक़्त बचता उसमें तीसरे साहब ने अपना ख़त सुनाना शुरू कर दिया और इसी तरह ख़त्म करके जवाब लिखना शुरू किया अब चौथे साहब ने इन तीन हुज़ूर हुज़ूर के दरमियान जो वक़्त बचता अपना ख़त सुनाना शुरू किया। यह देखकर मुझे हक़ीक़तन पसीना आ गया और एक साहब जो मेरे क़रीब बैठे थे इसी हालत में कुछ मसअले पूछे जिन्हें सुनकर मुझे बहुत मलाल हुआ और .ग़ुस्सा आया कि ऐसी हालत में यह शख़्स सवाल पूछ रहा है मगर आला हज़रत ने ज़र्रा बराबर भी मलाल न फ़रमाया और बहुत इतमिनान से उनको भी जवाब दिये। इसी तरह उन्तीस ख़त के जवाब लिखवाए। मैंने अपनी उम्र में ऐसे हाफ़ज़े का कोई शख़्स न देखा। मालूम हुआ कि डाक्टरों के बहुत ज़्यादा कहने पर आला हज़रत ने सिर्फ़ यह मान लिया था कि शब में अपने हाथ से तहरीर न लिखेंगे। उसका यह इन्तेज़ाम था। हाँ दिन में .ख़ुद ही लिखा करते थे। इस .क़द्र जल्द तहरीर फ़रमाते थे कि किसी शख़्स को आला हजरत का एक दिन का लिखा लिखना दुश्वार हो जाता था।

उन्हीं का बयान है कि एक मरतबा जब तबीबों ने लिखने को मना कर दिया था तो एक मकान में चन्द अलमारियाँ लगाकर उसमें किताबें रख दीं गई अब जो फ़तवा लिखना होता उसका कुछ मज़मून लिखाकर मुझसे

फ़रमाते अलमारी में से फ़लाँ जिल्द निकालो, इतने सफ़े लौट लो और फ़लाँ सफ़े पर इतनी लाइनों के बाद यह मज़मून शुरू हुआ है उसे नक़ल कर दो तो वह फिकरा देख कर पूरा मज़मून लिखता। मुझे सख़्त हैरानी होती कि किस तरह से सफ़े और लाइनें गिन कर रखीं गई थीं। ग़र्ज़ कि उनकी दिमाग़ी बातें और हाफ़ज़ा हम लोगो की समझ से बाहर था।

मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं एक मरतबा आला हज़रत पीलीभीत तशरीफ़ ले गए और हज़रत मौलाना वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती कुद्दिस सिर्रूह के मेहमान हुए। दौराने गुफ़्तगू फ़तवे की एक किताब का ज़िक्र हुआ हज़रत मुहद्दिस सूरती साहब ने फ़रमाया मेरे कुतुबख़ाने में है। इत्तेफ़ाक़न वह किताब आला हज़रत के कुतुबख़ाने में न थी। आला हज़रत ने फ़रमाया मैंने नहीं देखी है जाते वक़्त मेरे साथ कर दीजिएगा। हज़रत मुहद्दिस सूरती साहब ने बख़ुशी वह किताब लाकर हाज़िर कर दी साथ–साथ फ़रमाया जब मुलाहिज़ा कर लें तो भेज दें इसलिए कि आप के पास तो बहुत किताबें हैं मेरे पास तो यही किताबें ही हैं जिन से फ़तवा दिया करता हूँ। आला हज़रत को उसी दिन वापस होना था मगर आला हज़रत के एक जाँनिसार मुरीद ने दावत की तो आपको रुकना पड़ा;शब को आला हज़रत ने वह किताब जो दो ज़ख़ीम जिल्दों में थी, मुलाहिज़ा फ़रमा ली। दूसरे दिन जब दोपहर कि बाद बरेली वापस होने लगे और सामान दुरुस्त किया जाने लगा तो फ़रमाया यह किताब मुहद्दिस साहब को दे आओ। मुझे ताअज्जुब हुआ किताब ले जाने का इरादा था यह वापस क्यों कर रहें हैं लेकिन कुछ बोलने की हिम्मत न हुई मैंने किताब मुहद्दिस साहब को वापस करने को हाज़िर हुआ तो वह स्टेशन तक जाने के लिए तशरीफ़ ही ला रहे थे कि मैंने आला हज़रत का इरशाद फ़रमाया हुआ ज़ुबानी अर्ज़ किया मुहद्दिस साहब ने आकर आला हज़रत से फ़रमाया कि मेरे यह कहने का कि जब मुलाहिज़ा फ़रमा लें तब देदें, आपको मलाल हुआ और किताब वापस कर दी। आला हज़रत ने फ़रमाया बरेली साथ ले जाने का इरादा था और अगर कल ही जाता तो उस किताब को साथ लेता जाता मगर जब जाना न हुआ तो शब में और सुबह के वक़्त पूरी किताब देख ली, अब ले जाने की ज़रूरत न रही। मुहद्दिस सूरती साहब ने फ़रमाया बस एक बार देखना काफ़ी हो गया आला हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तआला के फ़ज़्लो

करम से उम्मीद है कि दो तीन महीने तक तो जहाँ की इबारत की .ज़ुरूरत होगी फ़तवा मैं लिख दूंगा और मज़मून तो इन्शा अल्लाह तआला उम्र भर को महफ़ूज़ हो गया।

अल्लाह तआला ने इस मुजद्दिदे आज़म को कमाल का हाफ़ज़ा और ज़हन दिया था।

आला हज़रत का फ़रीज़ए हज अदा करना

आला हज़रत ने पहला हज 1295 हिजरी मुताबिक़ 1878 में अपने वालदैन के साथ किया। एक दिन आपने मक़ामे इब्राहीम में नमाज़ पढ़ी। इमाम शफ़ई हज़रत हुसैन इब्ने स्वालेह जमलुल्लैल ने जब आपका चेहरए अनवर देखा, बग़ैर किसी जान पहचान के आपका हाथ पकड़ा और अपने दौलतख़ाने पर लाए और बहुत देर तक आपकी पेशानी मुक़द्दस पर निगाह जमाए रहे फिर फ़रमाया बेशक मैं इस पेशानी में अल्लाह का नूर देख रहा हूँ। इसके बाद सहाहे सित्ता (हदीस शरीफ़ की छः मशहूर किताबें), सिलसिलए आलिया क़ादिरिया की इजाज़त अपने हाथों से लिखा कर आपको अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया तुमहारा नाम ज़ियाउद्दीन अहमद है। फिर आला हज़रत ने हज से फ़ारिग़ होकर हुज़ूर–ए–अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बेकस पनाह में हाज़री दी और बारगाहे रिसालत से हज़ारों नेमतो और बरकतों से नवाज़े गये। दूसरा हज आपने 1334 हिजरी में किया।

आला हज़रत एक मुक़र्रिर

आप क़लम के धनी होने के साथ साथ एक बेहतरीन मुक़र्रिर (तक़रीर करने वाला) भी थे। हर साल तीन ज़बरदस्त वाज़ तो आप .ज़ुरूर फ़रमाते । एक दसतारबन्दी के मौक़े पर दूसरा ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मौक़े पर तीसरा अपने पीर–ओ–मुर्शिद सय्यद शाह आले रसूल रदियल्लाहु तआला अन्हु के उर्स के मौक़े पर जो आपके यहाँ होता। इसके अलावा लोगों के इसरार पर कभी कभी वाज़ फ़रमातें आपकी तक़रीरों और तहरीरों का .ख़ुलासा तीन बातें थीं :–

1–दुनिया भर की हर लाएक़े ताज़ीम हस्ती से ज़्यादा अल्लाह व रसूल की महब्बत व ताज़ीम करो।

2–अल्लाह व रसूल की रज़ा के लिए अल्लाह व रसूल के दोस्त से दोस्ती रखो।

अल्लाह व रसूल की ख़ुशी के लिए अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से नफ़रत व अदावत रखो।

आप अपनी सारी उम्र दुनिया को यही बताते रहे कि जो मुसलमान इन तीनों बातो में से एक पर भी कामिल नहीं तो उसका ईमान भी कामिल नहीं। अलगर्ज़ आपने मुसलमानों को अल्लाह रसूल, अम्बिया, सहाबा, और बुजुर्गों की ताजीम व तौक़ीर का सबक पढ़ाया।

अल्लाह के दोस्त से दोस्ती और अल्लाह के दुश्मन से दुश्मनी

आला हज़रत की ज़ात अलहुब्बो फ़िल्लाहि वल बुग़्ज़ो फ़िल्लाह (यानी अल्लाह के लिए महब्बत और अल्लाह के लिए दुश्मनी) की ज़िन्दा तस्वीर थी। अल्लाह व रसूल से महब्बत रखने वाले को अपना अज़ीज़ समझते और अल्लाह व रसूल के दुश्मन को अपना दुश्मन जानते। अपने मुख़ालिफ़ से कभी बदअख़लाकी से पेश नहीं आते ख़ुशअख़लाक़ी का यह आलम था कि जिससे एक बार कलाम फ़रमाया उसे अपना बना लिया,कभी दुश्मन से भी सख़्तकलामी न फरमाई,हमेशा सब्र से काम लिया मगर दीन के दुश्मन से कभी नरमी न बरती। एक मरतबा हज़रत नन्हे मियाँ मौलाना मुहम्मद रज़ा खाँ ने अर्ज़ किया कि हैदराबाद से एक राफ़ज़ी सिर्फ़ आपकी ज़ियारत के लिए आया है। इसी दरमियान वह आ गया। हाज़रीन मजलिस का बयान है कि आप ने उसकी तरफ़ बिल्कुल तवज्जो न फ़रमाई यहाँ तक कि नन्हे मियाँ साहब ने उसको कुर्सी पर बैठने का इशारा किया कि वह बैठ गया। आला हज़रत के तवज्जुह न फरमाने से उसे भी कुछ बोलने की हिम्मत न हुई। थोड़ी देर बैठ कर वह चला गया। उस के जाने के बाद नन्हे मियाँ ने आला हज़रत को सुनाने के लिए कहा कि इतनी दूर से वह सिर्फ़ मुलाक़ात के लिए आया था। अख़लाक़न तवज्जो फरमा लेते तो क्या था। हुज़ूर आला हज़रत ने जलाल की हालत में इरशाद फरमाया कि मेरे पेशवाओं ने मुझे यही अख़लाक़ बताया है। फिर आपने बयान फरमाया कि अमीरूल मोमिनीन फ़ारूक़ –ए– आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद –ए– नब्वी में तशरीफ़ ला रहे हैं एक

मुसाफ़िर मिलता है और सवाल करता है कि मैं भूख़ा हूँ आप साथ चलने का इशारा फ़रमाते हैं, वह चल देता है अमीरूल मोमिनीन ख़ाना मगांते हैं ।. खाना खाते में वह मुसाफ़िर बदमज़हबी के कुछ अलफ़ाज़ ज़ुबान से निकालता है अमीरूल मोमिनीन ख़ादिम को हुक्म देते हैं कि खाना इसके सामने से फ़ौरन उठाओ और इसका कान पकड़कर बाहर कर दो। ख़ादिम फ़ौरन हुक्म बजा लाता है। .ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मस्जिद –ए– नब्वी से नाम ले लेकर मस्जिद से निकलवाया। ऐ फ़लाँ तू मस्जिद से निकल जा कि तू मुनाफ़िक़ है।

आज के सुलह कुल लोग आला हज़रत का यह वाक़या सुनकर बहुत नाराज़ होंगे और अख़लाक़ और तहज़ीब का हवाला देंगे और आला हज़रत से बदज़न कराने की कोशिश करेंगे मुनासिब मालूम होता है। इस मुक़ाम पर हुज़ूर –ए– अक़दस सरकार –ए– मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के और सहाबा वग़ैरहुम के चन्द अक़वाल पेश किए जाए।

हुज़ूर सय्यदुल मुरसलीन इरशाद फ़रमाते हैं :– ऐ मुसलमानों मेरी उम्मत के आख़िर में कुछ लोग पैदा होंगे जो तुमसे वह बातें बयान करेंगे जिनको न तुमने सुना और न तुम्हारे बाप दादा ने सुना है तो (जब ऐसे बदमज़हब ज़ाहिर हो जायें तो) तुम लोग उनसे बचते रहना और अपने को उनसे दूर रखना (मुस्लिम शरीफ़)

दूसरी हदीस में हुज़ूर –ए– अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते है आख़िर ज़माने में बहुत मक्कार और कज़्ज़ा (झूटे) पैदा होंगे वह तुम्हारे सामने ऐसे अक़ायद और ख़यालात गढ़ कर पेश करेंगे जिनको न तुमने सुना न तुम्हारे बाप दादा ने सुना। मतलब यह है कि जब ऐसे मक्कार लोग चाहें वह मौलवी कहलाते हों या सूफ़ी या मिस्ट कहलाते हों या मुल्ला ज़ाहिर हों तो ऐ मुसलमानों उनसे दूर रहना कहीं ऐसा न हो वह तुम्हें बहका दें, ऐसा न हो वह तुम्हें बदमज़हबी फ़ितने में डाल दें।

तीसरी हदीस में सरकार सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआल अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं जिसने किसी बदमज़हब की तौक़ीर उसने इसलाम ढाने पर मदद की (मिशकात शरीफ़)

सुलह कुल लोग देखे इन इरशादात को कि हुज़ूर सल्लल्ला तआला अलैहि वसल्लम ने साफ़–साफ़ क्या फ़रमाया कि बदमज़हब से दू

रही हर वह शख़्स जो तारीख़ से वाकिफ़ है उस पर .ख़ूब रौशन है कि शेर -ए- ख़ुदा अली मुरतज़ा करमल्लाहु तआला वजहु ने अपने ज़माने के मुसलमान कहलाने वाले बदमज़हब ख़ारजियों की नमाज़, .कुरआन ख़्वानी रोज़ा और दीगर इबादात का लिहाज़ न फ़रमाया, न अनके आगे दोस्ती का हाथ बढ़ाया, उन्हें अपना दीनी भाई नहीं बनाया, मेल जोल रवा न रखा बल्कि उनसे बदमज़हब होने की वजह से उन पर जिहाद फ़रमाया और उनकी फ़ौज के बीस हज़ार ख़ारजियों ग़ैर मुक़ल्लिदों को कत्ल किया जिसमें मौलवी आलिम क़ारी सब ही लोग थे। अब आप .ख़ुद ही फ़ैसला कर लें कि मौला अली को उनके आका ने क्या तालीम फ़रमाया था।

'ग़ुनियतुत तालबीन में सरकार ग़ौस -ए- आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि जब किसी बदमज़हब को रास्ते में आता देखो तो तुम दूसरी राह पर हो जाओ।

यह ख़ूब याद रखने वाली बात है कि अल्लाह के दोस्त से दोस्ती अल्लाह के दुश्मन से दुश्मनी का तक़ाज़ा है कि हुज़ूर -ए- अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से महब्बत व अक़ीदत उसी वक़्त मुमकिन है जब हुज़ूर के दुश्मनों वहाबियों, देवबन्दियों,चिकड़ालवियों,नैचरियों, क़ादयानियों और नदवीयों,राफ़ज़ियों से नफ़रत रखी जाए। उन्हें अपना दुश्मन क़रार दिया जाए इसी तरह हज़रात अहले बैत ख़ुसूसन सय्यदिना इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु से और मौला अली करमल्लाहु वजहु से महब्बत उसी वक़्त है जब ख़ारजियों, नासबियों, यज़ीदियों और वहाबियों से अदावत रखी जाए। यूँही हज़रात सहाबा किराम खुसूसन सय्येदिना अबूबक्र सिद्दीक़, सय्येदिना उमर फ़ारूक़, सय्येदिना उसमान ग़नी, सय्येदा ताहिरा आईशा सिद्का, सय्येदिना अम्र इब्ने आस, सय्येदिना अबु सुफ़यान, सय्येदिना अमीर मआविया वग़ैरहुम रिज़वानुल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन से अक़ीदत व महब्बत उसी वक़्त मुमकिन है जब राफ़ज़ियों से नफ़रत की जाये। इसी तरह हज़रात अइम्मा ए इस्लाम सय्येदिना इमाम आज़म अबू हनीफ़ा, सय्येदिना इमाम शाफ़ई, सय्येदिना इमाम मालिक, सय्येदिना इमाम हम्बल, सय्येदिना ग़ौस आज़म शहंशाहे बग़दाद वग़ैरहुम औलिया किराम से मैहब्बत व अक़ीदत उसी वक़्त दुरूस्त है जब ग़ैर मुक़ल्लिदों वहाबियों से नफ़रत की जाये। अब यह बात साफ़ हो गई कि सच्चे आशिक़े रसूल की पहचान क्या है और आला हज़रत ने इस पर सख़्ती से

अमल क्यूँ किया क्यूँकि आला हज़रत एक सच्चे आशिक़े रसूल थे।

आला हज़रत की ज़िन्दगी का हर गोशा इत्तेबाए सुन्नत (सुन्नत की पैरवी) में सहाबा किराम का नमूना थी। आपने बहुत सी मुर्दा सुन्नतों को ज़िन्दा फ़रमाया जिनमें से एक जुमा की अज़ाने सानी (यानी दूसरी .खुतबे वाली अज़ान) को ख़तीब (.खुतबा पढ़ने वाला) के सामने ख़ारिजे मस्जिद दिलवाया।

जब हिन्द के नाम निहाद उल्मा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखियाँ करना शुरू कीं तो आला हज़रत ने उनका डट कर रद्द किया।दुश्मनों ने जल भुन कर रिसालों, अखबारों और किताबों में आप पर गालियों की बौछार कर दी और तरह तरह की धमकियाँ भी दीं मगर आप ने इसकी परवाह न की। एक मरतबा हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यद नईम उद्दीन मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आपकी ख़िदमत में अर्ज़ की कि किताबों में वहाबियों देवबन्दियों और गैर मुक़ल्लिदों वगैरह का रद्द ऐसे सख़्त अलफ़ाज़ों में हुआ करता है कि आज कल कुछ लोग चन्द लाईनें देखकर ही हुज़ूर की किताबों को फेंक देते हैं और कहते हैं कि इसमें गालियाँ भरी हैं।इस तरह वह आपकी पेश की दलीलें नहीं देख पाते और हिदायत से मरहूम रह जाते हैं। हुज़ूर हो सके तो कुछ नरमी इख़्तेयार फ़रमाएं ताकि यह लोग भी दलाएल देखकर राह पाएं। आला हज़रत आबदीदा (आँख में आँसू आना) हो गए और फ़रमाया मौलाना तमन्ना तो यह थी कि अहमद रज़ा के हाथ में तलवार होती और दुश्मनाने रसूल की गर्दनें होतीं और अपने हाथ से रसूल की गुस्ताख़ी करने वालों को क़त्ल करता लेकिन तलवार से काम लेना तो अपने इख़्तियार में नहीं, हाँ अल्लाह तआला ने क़लम अता फ़रमाया है। तो मैं क़लम से सख़्ती और शिद्दत के साथ इन बेदीनों के लिए रद्द करता हूँ कि ताकि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्लम की शान में बदज़बानी करने वालों को अपने ख़िलाफ़ शदीद देखकर मुझ पर ग़ुस्सा आए फिर जल भुन कर मुझे गालियाँ देने लगें और मेरे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गालियाँ देना भूल जाएं। इस तरह मेरे और मेरे आबा –ओ– अजदाद की इज़्ज़त –ओ– आबरू हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़मते जलील पर सपर हो जाए। आला हज़रत बदमज़हबों से इस हद दर्जा बेज़ार रहते थे कि आला हज़रत का ज़िक्र ही सुन्नियत की पहचान बन गया।

सुन्नी वहाबी की पहचान

उलमाए हक़ के नज़दीक आला हज़रत से महब्बत रखना सुन्नियत की अलामत है और आप से जलना और बुग़्ज़ रखना बद्दीन होने की पहचान है। मौलाना क़ादिर बख़्श साहब सहसरानी जो एक बहुत बड़े मशहूर आलिम और ज़ब्रदस्त मुक़र्रिर (तक़रीर करने वाला) थे। उनसे एक मरतबा कुछ लोगों ने पूछा हज़रत सुन्नी वहाबी की क्या पहचान है। मौलाना साहब ने एक बहुत बढ़िया और आसान क़ायदा बताया कि जब आप लोग किसी के बारे में मालूम करना चाहे कि वह सुन्नी है या वहाबी तो उसके सामने आला हज़रत शाह अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु का तज़किरा छेड़ दें और उसके चेहरे को बग़ौर देखिए अगर चेहरे पर .ख़ुशी के आसार दिखाई पड़े तो समझ लीजिए कि सुन्नी है और अगर चहरे पर कुदूरत दिखाई दे तो समझ लीजिए कि वहाबी है और अगर वहाबी नहीं जब भी उसमें किसी क़िस्म की बेदीनी ज़रूर है।

आला हज़रत के वहबी (बख़शे हुए) उलूम

आला हज़रत ने बहुत से मुर्दा .फ़ुनून जैसे इल्में जफ़र (एक इल्म है जिससे बाज़ छुपी बातें मालूम की जाती हैं) तक़सीर (तावीज़ों के नक़्श भरने का इल्म), हैअत (Astronomy) और नुजूम (ज्योतिष) को नई ज़िन्दगी दी । इल्में तौक़ियत (चाँद,सूरज व सितारों के ज़रिये वक़्त पता करना) में नई–नई बातें बताईं । नीचे आ रहे वाक़यात से आला हज़रत के वहबी उलूम का अन्दाज़ा ख़ूब किया जा सकता है।

1- आठ साल की उम्र में किताब लिखना ।

आपने आठ बरस की उम्र में फ़न–ए– नौह की मशहूर किताब 'हिदायतन नौह' पढ़ी और .ख़ुदादाद इल्म के ज़ोर का यह आलम था कि इसी नन्ही सी उम्र में हिदायतन नौह की शरहें अरबी में लिख डाली।

2- अरबी में गुफ़्तगू

मौलवी इरफ़ान अली बीसलपुरी अलैहिर्रहमा का बयान है कि एक मरतबा हुज़ूर आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि मैं अपनी मस्जिद के सामने खड़ा था उस वक़्त मेरी उम्र साढ़े तीन साल की होगी । एक साहब अरबी लिबास पहने हुये तशरीफ़ लाये। देखने से मालूम होता था कि अरबी हैं। उन्होंने मुझ से अरबी .ज़ुबान में गुफ़्तगू फ़रमाई । मैंने फ़सीह अरबी में उन से गुफ़्तगू की फिर उन बुज़ुर्ग हस्ती को कभी न देखा।

3- कमाल की ज़हानत

नवाब वहीद ख़ाँ साहब बरेलवी बयान करते हैं कि मौलवी एहसान हुसैन साहब मरहूम जो बहुत नेक और दीनदार आदमी थे, जामा मस्जिद बरेली में ज़ोहर बाद ख़ास अल्लाह की रज़ा के लिये दर्स दिया करते थे और अपना ज़्यादातर वक़्त हदीस पढ़ने और वज़ाइफ़ में गुज़ारते थे। उन्होनें मुझे जामा मस्जिद में नमाज़ बजमाअत अदा करने की न सिर्फ़ तलक़ीन की बल्कि शौक़ दिलाया । चुनांचे अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैं जामा मस्जिद में नमाज़ पंजगाना अदा करने लगा। जब मैं अंग्रेज़ी स्कूल में छठे क्लास में था तो यही मौलवी एहसान हुसैन साहब फ़ारसी .ज़ुबान के लिए वहाँ मुक़र्रर किए गए। एक दिन मैंने मौलवी साहब से आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु के मुताल्लिक़ पूछा तो उन्होनें आला हज़रत के इल्म–ओ– फ़ज़ल की बहुत तारीफ़ की और

फ़रमाया कि अरबी की इबतिदाई तालीम में मैं आला हज़रत किबला का हम सबक़ (Class fellow) रहा हूँ। आला हज़रत की .खुदादाद ज़हानत का हाल यह था कि उस्ताद से कभी चौथाई किताब से ज़्यादा नहीं पढ़ी। किताब का एक चौथाई हिस्सा पढ़ लेने के बाद बाक़ी पूरी किताब .खुद पढ़ते और याद करके सुना दिया करते थे।

4– सर ज़ियाउददीन बारगाहे रज़वी में

जनाब मौलवी सैय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है कि कि कुसूरे आशारिया मुतावालिया में अग्रेज़ी दर्सगाहों के फ़ाज़िल तीसरी .कुव्वत (Power घतांक) से ज़्यादा का सवाल हल करने से मजबूर हैं और मुझे भी सिर्फ तीसरी .कुव्वत तक वक़्फ़ियत थी लेकिन हुज़ूर आला हज़रत फ़रमाया करते थे कि मुझे जिस .कुव्वत का सवाल दिया जाए बिऔनिही तआला उसी हल कर दूंगा।इसके बाद आला हज़रत ने मुझे और सययद शौकत अली को चन्द क़ायदे ऐंसे बता दिये जिनसे हम लोग भी हर .कुव्वत के सवाल हल करने लगे । एक मरतबा मौलाना सय्यद सुलेमान अशरफ़ बिहारी (प्रोफ़ेसर दीनियात अलीगढ़ कालेज़) ने आला हज़रत की ख़िदमत में ख़त लिखा कि :–

डाक्टर ज़ियाउददीन साहब इल्में रियाज़ी (A Sbject of maths.) में विलायत की तक़रीबन हर डिग्री तमग़ा हासिल कर चुके हैं। अर्से से हुज़ूर की मुलाक़ात के मुशताक़ हैं मगर वह चूँकि एक जैंन्टिल मैन अग्रेज़ी वज़ा क़ता के आदमी हैं इसलिए आपकी ख़िदमत में आते हुये झिझक महसूस करते हैं लेकिन मेरे कहने और अपने शौक़ की वजह से मिलने को आमादा हो चुके हैं लिहाज़ा वह पहुँचे तो उन्हें मौक़ा दें।

आला हज़रत ने उन्हें जवाब भेजा कि वह बिना तकल्लुफ़ आयें। चुनांचे दो चार रोज़ के बाद डा० ज़ियाउद्दीन साहब बरेली **पहुँच** कर आला हज़रत की बारगाह में हाज़िर हुए । उस वक़्त अस्र की नमाज़ **होने** जा रही थी । डा० साहब ने वुज़ू करते वक़्त अपने मोज़ों पर मसा **किया और** नमाज़ पढ़ने के वक़्त मोज़े उतार डाले तो आला हज़रत ने उनसे फिर **पैरों** को धुलवाया ।

नमाज़ के बाद गुफ़्तगू के दौरान आला हज़रत ने अपना एक **क़लमी** रिसाला जिसमें मुसल्लस (त्रिभुज) और दायरे की शक्लें बनी हुई थीं। डा. साहब के सामने पेश किया जिसको देखते ही डा० साहब हैरान हो गये और

बाले की मैंने इस इल्म को हासिल करने के लिये कई बार ग़ैर मुमालिक (विदेशों) के सफ़र किये मगर यह बाते कहीं भी हासिल न हुई। मैं तो अपने आप को एक तिफ़ले मकतब (Student) समझ रहा हूँ। मेहरबानी करके यह बतायें की इस फ़न में आपका उस्ताद कौन है। आला हज़रत ने इरशाद फ़रमाया इस फ़न में मेरा कोई उस्ताद नहीं, मैंने अपने वालिदे माजिद अलैहिर्रहमा से जमा (जोड), तफ़रीक़ (घटाना), ज़र्ब (गुणा), तक़सीम (भाग), के सिर्फ़ चार क़ायदे इसलिए सीखे थे कि तर्के के मसाइल में इसकी ज़ुरूरत पड़ती है। शरहे चग़मीनी शुरू की थी कि हज़रत वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि इसमें अपना वक़्त क्यूँ ख़र्च करते हो मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह से ये उलूम तो तुमको ख़ुद ही सिखा दिये जाएंगे। चुनांचे यह जो कुछ आप लोग देख रहे हैं मकान की चहारदीवारी में ख़ुद ही करता रहता हूँ। यह सब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का करम है। इसके बाद कुसूरे आशारिया मुतावालिया का ज़िक चल पड़ा। डा. साहब ने कहा कि बस तीसरी क़ुव्वत तक का सवाल हल किया जा सकता है। इस पर आला हज़रत ने सय्यद कनाअत अली और मेरी तरफ़ इशारा करके फ़रमाया किमैंने इन दोनों बच्चों को कुछ क़ायदे सिखा दिए हैं। आप इन्हें जिस क़ुव्वत (Power घतांक) का सवाल दे दें ये बच्चे हल कर सकते हैं इन्शा अल्लाह तआला। डा. साहब हैरत से दोनों बच्चों का मुहँ तकने लगे।

5-अमरीकी प्रोफ़ेसर अलबर्ट की हौलनाक पेशीनगोई

पटना के अंग्रेज़ी अख़बार में 23 मुहर्रम 1338 हिजरी मुताबिक़ 18 अक्तूबर 1919 को अमरीका के उक साइंसदाँ प्रोफ़ेसर अलबर्ट की जानिब से एक हौलनाक़ मज़मून शाय हुआ।

17 दिसम्बर 1919 को औतारिद, मिर्रीख़, ज़ोहरा, मुशतरी, ज़ोहल और नेपच्यून क़िरान में होंगे यानी मिले हुए होंगे और सूरज इन छः सितारों के मुक़ाबले में आता जायेगा और ये सितारे सूरज को अपनी क़ुव्वत से खीचेंगें। इन सितारों की मक़नातीसी (चुम्बकिए) लहरें सूरत में बड़े भाले की तरह सूराख़ कर देंगी। सूरज के इस दाग़ को 17 दिसम्बर को हर खासो आम अपनी आखों से देखेंगे प्रोफ़ेसर अलबर्ट ने यह भी बयान किया कि सूरज का वह दाग़ हवा में तज़ल्ज़ुल डालेगा। तूफ़ान बिजलियाँ सख़्त बारिश ओर बड़े ज़लज़ले होंगे। ज़मीन कई हफ़्तों में अपनी सही हालत में आएगी।

इस वहशतनाक पेशीनगोई के शाए होते ही लोगों में बचैनी फैल गई। दूसरी क़ौमो के साथ मुसलमान भी घबराए। शमसुलहुदा कालेज के प्रिन्सीपल मौलाना सय्यद ज़फ़रउद्दीन साहब बिहारी ने अलबर्ट की पेशीनगोई की आला हज़रत को इत्तेला दी । आला हज़रत की जानिब से इन मज़मून का ऐलान शाय हुआ कि मुसलमानों अपने आमाल के सबब अपने रब से डरो 17 दिसम्बर की बे असल बेहूदा पेशनगोई का ख़ौफ़ मत करो। अलबर्ट की पेशीनगोई बिल्कुल झूठ है। तुम लोगो को इसकी तरफ़ तवज्जो करना हरगिज़ लाएक़ नहीं। अलबर्ट ने अपनी पेशीनगोई की बुनयाद कवाकिब (सय्यारे, ग्रह) के तूले वस्ती पर रखी है (नोट देखें) जिसे हैअत जदीदा (Latest Astronomy) में तूल बफ़र्ज़े मर्कज़ियत शम्स कहते हैं { कहने का मतलब यह है कि आधुनिक एस्ट्रानामी में सूरज को केन्द्र व स्थिर मानकर ज़मीन का घूमना माना है और यह सिध्धांत ही ग़लत है } इसमें वो छः कवाकिब एक दूसरे से 26 डिग्री 23 मिनट की दूरी पर होंगे मगर यह फ़र्ज़ करना ख़ुद ही ग़लत है और .क़ुरआन मजीद के इरशादात से मरदूद है। न शम्स मरकज़ (केन्द्र) है न कवाकिब उसके गिर्द हरकत में बल्कि ज़मीन का मरकज़े सिक़्ल (Centre of Mass) तमाम आलम का मरकज़ है और सब कवाकिब और .ख़ुद शम्स उसके गिर्द घूम रहे हैं। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :–

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ

सूरज और चाँद की चाल
हिसाब से है

और फ़रमाता है :–

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

सूरज चलता है अपने एक ठहराव
के लिए यह हुक्म है ज़बरदस्त
इल्म वाले का

और फ़रमाता है :–

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ

चाँद और सूरज सब एक घेरे में
तैर रहे हैं

और फ़रमाता है :–

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ

अल्लाह ने सूरज और चाँद तुम्हारे लिए
मुसख़्ख़र किए कि दोनों बाक़ायदा चल
रहे हैं

ये जिसे तूल बफ़र्ज़े मर्कज़ियत शम्स कहते हैं हक़ीक़तन कवाकिब के औसाते मुअद्दला बतादीले अव्वल हैं (नोट देखें) जैसा कि वाक़िफ़ इल्मे ज़ीजात (A Subject of Astronomy). पर वाज़ेह है और औसात कवाकिब के हक़ीक़ी मक़ाम नहीं होते बल्कि फ़र्ज़ी। और ऐतबार हक़ीक़ी का है।

17 दिसम्बर 1919 को कवाकिब के हक़ीक़ी मक़ामात ये होंगे :–

तक़वीम

कवाकिब	बुर्ज	दर्जा(डिग्री)	दक़ीक़(मिनट)
नेपच्यून	असद(सिहं)	11	15
मुशतरी(ब्रहस्पत)	असद	17	54
ज़ोहल(सनीचर)	सुम्बुला(कन्या)	11	39
मिर्रीख़(मंगल)	मीज़ान	9	10
ज़ोहरा(शुक)	अक़रब(वृश्चिक)	9	19
ओतारिद(बुद्ध)	क़ौस(धनू)	3	30
शम्स(सूरज)	क़ौस	24	30
यूरेनस	दलौ(कुंभ)	28	26

ज़ाहिर है कि उनका बाहमी फ़ासला (एक दूसरे से दूरी) 26 दर्जे में महदूद नहीं बल्कि 112 दर्जे तक है। 17 दिसम्बर को तमाम हिन्दुस्तान में रेलवे वक़्त के मुताबिक़ साढ़े पाँच बजे शाम और न्यूयार्क व यू. एस. ए. के दूसरे हिस्सों मे सात बजे सुबह और लन्दन में दोपहर के बारह बजे होगी। ये फ़ासला उनकी तक़वीमात का है। (नोट देखें) बाहमी बुअद (एक दूसरे से दूरी) उनसे थोड़ा मुख़्तलिफ़ होगा कि अर्ज़ (नोट देखें) की क़ौसें (Curve वक) छोटी बड़ी हैं उसके इस्तिख़राज (Calculation) की हाजत नहीं कि कहाँ 26 कहाँ 112।

यहाँ तक सारी बहस तो इसलामी उसूल पर थी जिसका ज़्यादा हिस्सा .क़ुरआन के फ़रमान के मुताबिक़। इस वक़्त तक मुख़ालफ़ीन मैं से किसी साहब की हिम्मत न पड़ी कि इस मसअले को .क़ुरआनी आयात से हल करता कि मुसलमानों की बेचैनी न बढ़े और अक़ाइद में तज़लज़ुल न

आये। जबकि करोड़ों मुसलमानों ने ये आयाते .कुरआनी पढ़ी होंगी बल्कि एस्ट्रानामी की किताबें भी पढ़ी होंगी। यह कहिए कि उन्हें अपने इल्म पर एतमाद न था और यह डर था कि वह जवाब न दे सकेंगे। ऐसे आड़े वक़्त में हिन्दुस्तान से एक आवाज़ उठी और इस शान से कि उसने पहले .कुरआनी आयात से मुसलमानों के अक़ाइद की हिफ़ाज़त की फिर उन्हीं की साइंस से रद्द करके मुसलमानों की बेचैनी दूर की और फिर इस रद्द को उर्दू व अंग्रेज़ी अख़बारों में शाय करा दिया। मुजद्दिद की यही शान होनी चाहिये।

इसके बाद आला हज़रत फ़रमाते हैं यह कलाम इसलाभी उसूल पर था अब कुछ अक़ली दलाएल भी लीजिए यह कहना कि दो हज़ार बरस से ऐसा इज्तेमा (यानी सितारों वग़ैरह का इस तरह इकट्ठा होना) न देखा गया बल्कि जब से कवाकिब का इतिहास है तब से अब तक न हुआ महज़ झूट है और बेकार है। मुद्दई इस पर दलील रखता है तो पेश करे बल्कि साबित करे कि दो हज़ार बरस के सारे इजतिमें उसने देखे और यह दावा झूटा तो दावा बे दलील बातिल। यूरेनस और नेपच्यून तो अब ज़ाहिर हुए अगली ज़ीजात में उनका पता कहाँ मगर यह कि औसात मौजूद से बतरीक़े तफ़रीक़ (घटाने से) उनके हज़ारों बरस के औसात निकाले हों और दावा महज़ दावा ही है।

क्या इन सब कवाकिब ने आपस में सुलह करके आफ़ताब को तकलीफ़ पहुँचाने का फ़ैसला कर लिया है, यह तो बातिल महज़ है। बल्कि जाज़बियत (Attraction) अगर सही है तो इसका असर सब पर है और क़रीब तर पर क़वी तर और ज़ईफ़ तर पर शदीद तर। यानी जाज़बियत क़रीब और कमज़ोर पर ज़्यादा होगी। 17 दिसम्बर 1919 को औसात कवाकिब का नक्शा यूँ है।

कवाकिब	वस्त	
	दर्जा	दक़ीक़ी
मुशतरी	129	20
नेपच्यून	129	53
ज़ोहरा	142	42
ओतारिद	153	50
मिरीख़	154	17
ज़ोहल	155	43
यूरेनस	230	57

ज़ाहिर है आफ़ताब इन सबसे हज़ारों गुना बड़ा है। जबकि इतने बड़े पर छः सितारों की खींच तान और उनका मुहँ ज़ख़्मी करने में कामयाब होगी तो ज़ोहल कि आफ़ताब से निहायत सग़ीर (छोटा) और हक़ीर है। पाँच सितारों की कशाकश और इधर से यूरेनस की मारा मार यक़ीनन उसको फ़ना कर देने के लिए काफ़ी होगी और उसके ऐतबार से उनका फ़ासला भी और तंग सिर्फ़ 25 दर्ज़ा।

मिर्रीख़ ज़ोहल से बहुत छोटा है और उसके लिहाज़ से फ़ासला और भी कम है यानी फ़क़त साढ़े चौबीस दर्जे तो यह चार ही मिलकर उसे पाश पाश कर देंगे।

ओतारिद सब में छोटा है और उसके हिसाब से बाक़ी 13 ही दर्जे के फ़ासले में है और यह दर्जा तो 26 का आधा है तो ये तीन अज़ीम हाथी मय यूरेनस इस छोटी सी चिड़िया को रेज़ा रेज़ा कर देने को बहुत हैं। अलबर्ट के मज़मून में कहा गया है कि दो सितारे मिले हुए काफ़ी हैं एक छोटा दाग़ शम्स में पैदा करने और छोटा तूफ़ान बरपा करने में और तीन उनमें से बड़ा दाग़। जब आफ़ताब में तीन और चार का यह अमल है तो बेचारे ओतारिद और मिर्रीख़ चार और पाँच के आगे क्या हक़ीक़त रखते हैं।

ज़ोहल पर तो इकट्ठे छः जमा हैं तो जो निसबत उनको आफ़ताब से है उस निसबत से उन पर असर ज़्यादा होना लाज़िम। होना यह था कि खीचने वाले से चिमट जांए लेकिन उनमें नाफ़रियत (Repulsion) भी रखी है। वह तमर्रूद (विपरीत दिशा में भागना) पर लाये जिसका साफ़ नतीजा रेज़ा रेज़ा होकर जवाज़िब (-खीचने वाली चीज़ें) में गुम हो जाना। जैसा कि मशहूर है कि कमज़ोर चीज़ क़वी तर से खीची जाएगी और दूसरी तरफ़ उसका ताअल्लुक़ ज़ईफ़ है, खिंच आयेगी वरना टुकड़े टुकड़े हो जायेंगी। यह सब अगर न होगा तो क्यूँ हांलाकि आफ़ताब पर ज़र्बे शदीद असर का तक़ाज़ा यही है और ऐसा होगा तो ग़नीमत आफ़ताब की जान छूटी वो आपस में कट मर कर फ़ना होंगे न आफ़ताब कि उस तरफ़ छः रहेंगे न उस पर ज़ख़्म आयेगा।

हासिल गुफ़्तगू यह है कि अलबर्ट की पेशीनगोई महज़ बातिल है। ग़ैब का इल्म अल्लाह तआला को है फिर उसकी अता से उसके हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को। अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला अपनी ख़ल्क़

में जो चाहे और जब चाहे करे। अगर इत्तेफ़ाक़न मशीयते इलाही से मआज़ अल्लाह इनमें से बाज़ या फ़र्ज़ कीजिए सब बातें वाक़ेअ हो भी जायें जब भी पेशीनगोई क़तअन यक़ीनन झूटी है कि वह जिन सिध्धांतों पर है वह सिध्धंत ही महज़ बेअसल मनगढ़ंत हैं जिनका बेकार व बेअसर होना .खुद उसी इजतिमा (यानी सितारों का इकट्ठा होना) ने रौशन कर दिया। अगर जाज़बियत सही है तो यह इजतिमा नहीं होना चाहिए और अगर इजतिमा क़ायम है तो जाज़बियत का असर ग़लत है।

जाज़बियत पर एक सहल सवाल सूरज के औजो हज़ीज़ शम्स (यानी सूरज का ज़मीन से कभी बहुत दूर कभी क़रीब होना) से होता है जो हर साल देखा जा सकता है चूंकि नई रिसर्च के मुताबिक़ औसत दूरी नौ करोड़ इकत्तीस लाख मील बताया गया है और हमने हिसाब किया दोनो केन्द्रों के बीच की दूरी 2 डिग्री 45 सेकेण्डस है यानी 2.05213 है तो बोदे अबअद सूरज और ज़मीन के बीच की अधिकतम दूरी) 94458026 मील हुआ और बोदे अकरब (·सूरज और ज़मीन के बीच की न्यूनतम दूरी) 91341974 मील है। ये दूरी 3 जुलाई को अधिकतम और 3 जनवरी को न्यूनतम होती है। इसलिए 94458026--91341974=3116052=अगर ज़मीन आफ़ताब के गिर्द अपने मदार बैज़ी (Eliptical Orbit) पर घूमती है जिसके फ़ोकज़े असासिया (Focii) में आफ़ताब है जैसा कि आज एस्ट्रानामी का कहना है (a) नाफ़रियत अर्ज़ (Repulsion of Earth) को जाज़बियत शम्स (Attraction pf Sun) से क्या निसबत कि एस्ट्रानामी के मुताबिक़ सूरज 1246130 ज़मीनों के बराबर है और हमने हिसाब किया तो इससे भी ज़्यादा आया यानी 1313256 ज़मीनो के बराबर है तो वह जिस्म (Body) कि उसकी बारह तेरह लाख जिस्मों में से एक के बराबर भी नहीं तो उसकी क्या बराबरी कर सकता है। यह घूमना होना नहीं चाहिए था बल्कि पहले ही दिन खिंच कर उसमें मिल जाता। क्या बारह तेरह लाख आदमी एक को खीचे तो वह खिंच न सकेगा बल्कि उसके गिर्द घूमेगा। (b) जब आधे चक्कर में यानी तीन जुलाई से तीन जनवरी तक जाज़बियते शम्स ग़ालिब आकर इकत्तीस लाख मील से ज़्यादा ज़मीन को क़रीब खीच लाई तो बाक़ी आधे चक्कर में उसे किसने कमज़ोर कर दिया कि ज़मीन फिर इकत्तीस लाख मील से ज़्यादा दूर भाग गई। होना यह चाहिए था कि क़रीब आकर जाज़बियत और बढ़ जाती

और ज़मीन सूरज के क़रीब होती जाती नाकि क़रीब आकर उसकी .कुव्वत सुस्त पड़े और ज़मीन उससे छूट कर फिर उतनी ही दूर पहुँच जाए। शायद जुलाई से जनवरी तक सूरज को खाना ज़्यादा मिलता है और .कुव्वत तेज़ होती है और जनवरी से जुलाई वक भूका रहता है, कमज़ोर पड़ जाता है। दोनों जिस्म (Body) बराबर के होते तो शायद कुछ सही लगता कि छः माह यह ग़ालिब रहा और छः माह वह। वह सूरज कि ज़मीन से बारह लाख गुना से ज़्यादा बड़ा है। उसे खीच कर इकत्तीस लाख मील से ज़्यादा क़रीब करें और फिर ऐने शबाबे जज़्ब (Attraction) के असर के वक़्त सुस्त पड़ जाये। इधर

एक उधर बारह लाख से ज़्यादा क्या बराबरी हो सकती है। (c) ख़ास उनमें नुक़्तों का तअय्युन और हर साल उन्हीं ग़लबा व मग़लूबियत की क्या वजह है (यानी उन्हीं बिन्दुओं पर बार बार लौटना कभी Attraction कभी Repulsion के क्या मायनी हैं)। इसलामी उसूल के मुताबिक ज़मीन रूकी हुई है और सूरज एक ऐसे दायरे मैं घूम रहा है कि जिसका मरकज (Centre) मरकज़े आलम (यानी तमाम आलम का केद्र) से 3116052 मील हटा हुआ है। अगर मरकज़ एक होते तो ज़मीन से सूरज हमेशा एक दूरी पर रहता। मगर केन्द्र अलग होने की वजह से जब सूरज S_1 पर होगा तो ज़मीन से उसका फ़ासला C_2 S_1 होगा और जब S_2 पर होगा तो उसका फ़ासला $C_2 S_2$ (चित्र देखें)

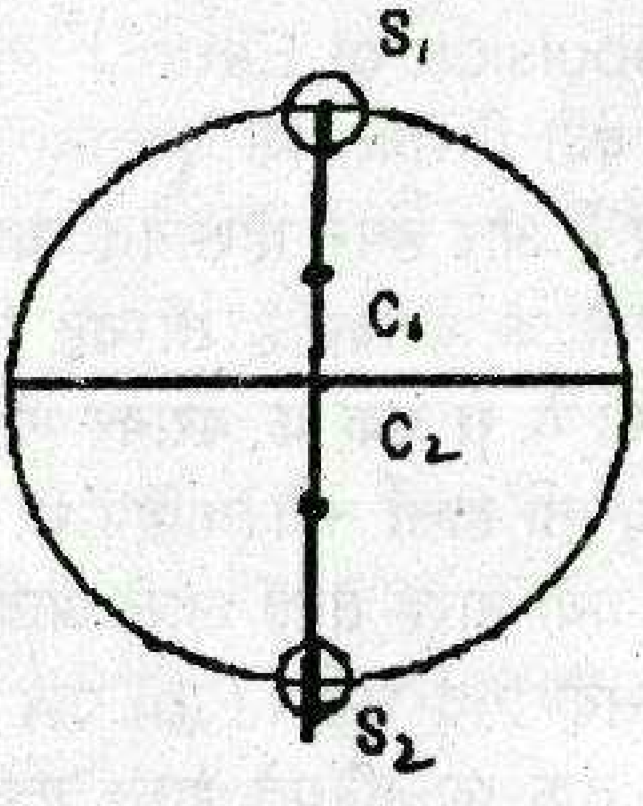

C_1	सूरज के दायरे (Orbit)केन्द्र
$\bar{C}_2$	आलम की केन्द

नोट १ :- आफ़ताब को मरकज़ और ठहरा हुआ मानकर ज़मीन को उसके गिर्द घूमता हुआ मानना आयाते .कुरआनी के ख़िलाफ़ है। पुराने यूनानी सांइसदाँ इस बात के क़ायल थे कि ज़मीन मरकज़ और आफ़ताब उसके गिर्द घूम रहा है लेकिन वह इस तरह कि सूरज .खुद नहीं बल्कि आसमान घूम रहा है और उसके ताबेअ होकर सूरज भी । यह भी .कुरआन के ख़िलाफ़ है। क़ुरआन के मुताबिक़ आफ़ताब आसमान में अल्लाह के क़ायम किए हुए दायरे (Orbit) में घूम रहा है जैसे दरिया में मछली तैरती है।

नोट २ :- यहाँ इस वाक़ये में हमने समझाने की एक कोशिश की है मगर शायद अब भी बाज़ लोगों को बात समझ न आएगी। उसकी वजह यह है कि इसमें उर्दू के अलफ़ाज़ ज़्यादा हैं और दूसरी वजह यह कि इसको समझने के लिए एस्ट्रानामी से वक़फ़ीयत .ज़ुरूरी है। एस्ट्रानामी से वाक़िफ़ कराना तो यहाँ मुमकिन नहीं, इसके लिए आप इस फ़न के जानकार से मिलें हाँ उर्दू के मायनी कुछ तो हमने ब्रेकिट में दे दिए हैं और कुछ इस नोट में समझाने की कोशिश कर रहे है जो कि शायद चित्र बनाने से समझ में आ जाए।

चित्र में C_1 सूरज के Orbit का केन्द्र माना है और C_2 तमाम आसमान का केन्द्र माना है जब सूरज S पर आता है उसे और C_1 से S' को मिलाया और C_2 से S' को मिलाते हुए एक रेखा C_1 A खीची और एक दूसरी रेखा C_1 S' के समानान्तर C_2B खीची। अब यहाँ SB को तूल, वस्त या नसी कहते हैं। SA को तक़वीम और AB को तादील कहते है।

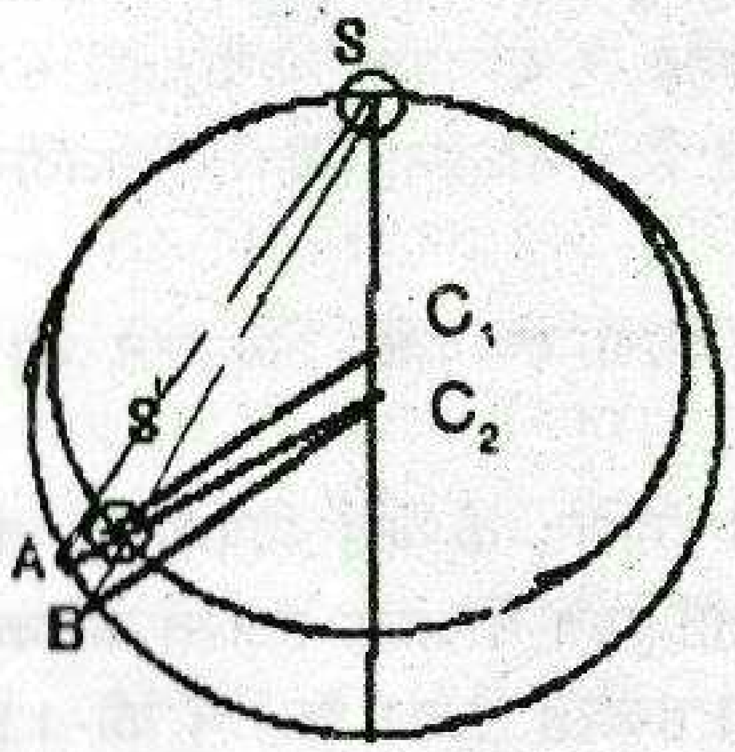

अब इन नोट और मायनी से बार बार पढ़कर इस वाक़ये को समझाने की कोशिश करें उम्मीद है इन्शा अल्लाह तआला समझ आयेगा

लिहाज़ा आला हज़रत मुजद्दिद दीनो मिल्लत ने .कुरआन, साइंस और एस्ट्रानामी से यह साबित कर दिया कि अलबर्ट की पेशीनगोई भी झूटी और उसका सिध्धांत भी झूटा और अलहम्दुलिल्लाह 19 दिसम्बर 1919 का दिन बग़ैर किसी नुक़सान यानी तूफ़ान ज़लज़ला और सूरज में छेद होने के साथ ख़ैरियत के गुज़र गया।

6– आला हज़रत का फ़न्ने तकसीर (नक़्श भरने का फ़न)

हज़रात मशाइख़–ए–किराम में बीस फ़ीसदी ऐसे हैं जो नक़्श मुसल्लस (त्रिभुज की तरह के नक़्श) या मुरब्बा (सोलह ख़ाने वाले वर्गाकार नक़्श) मशहूर क़ायदे से भरना जानते हैं लेकिन पूरी चाल से नुकूश को भरना शायद चार पाँच सौ में से दो चार ही हज़रात जानते होंगें। आला हज़रत के शागिर्द हज़रत मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन साहब बिहारी अलैहिर्रहमा को एक शाह साहब मिले जिनका ख़्याल था कि फ़न्ने तकसीर का इल्म सिर्फ़ मुझको है। दौराने गुफ़्तगू मौलाना बिहारी ने उन से दरयाफ़्त किया कि जनाब नक़्श मुरब्बा कितने तरीक़े से भरते हैं । शाह साहब ने फ़ख्र से क़हा सोलह तरीक़े से । फिर उन्होने मौलाना बिहारी से पूछा आप कितने तरीक़े से भरते हैं मौलाना ने जवाब दिया कि अल्हम्दुलिल्लाह मैं ग्यारह सौ बावन तरीक़े से भरता हूँ। शाह साहब बड़े हैरान हुए और पूछा आपने फ़न्ने तकसीर किस से सीखा। आपने फ़रमाया हुज़ूर पुरनूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा (रदियल्ला तआला अन्हु) से । शाह साहब ने दरयाफ़्त किया और आला हज़रत नक़्श मरब्बा कितने तरीक़े से भरते हैं । मौलाना बिहारी ने जवाब दिया दो हज़ार तीन सौ तरीक से ।

7–इल्में तौक़ियत (नमाज़ वग़ैरा के वक़्त निकालने का इल्म) में आला हज़रत का कमाल

इल्में रियाज़ी (गणित के कई विषय), हैअत और नुजूम में कमाल के साथ–साथ इल्में तौक़ियत में आला हज़रत को कमाल हासिल था। लेकिन नई–नई इजाद आला हज़रत ने इस फ़न में की । इस फ़न में किसी आलिम की कोई मुस्तक़िल किताब नहीं हैं। जब हुज्जतुल इसलाम मौलाना

हामिद रज़ा बरेलवी , मौलाना सय्यद .गुलाम मुहम्मद बिहारी , मौलाना सय्यद अज़ीज़ ग़ौस बरेलवी और मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी वग़ैरा ने आला हज़रत से फ़न्ने तौक़ियत हासिल करना शरू किया तो इस फ़न में कोई किताब न होने की वजह से आला हज़रत इसके क़ायदे ज़बानी इरशाद फ़रमाते और यह हज़रात उन्हें लिख लेते और इन्हीं क़वाएद के मुताबिक़ निस्फ़ुन्नहार (वह वक़्त जब सूरज ठीक ऊपर होता है यानी इसके बाद ज़ोहर का वक़्त शुरू होतां है), तुलू (जब सूरज निकलता है), ग़ुरूब (जब सूरज डूबता है), सुबह सादिक़ (जब फ़ज्र का वक़्त शुरू होता है) ज़ोहवए कुबरा(जब चाशत का वक़्त ख़त्म होता है वग़ैरा) ईशा और अस्र के औक़ात निकालते। मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी ने आला हज़रत के इन बताए हुए क़वाएद को एक किताब में जमा किया और कुछ अपनी तरफ़ से इज़ाफ़ा करके एक किताब भी शाए की। फ़न्ने तौक़ियत में आला हज़रत के कमाल, का यह आलम था कि सूरज आज कब निकलेगा, कब डूबेगा इसे बिना तकल्लुफ़ मालूम कर लेते थे सितारों की मारफ़त और उनकी चाल पर इस क़द्र उबूर था कि रात मे तारा और दिन में सूरज को देखकर घड़ी मिलाया करते थे। और वक़्त बिल्कुल सही होता था। और एक मिनट का भी फ़र्क़ नहीं होता। मौलवी बरकात अहमद पीलीभीती का बयान है। कि एक मरतबा आला हज़रत बदायूँ तशरीफ़ ले गए। हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर बदाँयूनी रहमतुल्लाह अलैह के मेहमान थे। मदरसा क़ादिरिया मस्जिद .खुरमा में .खुद हज़रत बदाँयूनी नमाज़ पढ़ाते थे। जब फ़ज्र की तकबीर शुरू हुई तो हज़रत मौलाना बदाँयूनी ने आला हज़रत को नमाज़ के लिए बढ़ा दिया। आला हज़रत ने नमाज़ में किराअत इतनी लम्बी की कि हज़रत मौलाना बदायूँनी को शक हुआ कि सूरज तो नहीं निकल आया। दूसरे लोग मस्जिद से निकलकर पूरब की तरफ़ देखने लगे। आला हज़रत ने फ़रमाया कि सूरज निकलने में अभी तीन मिनट अड़तालिस सेकेण्ड्स बाकी हैं। यह सुनकर लोग ख़ामोश हो गए।

8- वाइस चांसलर अलीगढ़ यूनीवर्सिटी का जर्मनी का सफ़र मनसूख

मौलाना मुहम्मद हुसैन साहब मेरठी बयान करते हैं कि मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर जिन्होंने हिन्दुस्तान के अलावा यूरोप के देशों में तालीम पाई। रियाज़ी में कमाल हासिल था और हिन्दुस्तान में काफ़ी शोहरत रखते थे। इत्तेफ़ाक़ से रियाज़ी का एक मसअला उलझ गया जो हल

न होता था। चूंकि इल्म का शौक़ रखते थे और हैसियत वाले थे। इसलिए यह फ़ैसला किया कि इस मसअले का जर्मन जाकर हल करेंगे। उन्होंने इस बात का ज़िक्र हज़रत मौलाना सय्यद सुलेमान अशरफ़ साहब बिहारी (जो कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ही में दीनयात के प्रोफ़ेसर थे) से किया। मौलाना ने मशवरा दिया कि आप बरेली जाकर इस मसअले को आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा से दरयाफ़्त कीजिए इन्शाअल्लाह तआला वह .ज़ुरूर हल कर देगें वाइस चांसलर साहब ने कहा मौलाना यह क्या फ़रमा रहे हैं, मैं कहाँ–कहाँ तालीम हासिल करके आया हूँ। और हल न कर सका। और आप उन साहब का नाम लेते हैं जिन्होने ग़ैर मुमालिक(विदेश) तो दूर की बात कभी अपने शहर के कालेज में भी नहीं पढ़ा। भला वह क्या हल कर सकते हैं । दो चार रोज़ के बाद मौलाना सय्यद सुलेमान अशरफ़ साहब ने उनको देखकर दोबारा फिर यही मशवरा दिया लेकिन वाइस चांसलर साहब ने कहा वह क्या हल कर पाएंगे। और जर्मन जाने की तैयारी शुरू कर दी। मौलाना साहब ने जब तीसरी बार कहा तो वह ग़ुस्से में भरकर बोले मौलाना अक़्ल भी कोई चीज़ है। आप मुझे कैसी राय दे रहें हैं। इस पर मौलाना साहब ने फ़रमाया आख़िर इसमें हर्ज ही क्या है ? इतने बड़े सफ़र के मुक़ाबले बरेली जाना कोई चीज़ नहीं। अलीगढ़ से सीधी गाड़ी जाती हैं चन्द घन्टे का सफ़र है। आप वहाँ हो तो आईए फिर बात उनकी कुछ समझ में आई। चुनांचे दोनों मारहरा शरीफ़ पहुँचे और वहाँ से आला हज़रत के पीरज़ादे सय्यद मेंहदी हसन साहब सज्जादा नशीन को लेकर बरेली शरीफ़ आला हज़रत के दौलत ख़ाने पर पहुँचे और अन्दर इत्तेला भेजी । इन दिनों आला हज़रत की तबीयत नासाज़ थी। इसलिए सय्यद मेंहदी हसन साहब क़िबला ने कहला भेजा कि आपको देखने आया हूँ फ़ौरन परदा कराया गया। और यह तीनों हज़रात आला हज़रत के पास पहुँचे। बादे सलाम कलाम के आप ने आने की ग़र्ज़ पूछी। वाइस चांसलर साहब ने बताया कि मैं रियाज़ी का एक मसअला पूछने आया हूँ। आला हज़रत ने फ़रमाया पूछिए । वाइस चांसलर साहब ने फ़रमाया वह ऐसी बात नहीं जिसे मैं इतनी जल्दी अर्ज़ कर दूँ । आला हज़रत ने फ़रमाया आख़िर कुछ तो फ़माइए । ग़र्ज़ वाइस चांसलर साहब ने सवाल पेश कर दिया । आला हज़रत ने सुनते ही फ़रमाया इसका जवाब यह है। यह सुनते ही उनको हैरत हो गई गोया आँख से परदा उठ गया। बे इख़्तेयार बोल उठे कि मैं सुना करता

था कि इल्म–ए– लदुन्नी (वह इल्म जो बगैर किसी से सीखे अल्लाह तआला की तरफ से अता हो) भी कोई चीज़ है। आज आँख से देख लिया मैं तो इस मसअले के हल के लिये जर्मनी जाना चाहता था कि हमारे प्रोफ़ेसर साहब जनाब सय्यद सुलेमान अशरफ़ साहब ने मेरी रहबरी फरमाई मुझे जवाब सुनकर तो ऐसा मालूम हो रहा है गोया जनाब इस मसअले को किताब से देख रहे थे। सुनते ही फ़िलबदीह (फ़ौरन) तसल्ली बख़्श जवाब दिया फिर वाइस चांसलर साहब बहुत ख़ुश–ख़ुश अलीगढ़ वापस पहुँचे ।

मौलाना सय्यद ज़फ़र उद्दीन बिहारी रहमतुल्लाह अलैह इस वाकये को अपनी किताब "हयाते आला हज़रत " में लिखने के बाद फ़रमाते हैं यह वाकया सुनकर मुझे बहुत ताअज्जुब हुआ और मैं शक में रहा । इत्तेफ़ाक़ से मैं 1929 में शिमला गया। उस ज़माने में वह वाइस चांसलर साहब वहाँ आये हुए थे। मैं उन से इस वाक़ये की तहक़ीक़ के लिये मिला। और उन से पूछा कि मुझे यह ख़बर मिली है कि आप रियाज़ी का कोई मसअला मालूम करने आला हज़रत की ख़िदमत में बरेली तशरीफ़ ले गए थे। आप ने आला हज़रत को कैसा पाया ? उन्होंने कहा बहुत ही ख़लीक़ (मुरव्वत वाला) मुनकसिरुल मिजाज़ (मिज़ाज़ में इन्केसारी) और रियाज़ी बहुत अच्छी जानते थे। बावजूद इसके कि किसी से पढ़ा नहीं । उनको इल्में लदुन्नी था। मेरा सवाल जो बहुत मुश्किल और हल होने में नहीं आता था। ऐसा फ़िलबदीह (फ़ौरन) जवाब दिया गोया इस मसअले पर अरसे से रिसर्च किया हो। अब हिन्दुस्तान में इस इल्म का कोई जानने वाला नहीं है। जब वाइस चांसलर साहब की ज़ुबानी ख़ुद सुन लिया तो मेरा यक़ीन पूरा हो गया और यह भी मालूम हुआ कि बरेली से वापस होने पर वाइस चांसलर साहब ने दाढ़ी रख ली और नमाज़ के पाबन्द हो गये।

9– मतन की तहक़ीक़

आला हज़रत अपने तालिब–ए– इल्मी के ज़माने में एक दिन उसूल फ़िक़ह की मशहूर किताब "मुसल्लमुस्सुबूत" पढ़ रहे थे कि अपने वालिद–ए–माजिद मौलाना नक़ी अली ख़ाँ अलैहिर्रहमा का तहरीर किया हुआ ऐतराज़ व जवाब नज़र से गुज़रा।आपने इस किताब के हाशिए पर अपना एक मज़मून तहरीर फरमाया जिसमें मतन की ऐसी तहक़ीक़ फ़रमाई कि सिरे से ऐतराज़ ही ख़त्म हो गया। फिर जब पढ़ने के लिए हज़रत वालिद–ए– माजिद

की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो हज़रत मौलाना की निगाह आला हज़रत के हाशिए पर पड़ी । देखकर उनको इतनी ख़ुशी हुई। कि उठकर सीने से लगा लिया। और फ़रमाया कि अहमद रज़ा तुम मुझ से पढ़ते नहीं बल्कि पढ़ाते हो।

10– बिसमिल्लाह की बे पर तक़रीर

एक मर्तबा 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ के अज़ीमुश्शान जलसे में आला हज़रत ने सिर्फ़ बिस्मिल्लाह के बा–ए– जार्राह (यानी बिस्मिल्लाह के बे के नुक़्ते पर) और बिस्मिल्लाह पर मुसल्सल कई घन्टे ऐसी तक़रीर फ़रमाई जिससे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जूद –ओ– नवाल (बख़्शिश व अता), जाह –ओ– जलाल (रोब –ओ– दबदबा) और हुस्नों जमाल के दरिया उमडने लगे। आपने इन्ही दो लफ़्ज़ों बा –ए– जार्राह और इसमुल्लाह के ख़ालिस इल्मी रविश पर फज़ाइल –ए– रसूल सल्लललाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ ऐसी–ऐसी बातें बयान फ़रमाईं जिनको अहले इल्म भी न जानते थे। मौलाना सय्यद जफ़र उद्दीन बिहारी., प्रिन्सीपल शम्सुल हुदा कालेज बिहार, ने आला हज़रत की यह तक़रीर अपनी किताब हयाते आला हज़रत में दर्ज कर दी है। जो चौदह सफ़ात पर फैली हुई है और जिसका मुताएला बेहद ज़रूरी और दिलचस्प है।

10– वद्दुहा की तफ़सीर

एक मरतबा आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर बदायूँनी अलैहिर्रहमा के उर्स में बदायूँ तशरीफ़ ले गये। और आपने सिर्फ सूरए वद्दुहा पर नौ बजे से तीन बजे तक मुसलसल 6 घन्टे तक़रीर फ़रमाई जोकि इल्मी तहकीकी तक़रीर थी आज कल के मुक़र्रिर की तरह लफ़्ज़ों की भरमार और लच्छेदार क़िस्से कहानी नहीं थीं फिर इस मजलिस –ए– उर्स में आला हज़रत ने यह भी फ़रमाया कि सूरए वद्दुहा की चन्द आयतों की तफ़सीर में 80 जुज़ तक लिखकर छोड़ दिया इतना वक़्त कहाँ से लाऊँ के पूरे .क़ुआन शरीफ़ की तफ़सीर लिख सकूँ।

हक़ीक़त यह है कि दीन के मुजद्दिद के लिये .क़ुआन व हदीस के उलूम की जिस क़द्र ज़रूरत होती है, उससे कहीं ज़्यादा अल्लाह व रसूल ने आला हज़रत को .क़ुआन व हदीस पर उबूर दिया था । आला हज़रत का इल्मी पाया इतना बलंद है कि जलील –ओ– क़द्र उल्मा फ़रमाते थे कि गुज़श्ता दो सदी (1200 हिजरी व 1300 हिजरी) के अन्दर कोई ऐसा

जैसा आलिम नज़र नहीं आया। मुवाफ़िक़ का तो कहना ही क्या ख़ुद मुख़ालिफ़ भी आला हज़रत का लोहा तसलीम करते हैं । हज़रत शेर बेशए अहले सुन्नत मुनाज़िरे इसलाम मौलाना हशमत अली ख़ाँ लखनवी रदियल्लाहु तआला अन्हु पर एक ऐसा ज़माना भी गुज़रा है कि आप वहाबियों के पेशवाओं मौ. अशरफ अली थानवी .मौ. अब्दुल शकूर काकोरवी वग़ैरह के मोतक़िद थे और मदरसा .फ़ुरकानिया लखनऊ में उल्माए वहाबियो से तालीम हासिल कर रहे थे । इसी ज़माने का वाक़या बयान करते हुये आप लिखते हैं ।

आला हज़रत की तदकीक़ात फ़िक़्ही (फ़िक़्ह में बारीक बात निकालना) व तहक़ीक़ात –ए–ॱ हदीसया इस बलंद पाए की थी । कि मैंने ख़ुद देखा कि मेरे वहाबी उस्तादो के सामने जब फ़िक़्ह का कोई मुश्किल मसअला आ जाता तो हुज़ूर पुरनूर आला हज़रत रदिल्लाहु तआला अन्हु के रिसाले को देखते और उससे मदद लेते।मेरी बदनसीबी कि मैं उस वक़्त देवबन्दी वहाबियों में रहकर वहाबी गुरू घन्टालो रशीद अहमद गंगोही क़ासिम नानूतवी, ख़लील अहमद अम्बेठी, अशरफ़ अली थानवी का मोतक़िद हो गया था। और हुज़ूर आला हज़रत की इज़्ज़त मेरे दिल में बिल्कुल नहीं थी मुझे मेरे ख़बीस वहाबी उस्तादों ने यह बात ज़हन में बिठा दी थी कि यह चारों गंगोही, नानूतवी, अम्बेठी और थानवी पेशवा इसलाम हैं। और हुज़ूर आला हज़रत सिर्फ़ बुग़्ज़ ओ– हसद में इन चारों और इनके मुरीदीन और मोतक़दिन को काफ़िर और मुर्तद कहते हैं। (वल अयाज़ु बिल्लाहि तआला)। इन चारों के कुफ़्री अक़ायद व अक़वाल की मुझे और मेरे उस्ताद ने कोई ख़बर नहीं दी थी। बहरहाल मेरे वहाबी उस्ताद अक्सर आला हज़रत की किताबों से मदद लेते थे।एक मरतबा मैंने अपने इन ख़बीस उस्तादों से पूछा कि आप लोगों के कहने के मुताबिक़ यह शख़्स (यानि आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु) बिदअतियों का सरदार है । और देवबन्दी आलिमों को काफ़िर क़हता है। और अपने मुरीद के सिवा किसी को मुसलमान नहीं समझता । फिर आप लोग ऐसे शख़्स की किताबें किस लिए देखते हैं । तो उन बेईमानों ने जवाब दिया कि इस शख़्स में सिर्फ़ इतना ही ऐब है कि हमारे अकाबिर (गंगोही, नानूतवी, थानवी, वग़ैरह) को काफ़िर कहता है। वरना फ़िक़्ह व हदीस वग़ैरह तमाम उलूम –ए– दीनया में हिंदुस्तान भर के अंदर इसके बराबर और इसके जोड़ी का कोई शख़्स नहीं हम लोग अगरचे इसके मुख़लिफ़ हैं। मगर फिर भी इसके इल्मी दलाएल व तहक़ीक़ात के मोहताज है।

चौधवी सदी के मुजद्दिद आला हज़रत

हुज़ूर –ए– अक़दस सल्लल्लहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर सदी में अल्लाह तआला एक ऐसी हस्ती को पैदा फ़रमायेगा जो मेरे दीन को सवारेगा, उस शख़्स को मुजद्दिद कहते हैं। उलमाए इसलाम ने बयान फ़रमाया है कि मुजद्दिद के लिए ज़रूरी है कि एक सदी के आख़िर और दूसरी सदी के अव्वल में उस के इल्म –ओ– फ़ज्ल की शोहरत रही हो। वह सुन्नतों पर अमल करे और मुर्दा सुन्नतों को ज़िन्दा करे बिदअत को दूर करे और उसकी दीनी ख़िदमात का चर्चा अवाम और उलमा में ख़ूब मशहूर हो लिहाज़ा जिस आलिम को आख़री सदी का ज़माना न मिला या मिला लेकिन वह दीनी ख़िदमात अंजाम देने में मशहूर न हुआ तो वह मुजद्दिद की फ़ेहरिस्त में शुमार न होगा।

मुजदिद की पहचान और मुजद्दिद के कारनामों के मुताबिक़ अगर हम देखें तो यह पाते हैं बिला शुबा आला हज़रत चौधवी सदी के मुजदिद थे बल्कि उल्माए ने आला हज़रत को मुजद्दिद –ए– आज़म कहा है। आपकी पैदाईश 10 शव्वाल 1272 हिजरी और विसाल 25 सफ़र 1340 हिजरी है। आप तेरह साल दस माह की उम्र में ही तालीम से फ़ारिग़ हो गए थे।

आपने तेरहवीं सदी के 28 साल दो माह बीस दिन और चौधवी सदी के 39 साल एक माह 25 दिन पाए। आपके उलूम ओ फ़ुनून दर्स –ओ– तदरीस (टीचिंग) तालीफ़ –ओ– तसनीफ़ (लेख, रचनांए किताबें वग़ैरह) वाज़ व तक़रीर की शोहरत हिन्द से अरब तक हुई। आपने दीन का बयान और दीन की दुश्मनों का मुक़ाबला कुछ इस शान से अन्जाम दिया कि आपके मुजद्दिद बल्कि मुजद्दिद – ए– आज़म होने में कोई शक नहीं। आपने तेरह साल की उम्र से ही फ़तवा देना शुरू किया जो कि बड़े साइज़ की 12 जिल्दों में तक़रीबन 11 हज़ार सफ़हात पर "फ़तावा रज़विया" के नाम से मशहूर है। आपने अहकाम –ए– शरा की व दीन के दूसरे मसाइल की तफ़सील व तहक़ीक़ (reserch) कुछ इस अन्दाज़ से की है कि जो मसाइल बरसों से उलझे थे वह सुलझ गए और जो दूसरी जगह देखने को नहीं मिलते। आपकी तसानीफ़ एक हज़ार से ज़्यादा हैं।

हुज़ूर आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु की ज़िन्दगी के कारनामों पर निगाह डालने से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने अपने इस ख़ास बन्दे को अपने दीन की हिमायत के लिए ही पैदा किया था। आप ने दीन का यह काम जिस .ख़ूबी से अंजाम दिया यह आपकी तस्नीफ़ात से ज़ाहिर है। आपने कुफ़्फ़ार, मुरतदीन, मुशरेकीन और मुब्तदीईन (बिदअती) की तरफ़ से होने वाले तमाम हमलों का मुँह तोड़ जवाब दिया। आज कोई भी ऐसा मशहूर बातिल फ़िरक़ा या बातिल मज़हब नहीं है जिसके रद्द में आपने न लिखा हो। दहरिए, फ़लास्फ़ा, आर्यासमाजी, यहूद, नस्सारा, हुनूद, मजूस कादयानी, नैचरी, वहाबी, देवबन्दी, नदवी , राफ़ज़ी ख़ारजी, तफ़ज़ीली, सुलह कुल्ली वग़ैरह बेदीनों बदमज़हबो उन्हीं के बातिल ऐतक़ाद से उनका ऐसा रद्द किया कि जिसका जवाब नहीं।

आला हज़रत का वतन उस सूबा और शहर में है जहाँ हिन्दुओं की तादाद मुसलमानों के मुक़ाबले ब्रहुत ज़्यादा है। आपका दौलत ख़ाना मोहल्ला सौदागरान बरेली में था जहाँ सिर्फ़ दो घर मुसलमानों के थे। इसके बावजूद आपने हुनूद के रद्द में किताबें लिखीं जिसमें से एक "अनफ़ुसुल फ़िक्र फ़ी क़ुर्बानी बक़र" है। आर्य समाजियों के रद्द में "कफ़रे किरदार आर्य" लिखी तीन किताबें नस्सारा के रद्द में लिखीं।

यह तीनों फ़िरक़े यानि हुनूद, आर्य समाजी, और नस्सारा तो ग़ैर मुस्लिम हैं और अपने आप को मुसलमान कहलाना भी पसंद नहीं करते हैं इसके अलावा वह फ़िरक़े जो अपने आप को मुसलमान कहलाते हुए भी इस्लाम की जड़ काटने में लगे हुए थे इनके रद्द में आला हज़रत ने ख़ास मशक़्क़त फ़रमाई इन्हीं बातिल फ़िरको में से एक अग्रेज़ों को .क़ुव्वत पहुँचाने वाला नैचरी फ़िरक़ा भी था। आला हज़रत ने नैचरियों के रद्द में सात किताबें तहरीर फ़रमाकर अग्रेज़ों की साज़िश को नाकाम किया जब अग्रेज़ों के ख़ैरख़्वाह वहाबियों ने शशमिस्ल का फ़ित्तना बरपा करते हुए ऐलान किया कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम , हजरत आदम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत नूह, वग़ैरह अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की तरह ज़मीन के बाक़ी तबक़ों में और भी मुहम्मद, आदम , इब्राहीम वग़ैरह रह सकते हैं तो आला हज़रत ने इनके रद्द में "तम्बीउल जुहाल" लिखकर इस फ़ितने को हमेशा के लिए दफ़न कर दिया।

जब अग्रेज़ों की शह पर मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी ने पह अपने इमाम मेंहदी, फिर मसीह फिर रसूल होने का दावा किया और नबियों क शान में गालियाँ देना शुरू कीं तो आला हज़रत ने उसके रद्द में छः किता लिखीं और एक माहनामा "क़हरूद्दय्यान" जारी किया।

जब अग्रेज़ों के दिली ख़ैरख़्वाह देवबन्दी आलिमों ने मसअल ख़त्मे नुबुव्वत का इन्कार किया और अल्लाह पाक बे ऐब के झूट बोलने क दुरूस्त बताया। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज़िक्र–ए–मीलाद को कनहईया का जन्म दिन क़रार दिया। सरकार मदीनतुलइल् (इल्म के शहर) के इल्म को बच्चों, पागलों और जानवरों की तरह ठहराय और ग़ैर मुक़ल्लेदीन वहाबियों ने इमाम अबू हनीफ़ा आइम्माए इसलाम क तक़लीद व इत्तेबा को शिर्क व कुफ़्र ठहराया तो आला हज़रत ने इन वहाबि के रद्द में दो सौ से ज़्यादा किताबें लिखीं। आपने तफ़ज़ीलियों व राफ़ज़ियों रद्द में भी किताबें लिखीं।

1311 हिजरी में जब 'नदवतुलउलमा' के नाम से एक नया जा फेका गया तो उसके जाल में बहुत से उलमा भी फंस गये। आला हज़रत इनको बेनक़ाब करके उन उलमाए किराम को भी बचाया जिसका तफ़सी बयान "फ़तावुल हरमैन बर जफ़े नदवतुलमैन" में मिलता है।

जब मुलहिद फ़ासिक़ और नाम निहाद सूफ़ी झूटा तरीक़त क आड़ लेकर शरीयते मुहम्मदिया पर हमला करने लगे और शरीयत को तरीक का मुख़ालिफ़ बताने लगे और अपने पीर को सजदए ताज़ीमी को जाएज़ क़रा दिया तो आला हज़रत ने "मक़ालुल उरफ़ा" लिख कर साफ़ साबित कर दिय कि शरीयते मुहम्मदिया में अल्लाह के सिवा किसी को सजदा जाएज़ नहीं।

साइंसदाँ हज़रात का मानना है कि ज़मीन सूरज के गिर्द घू रही है और आसमान कोई चीज़ नहीं है। ये दोनों बातें .कुरआन के ख़िला है। आला हज़रत ने साइंस की इस बातिल थ्योरी के ख़िलाफ़ "फ़ौज मुबी दर रद्दे हरकते ज़मीन " और "नुज़ूल आयते .फ़ुरक़ान बसुकूने ज़मीन आसमान ". लिखकर कैप्लर, न्यूंटन और डारविन का रद्द उन्हीं की थ्योरी ग़लत साबित किया।आला हज़रत ने इन किताबों में .कुरआन और हदीस तथा साइंस से भी यह साबित कर दिया कि आसमान और ज़मीन दो

साकित (ठहरे हुए) हैं। चाँद, सूरज व सितारे एक ख़ास घेरे में पैर रहे है।

आख़िर ज़माने में मौलवी मुहम्मद अली और मौलवी शौकत अली ने एक तहरीक ख़िलाफ़त के नाम पर एक तहरीक चला कर ऐसा फ़ितना खड़ा किया जिसमें सब बदमज़हबो मुनाफ़िकों, मुरतदों और खुले काफ़िरों सब को समेट लिया और हक़ –ओ– बातिल की पहचान मिटा देना चाही। इसमें बाज़ उलमा और मशाइख़ भी इस फ़रेब का शिकार हुए। इस वक़्त सिर्फ़ आला हज़रत की ज़ात थी जिसने इनके ख़िलाफ़ इशतेहारात पर इशतेहारात छापे और मुसलमानों को इस फ़ितने से बचाया यहाँ तक की आख़िर में एक रिसाला "अल्मुहज्जतुल मोतमेनह" लिख कर दूध का दूध पानी का पानी कर दिया।

अलग़र्ज़ जहाँ भी किसी बदमज़हब बद्दीन ने सर उठाया आला हज़रत ने उसका सर कुचल कर रख दिया। उसके रद्द में किताबें लिखीं और छपवाई और हिन्दुस्तान भर के अकाबिर, मशाइख़, उलमा और रूऊसा के पास भेज दिया और इस तरह से आप ने दीन की हिमायत में अपना तन मन धन सब क़ुर्बान कर दिया। यह सब कारनामें साबित करते हैं कि आला हज़रत बिला शुबा मुजद्दिद थे।

बाज़ मुख़ालफ़ीन एतराज़ करते हैं कि आला हज़रत ने ख़्वामख़्वाह रद्द कर के मुख़ालफ़त ली अगर यह ऐसा न करते तो दुनियाँ आपको पेशवा मानती। इन लोगों के अलफ़ाज़ों में वही झलक है जो कुफ़्फ़ारे मक्का के मुतालबे में थी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तमाम बुत परस्तों के ख़िलाफ़ आवाज बलन्द फ़रमाई तो मुशरेकीने अरब बिलबिला उठे और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से गुज़ारिश की कि आप हमारे बुतों को बुरा न कहें तो हम लोग आप को अपना सरदार बनाने के लिए तैयार हैं फिर हम सब मिलकर आपके पास दौलत का अम्बार लगा देंगे लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस बात को ठुकरा दिया। आला हज़रत ने इसी सुन्नत पर अमल किया तो मक्के और मदीने शरीफ़ के उलमा ने आपको मुजद्दिद तसलीम किया। आपके दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की और ख़िलाफ़त व इजांज़त हासिल की।

बाज़ ताअस्सुबी लोग कहते हैं कि इस क़द्र तक़रीरों, तहरीरों, इशतेहारात और रसाएल का फ़ायदा का फ़ायदा न हुआ। लेकिन यह चमकते

सूरज का इंकार है हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला तेरी वजह से एक शख़्स को भी हिदायत दे दे तो यह यक़ीनन रू –ए– ज़मीन की हुकूमत से बेहतर है और यहाँ आला हज़रत की तहरीरों से हज़ारों बल्कि लाखों लोग फ़ायदा उठा रहें हैं, गुमराह तबक़ा उनकी किताबें पढ़–पढ़ कर बदमज़हबियत से बचकर दीनदार हो गया। यह आला हज़रत की ही तहरीरों का सदक़ा है कि एक ग़रीब सुन्नी का बच्चा स्टेज पर खड़ा होकर मौजूदा ज़माने के फ़िरऔन, नमरूद, अबू जहल, अबू लहब जो अपनी जमाअत में मख़दूमें –ए– कुल, शेखुल इसलाम, हकीमुल उम्मत, .कासिमुल उलूम कहलाते हैं उनकी बेदीनी की धज्जीयां उड़ाता है,उनके कुफ़्र और इस्तेदाद को बेनक़ाब करता है और मैदान –ए– मनाज़रे से हमेशा बद्दीन भागता नज़र आता है।

बाज़ कमज़र्फ़ लोग आला हज़रत को अग्रेज़ों का एजेन्ट बताते हैं हालांकि आला हजरत की तन्हा ज़ात है जिसने अपने ख़ुदादाद इल्म –ओ– फ़ज़ल से अग्रेज़ों की ख़ुफ़िया साज़िशों का पर्दा फ़ाश किया और अग्रेज़ों के मुक़र्रर किए हुए लीडरों, मौलवियों और पीरों का भांडा फोड़ा। आला हज़रत पर यह इल्ज़ाम लगाने वालों को हमारा चैलेंज है कि वह आला हज़रत को तारीख़ व हक़ाइक़ के कांटे पर अग्रेज़ों का वफ़ादार ही साबित कर दे, ऐजेन्ट साबित करना तो बहुत दूर की बात है।

आला हज़रत को तो अल्लाह तआला ने अपने दीन की हिमायत और अग्रेज़ों समेत तमाम दीन के दुश्मनों से मुकाबले ही को मुजद्दिद बना कर भेजा।

सीरते आला हज़रत में मौलाना हसनैन रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह (जो आला हज़रत के भतीजे थे) फ़रमाते हैं कि आला हज़रत के फ़ैज़ाने मुजद्दियत का ज़ुहूर 1301 हिजरी के आग़ाज़ से हुआ। वाक़िया यूँ है कि हमारे चचा मौलवी मुहम्मद शाह ख़ाँ साहब मरहूम सौदागरी मुहल्ला के क़दीमी बाशिन्दे थे। आला हज़रत से उम्र में एक साल बड़े थे, बचपन एक साथ गुज़ारा होश सम्भाला तो एक ही जगह उठना बैठना रहा ऐसी हालत में बेतकल्लुफ़ी होना ही थी। उनको आला हज़रत नत्थन भाई जान कहते थे और उनके एक साल बड़े होने का बड़ा लिहाज़ फ़रमाते थे। आदमी इल्म वाले थे।

घर के .खुशहाल ज़मीदार थे। मैने उनको अपने होश से आला हज़रत का बहुत अदब करते देखा जब कोई मसअला दरयाफ़्त करना होता तो दूसरों से दरयाफ़्त कराते। मैं मुद्दतों से देख रहा था। एक रोज़ मैने चचा से अर्ज़ किया कि आला हज़रत तो आपकी बुज़ुर्गी का लिहाज़ करते है आप उनसे इस क़द्र क्यूँ झिझकते हैं कि मसअला .खुद नहीं दरयाफ़्त कर सकते। उन्होंने फ़रमाया कि मैं और वह बचपन से साथ रहे। मग़रिब पढ़कर हमारा मामूल था कि उनकी महफ़िल में आ बैठते, सय्यद महमूद शाह वग़ैरह भी होते। इशा तक महफ़िल गर्म रहती। इस महफ़िल में इल्मी और दीनी बातें होतीं और कभी कभी हँसी मज़ाक़ भी होता। जिस दिन मुहर्रम 1301 हिजरी का चाँद हुआ उस दिन रोज़ की तरह हम सब आला हज़रत की महफ़िल में आ गए। आला हज़रत कुछ देर से पहुँचे। सलाम के बाद मुझे मुख़ातिब करके फ़रमाया कि नत्थन भाई आज 1301 हिजरी का चाँद हो गया। मैने अर्ज़ किया कि मैने भी देखा। बाज़ और साथियों ने भी चाँद देखने का बयान किया। इस पर फ़रमाया कि भाई साहब यह तो सदी बदल गई। मैने भी अर्ज़ किया कि सदी तो बेशक बदल गई और चौधवीं सदी शुरू हो गई। इस पर फ़रमाया अब हमको भी बदल जाना चाहिए। यह फ़रमाना था कि सब ख़ामोश हो गये और हर शख़्स अपनी जगह बैठा रह गया फिर किसी को बोलने की हिम्मत न हुई, कुछ देर सब ख़ामोश बैठे रहे और फिर एक एक करके सलाम करके सब चलने लगे। उस वक़्त तो कोई बात समझ में न आई कि यकायक यह रोब छा जाने का क्या सबब है। दूसरे रोज़ बाद नमाज़े मग़रिब जब सामना हुआ और उनके मुजद्दिदाना रोब–ओ–जलाल से सामना पड़ा तो याद आया कि उन्होंने जो सदी बदलने को फ़रमाया था तो वह .खुदा की क़सम ऐसे बदले कि कहीं से कहीं पहुँच गये और हम जहाँ थे वहीं रहे। वह दिन है और आज की दिन है हमें उनसे बात करने की हिम्मत न हुई बल्कि इस अहम तबदीली पर तन्हाई में हमने बारहा ग़ौर भी किया तो सिर्फ़ यही समझ मे आया कि मिन जानिब अल्लाह उस दिन से कोई बड़ी तबदीला कर दी गई जिसने उन्हें बहुत ऊँचा कर दिया और हम जहाँ थे वहीं हैं। हाँ जब दुनिया उन्हें मुजद्दिद के नाम से पुकारने लगी तो समझ में आया कि वह तबदीली यह थी जिसने हमें इतने रोज़ हैरान रखा। यह थी वह तारीख़ जिस दिन उन्हें मौजूदा सदी का मुजद्दिद बनाया गया और मुजद्दिद का मनसब अता हुआ और साथ ही साथ वह रोब भी।

वहाबियत के फ़ितने से मुक़ाबला करने वाले उलमाए दीने

जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पहले ही पेशीनगोई कर दी थी कि नज्द से फ़ितने उठेंगे, वैसा ही हुआ। उसकी तफ़सील यूँ है कि 1209 हिजरी में यह फ़ितना शुरू हुआ इस मज़हब का गुरू घन्टाल अब्दुल वहाब नजदी का छोटा बेटा मोहम्मद था। उसने तमाम अरब और ख़ास तौर पर हरमैन शरीफ़ैन में बहुत फ़ितने फैलाए। उस ने एक किताब "किताबुत्तौहीद" लिखी जिसमें ऐलान किया कि तमाम जहान के मुसलमान ख़ास तौर पर मक्का मदीने वाले काफ़िर –ओ– मुशरिक हैं। लिहाज़ा उनको क़त्ल करना उनके मालो को लूट लेना वाजिब है – फिर इस किताब को बड़े–बड़े शहरों में भेजा। शहरो के हाकिमों ने इस किताब से लोगों को आगाह किया और वहाबियों ने मुसलमानों को लूटना शुरू कर दिया। अब्दुल वहाब का एक चेला सऊद अपने वहाबी डाकुओं को लेकर ताएफ़ शरीफ़, मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ पर हमलाआवर हो गया। इन्होंने औरतों, बच्चों तक को न छोड़ा, आलिमों सय्यदों को चुन–चुन कर शहीद किया। ताएफ़ शरीफ़ की मस्जिदे अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रदियल्लाहु तआला अन्हु) को ढा कर बराबर कर दिया। बाद में ईराक़ पर भी धावा बोला और लूटमार और क़त्ल ओ ग़ारत करके अरब शरीफ़ पर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली और बचे खुचे मुसलमानों को काफिर मुरतद क़रार कर उन पर ज़ुल्म –ओ– सितम के पहाड़ तोड़े।

फिर जब सुल्तान सलीम और मुस्तफ़ा राबेअ के क़त्ल हो जाने के बाद सुल्तान महमूद ग़ाज़ी तुर्की का बादशाह हुआ फिर उसने तुर्की सल्तनत में रूह फूक कर उसे ताक़तवर बनाया और मिस्र के वाली मोहम्मद अली पाशा के पास नजदी वहाबियों पर जिहाद के लिए शाही फ़रमान भेजा। मुहम्म्द अली पाशा ने इब्राहीम पाशा को इसलामी लश्कर का अफ़सर बना कर अरब भेजा जिसने वहाबियों के लशकर को हरा कर 1223 हिजरी में उनकी नाम निहाद हुकूमत को ख़त्म कर दिया। फ़्रांस, बरतानिया औ जालूस की फ़ौजों ने मिलकर जब तुर्की सलतनत को बरबाद कर डाला त 1342 हिजरी में मुलहिद कमाल पाशा ने तुर्की के बक़िया हिस्से पर ग़ै इसलामी राज क़ायम किया। इसके बाद हरमैन शरीफ़ैन का कोई मुहाफ़ि न रह गया। मैदान ख़ाली देखकर फिर दोबारा नज्द का भेड़िया अंग्रेज़ों क शह पाकर मक्का मदीना पर हमलावर हुआ और ज़ुल्म का पहाड़ तोड़ा।

इसी साल 1925 ई० में आख़िर में एक बहुत बड़ा फ़ित

रूनुमा हुआ। अमीर इब्ने सऊद वाली –ए– नज्द ने अग्रेज़ों के इशारे पर हिजाज़ पर हमला कर दिया। हिजाज़ के बादशाह शरीफ़ हुसैन का अग्रेज़ों से सियासी मुआमलात मेें बिगाड़ चल रहा था। लिहाज़ा अग्रेज़ों ने वाली –ए– नज्द को माली व फ़ौजी इमदाद देकर हिजाज़ पर हमला करा दिया। नजदियों ने थोड़े ही अरसे में चन्द लड़ाईयों के बाद हिजाज़ पर क़ब्ज़ा कर लिया। शरीफ़ हुसैन को अग्रेज़ों ने गिरफ़्तार करके नज़रबन्द कर दिया। जहाँ उसका इन्तेकाल हो गया। उसके बाद उसका बेटा शरीफ़ अली चन्द दिनों के लिए तख़्त पर बैठा। उसे भी इब्ने सऊद के हाथों शिकस्त का सामना करना पड़ा आख़िर यह कि इब्ने सऊद का हरमैन शरीफ़ैन पर कब्ज़ा हो गया। और फिर उसने सादात, शुरफ़ा, उलमा व नेक लोगों के क़त्ल से अपने हाथ रंगने के बाद मुतबर्रक जगहो, मज़ारात और मस्जिद को मुन्हदिम (ढाना) करना शुरू किया। जन्नतुल माला और जन्नतुल बक़ी के तमाम क़ुब्बे मसमार कर दिए गए। मक्क: मुअज़्ज़मा के आसारे मुक़द्दस जैसे मौलूद नबी (नबी की जन्म पैदाइश की जगह) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और मौलद फ़ातमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और इसी क़िस्म के दीगर मक़ामात को बिल्कुल पामाल (बरबाद) कर दिया गय। मस्जिद –ए– जिन मस्जिद बुक़ुबैस, मस्जिद –ए– नूर् वग़ैरह को मुनहदिम कर दिया। हत्ताकि रौज़ए मुत्तहेरा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म को भी गिराने का इरादा था।

यहाँ वहाबियों की ज़ुल्मों सितम की मुख़्तसर तारीख़ (इतिहास) बतायी गयी ताकि ख़ूब अच्छी तरह यह बात ज़हन नशीन हो जाए कि उलमाए किराम ने इनका डटकर रद्द क्यों किया, क्यूँ सुन्नी हमेशा इन्हें बुरा भला कहते हैं। उलमाए किराम और आला हज़रत हमें होशियार न करते तो जान के साथ–साथ क्या हमारे ईमान भी न चले जाते। जान तो एक दिन जाना ही है मगर ईमान किसी क़ीमत पर न जाना चाहिए। अब हिन्द के कुछ उलमा का तज़किरा आगे आएगा जिन्होंने वहाबियों का अपने अपने वक़्त में रद्द किया।

मौलवी इसमाईल देहलवी के ज़रिए हिन्दुस्तान में वहाबियत फैली । हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी जाएदाद अपने नवासों में तक़सीम कर दी। और अपने भतीजो को इसी नाराज़गी की वजह से कुछ न दिया। मौलवी इसमाईल देहलवी क़ी नज़र से

जब "किताबुत्तौहीद" गुज़री तो उन्होंने वहाबियत क़बूल कर ली। और इसका तर्जमा करके उसका नाम "तक़वीयतुल ईमान" रखा। शाह अब्दुल अज़ीज़ के सामने तो मौलवी देहलवी ज़रा दबे रहे। मगर उनके विसाल के बाद यह ख़ुदसर हो गए। "सिराते मुस्तक़ीम" जैसी किताब में अपने जाहिल पीर सय्यद अहमद राय बरेलवी के नबी होने का राग फैलाया। इनके ज़रिए वहाबियत बढ़ जाने से जगह--जगह अम्बिया व औलिया की तहक़ीर व उम्मते मरहूमा की तकफ़ीर होने लगी। फिर तो शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी के भतीजे और शागिर्द मौलाना शाह मख़सूस उल्लाह मोहद्दिस देहलवी और मौलाना शाह मूसा देहलवी जो मौलाना शाह रफ़ी उद्दीन के साहबज़ादे और शाह वली उल्लाह मोहद्दिस देहलवी के पोते और ख़ुद मो० इस्माईल के चचा ज़ाद भाई थे, उठ खड़े हुए और मो० इस्माईल देहलवी के अक़ाईद का डट कर मुक़ाबला किया और मो० इस्माईल के रद्द में फ़तावे और रिसाले लिखे जिसमें मो० इस्माईल को गुमराह और काफ़िर क़रार दिया और रिश्ते का कोई लिहाज न किया गया । हज़रत मौलाना मख़सूस उल्लाह देहलवी ने तक़वीयतुल ईमान के रद्द में "मुईदुल ईमान" लिखी।

शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी के शार्गिद मौलाना फ़ज़्ले हक़ फ़ारुक़ी ख़ैराबादी ने मो० इस्माईल के रद्द करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। एक शख़्स ने आपसे मो० इस्माईल देहलवी की शफ़ाअत से मुताल्लिक़ अक़ाईद के बारे में इस्तिफ़ता (मुफ़्ती से फ़तवा पूछना) किया कि--

मुल्ला इस्माईल शफ़ाअत से मुताल्लिक हक़ है या बातिल ? मुल्ला देहलवी का यह क़लाम सरकार मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में तौहीन व गाली है या नहीं अगर मुल्ला इस्माईल देहलवी का यह कलाम नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तनक़ीस शान और तौहीन है तो उसका क्या हुक्म है और वह दीन --ओ-- मिल्लत के ऐतबार से कौन है ?

जब यह इस्तिफ़ता आपके सामने पेश हुआ तो आपने इसके जवाब में एक पूरी किताब "तहक़ीक़ुल फ़तवा फ़ी इबतालिलतग़वा" लिखी। और **हर सवाल की ख़ूब तफ़सील फ़रमाई और आख़िर में इस्माईल देहलवी को देवबन्दी, वहाबी वग़ैरह को काफ़िर व मुर्तद क़रार दिया। फिर यह फ़तवा दूसरे मुफ़्तीयों के सामने पेश हुआ, देहली के सोलह मुफ़्तीयों ने इसकी तहक़ीक़ की।**

मौलाना मुनव्वर उदद्दीन क़ाज़ी सिराजुद्दीन के साहबज़ादे और मौलाना ख़ैरूद्दीन मक्की के नाना थे और शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह के शार्गिद थे। आपके इल्म की दूर–दूर तक शोहरत थी। बहुत हक़ गो (सच बात कहने वाले) थे। मो० इस्माईल और वहाबियत का बड़ी शान से मुकाबला किया। आप इस्माईल देहलवी के साथ पढ़े थे। आपने मो० इस्माईल और इसके साथी मो० अब्दुल हई वग़ैरह को बहुत समझाया जब न माने तो इनके रद्द में किताबें लिखी।

अल्लामा शाह फ़ज़्ले रसूल बदाँयूनी की पैदाइश 1213 हि० में हुई। आप मौलाना अब्दुल अली फ़िरंगी महली रहमतुल्लाहि तआला अलैह के जलीलुश्शान शार्गिद हैं। आप बहुत ही मशहूर और बहुत ही क़ाबिल आलिम थे। आपने मो० इस्माईल देहलवी के रद्द में किताबें लिखीं जिनमें से कुछ यह हैं। सौतुर्रहमान, सैफ़ुल जब्बार, अलमोतक़द वग़ैरह।

मौलाना शाह अहमद सईद मुजद्दिदी हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिदी अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी की नस्ले पाक से हैं। वहाबियों के रद्द में पाँच मशहूर किताबें लिखीं जिनके नाम यह हैं :– 1–तहक़ीक़ुल हक़्क़ुलमुबीन 2– इस्बातुल मौलूद –ओ– क़याम 3– सईदुलबयान 4– अलज़िक्र –ए– शरीफ 5-- अलफ़वाएदुल ज़ाबता।

अबुल कलाम आज़ाद के वालिदे माजिद मौलाना ख़ैरूद्दीन 1247 हि० में देहली में पैदा हुए। आपने तबलीग के पेशे नज़र .क़ुसतुनतुनिया, ईराक़ व मिस्र का दौरा किया आपने भी वहाबियों का डट कर रद्द किया आपने सुन्नी अक़ाईद और रद्दे वहाबिया से मुताल्लिक़ एक ज़ख़ीम किताब "नज्मुर्रज्म" लिखी। जो दस ज़ख़ीम जिल्दों में है। आपको वहाबियों से बहुत सख़्त नफरत थी, आपका ज़्यादातर वक़्त वहाबियों की मुख़ालफ़त में गुज़रा। मौलाना ख़ैरूद्दीन साहब को अपने बेटे के अक़ाईद का इल्म न था। लेकिन फ़रमाया करते थे कि "मुझे इसके. (अबुल कलाम आज़ाद) के हालात ठीक नज़र नहीं आते। बहुत ज़्यादा ज़हानत बाज़ वक़्त गुमराही का ज़रिया हो जाती है। मैं इसकी ज़हानत से डरता हूँ।

मौलाना अब्दुल रहमान फ़ारुक़ी सिलहटी आसामी सय्येदिना फ़ारूक़–ए– आज़म की नस्लें पाक से हैं। आप बहुत ज़ब्रदस्त आलिम थे। आपने वहाबियों के शैखुल्कुल मो० नज़ीर हुसैन देहलवी की किताब "सुबूल

अल हक्क़ुल तहक़ीक़" के रदद में एक किताब "सैफ़ुल अबरार" लिखी।

इस तरह हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान के ज़बरदस्त आलिमों ने मो० इस्माईल देहलवी को गुस्ताख़े रसूल, मुरतद व काफ़िर बताया है जो कि आला हज़रत से बहुत पहले के हैं। असल हक़ीक़त यह है कि आला हज़रत से पहले के उलमा–ए– इसलाम के ज़माने में चूँकि वहाबियत की शुरूआत थी और .ख़ुद वहाबियत भी तन्हा थी। उसका साथ देने वाला भी कोई दूसरा मज़हब न था इसलिए इन हज़रात ने तन्हा वहाबियत का मुक़ाबला करके उसे पस्पा किया और अपना फ़र्ज़ पूरा करके ख़ामोश हो गये। आला हज़रत के दौर में वहाबियत अपने पेट से कई नये मज़हबो को जन्म दे चुकी थी जैसे देवबन्दियत , नैचरियत, क़ादयानियत, चिकड़ालवियत, दहरियत, नदवियत और सुलह़ कुल्लियत वग़ैरह। आला हज़रत ने चौमुखा लड़ाई लड़कर सबके दाँत खट्टे कर दिये। पहले के उलमा ने तहरीर से ज़्यादा तक़रीर से काम लिया था जिसमें सिर्फ़ हाज़रीन ने .ख़ूब फ़ैज़ लिया था। आला हज़रत ने तक़रीर के साथ–साथ तहरीर के अम्बार लगा दिए। आला हज़रत देख रहे थे कि आने वाले वक़्त में नए–नए फ़ितने पैदा होंगे हत्ताकि यह सिलसिला दज्जाल तक जायेगा। इसलिए आप ने अपने दौर के रददे वहाबिया के साथ–साथ हम सुन्नियों को तहरीरी शक्ल में वह हथियार दे दिये जो आइन्दा नस्ल के काम आंए। चुनांचे जब वहाबियत के पेट से मौदूदी और इलयासी मज़हब (तबलीग़ी जमाअत वाले) नए साज़ो सामान के साथ पैदा हुए तो ग़ुलामाने अहमद रज़ा नें दोनों की धज्जियां बिखेर दीं। आला हज़रत अपने .ख़ुसूसी कारनामों से उलमा , सूफ़िया, मशाइख़ और आम मुसलमानों के मर्कज़ बन गये। मुसलमानों ने अपना दीन ईमान बचाने के लिए आला हज़रत की हिदायत और तसनीफ़ात को लाज़िम बना लिया। देवबन्दियों को अच्छी तरह मालूम हो गया कि मुसलमान जब तक अहमद रज़ा के दामने पाक से वाबस्ता हैं इनको बड़ी से बड़ी ताक़त भी इसलाम व सुन्नियत से नही हटा सकती। उन्होनें हक़ीक़त को कुचलते हुए इतिहास को झुटलाते हुए यह प्रोपेगण्डा करने की कोशिश की कि सिर्फ़ अहमद रज़ा ही वह तन्हा आलिम हैं जिन्होंने वहाबी मज़हब को बातिल और इस्माईल देहलवी को गुमराह और बददीन क़रार दिया बाक़ी दूसरे उलमा वहाबी मज़हब को दुरूस्त समझते रहे ताकि सादा लौह नावाक़िफ़ मुसलमान रददे वहाबिया के मैदान में आला हज़रत को तन्हा समझकर आपसे बदगुमान

हो जायें और आपकी तबलीग़ व हिदायत पर अमल न करें। आख़िर यूँ समझें कि देवबन्दियों ने यह सोचा कि अगर हमने उन बुज़ुर्गों (जिनका सिलसिले वार ज़िक्र गुज़रा) पर कीचड़ उछाली तो ..ख़ुद फँस जायेंगे। लिहाज़ा उन्होंने सिर्फ़ आला हज़रत को इशारा बनाया।

रद्दे वहाबिया पर ज़ोर की वजह

यूँ तो आला हज़रत ने सब ही मुख़ालिफ़ मज़हबों का रद्द किया लेकिन वहाबियत के रद्द पर ज़्यादा तवज्जो फ़रमाई। उसकी वजह यह थी कि खुले काफ़िर को पहचानने में आम मुसलमानों को कोई दुशवारी न थी और चूंकि राफ़ज़ियों की मस्जिद ईदगाह और दूसरी मज़हबी चीज़ें पहले ही अलग हो चूकीं थी; क़ादयानी मिर्ज़ा .गुलाम अहमद क़ादयानी को नबी बनाकर मुसलमानों से जुदा हो चुके थे। इसलिए इन दोनों फ़िरक़ों को पहचानना मुसलमानों को दुशवार न था। अब रहे वहाबी देवबन्दी तो चूंकि ये लोग अपने आपको सुन्नी कहलाते हैं, हनफ़ी होने का दम भरते हैं। .क़ुरआन व हदीस पर अमल करने का दावा करते हैं, अक़ाइद व फ़िक़्ह की किताबों के मानने का इंज़हार करते हैं, सुन्नी मुसलमानों जैसी नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते व हज करते हैं। क़ादिरी, चिशती, नक़्शबन्दी और सोहरवर्दी बनते हैं। उलमाए सल्फ़ ओ ख़ल्फ़ (यानी पहले के सुन्नी उलमा) की तसनीफ़ात को मानते हैं। क़ुरआन व हदीस और दीनी किताबों के दर्स व तदरीस (पढ़ना पढ़ाना) का शग़ल रखते हैं। इसलिए इनकी पहचान आम मुसलमानों के बस से बाहर है। इसलिए आला हज़रत ने इनके कुफ़्र और बदअक़ीदगी का पर्दा फ़ाश करने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया।

जब वहाबियों ने तक़वीयतुल ईमानी तालीमात के मुताबिक़ (यानी मो० इस्माईल की तक़वीयतुल ईमान के अक़ाइद के मुताबिक) शोर मचाया कि दुरूद ताज का पढ़ना शिर्क और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दाफ़े इल बला (बलाओं को दफ़ा करने वाले) कहना शिर्क –ओ– बिदअत बताया तो हज़रत मौलाना शाह करामतुल्लाह ख़ाँ साहब ने आला हज़रत की ख़िदमत में एक इस्तिफ़ता (सवाल) भेजा। आपने उनके इस्तिफ़ता के जवाब में रिसाला "अल अमनो वल उला" तहरीर किया जिसमें ये बातें साबित कीं कि अल्लाह व रसूल दौलत मन्द करने वाले हैं, निगेहबान, बेवलियों के वाली है। अल्लाह व रसूल मालो के मालिक हैं, ज़मीन –ओ– आसमान के मालिक हैं, अल्लाह व रसूल नेमत व इज़्ज़त देने वाले हैं। हुज़ू अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उम्मत के हाफ़िज़ और निगेहबान हैं। हुज़ूर के आगे सबके हाथ फैले हुए हैं, हुज़ूर सब आदमियों और पूरी उम्म

के मालिक हैं। दुनियाँ की सारी मख़लूक़ की कुन्जियाँ हुज़ूर के हाथ हैं। जन्नत व दोज़ख की कुन्जियाँ हुज़ूर के हाथ हैं आख़िरत में इज़्ज़त देना हुज़ूर के हाथ में है, क़यामत में कुल इख़्तेयारात हुज़ूर के हाथ है। हुज़ूर मुसीबतों को दूर करने वाले सख़्तियों के टालने वाले हैं। हज़रत अबू बक्र और उमर हुज़ूर के बन्दे (.गुलाम) हैं। हुज़ूर के ख़ादिम बलांए टालते हैं, मर्तबे बलन्द करते हैं। हुज़ूर के खादिम तमाम कारोबार आलम की तदबीर करतें हैं।औलिया के सबब बला दूर होती है, औलिया के सबब रोज़ी मिलती है, मदद मिलती है उनके सबब ज़मीन क़ाएम है वग़ैरा वग़ैरा। "और अल अमनो वल उला" में यह सब क़ुर्आन व हदीस से साबित किया।

जब मो० रशीद अहमद गंगोही ने अल्लाह तआला के झूठ बोलने को मुमकिन करार दिया तो शहर मेरठ से सवाल आया। आप ने उसके जवाब में मुक़द्दस किताब "सुब्हानस्सुब्बूह" लिखी। इस नूरानी किताब में आपने सच्चे खुदा को झूठ का ऐब लगाने वाले तमाम वहाबियों पर दो सौ कोड़े (एतराज़ात) की ऐसी शदीद ज़र्ब लगाइ कि जिससे वहाबियत के क़िले की ईंट से ईट बज गई। अगर वहाबिया इस किताब के उन दो सौ एतराज़ात का जवाब दें जो आला हज़रत ने उन पर क़ायम किए और साबित किया कि अल्लाह तआला झूट जैसे ऐब से पाक है उसका लिए झूट बोलना मुहाल है। आज उस किताब को लिखे सौ साल से भी ऊपर गुज़र गए कोई इसका जवाब न लिख सका।

मौ० क़ासिम नानूतवी ने अपनी किताब तहज़ीरून्नास में जब हुज़ूर के खातमुन्नबिय्यीन (आख़िरी नबी) होने का इंकार किया (जबकि शुरू ही से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्लम को आख़री नबी तसलीम किया गया है और इसके इन्कार को कुफ्ऱ माना गया है।) तो आला हज़रत ने अपनी तहरीरों में इस बदअक़ीदगी का जम कर रद्द किया।

मो० रशीद अहमद गंगोही के शार्गिद मो० ख़लील अहमद अम्बेठी ने अपनी किताब बरहाने क़ाते मे शैतान और मलिकुल मौत के इल्म को हुज़ूर के इल्म से ज़्यादा बताया तो आला हज़रत तड़प उठे और आम मुसलमानों को इस घिनौने अक़ीदों से ख़बरदार करना अपना फ़र्ज़ समझा क्योंकि यह हनफ़ी, सुन्नी, नमाज़ी, हाजी बनकर ईमान पर डाके डाल रहे थे और सीधे मुसलमानों को तक़वे की आड़ में गुमराह कर रहे थे।आज सय्यदे आलम की पेशनगोई सही साबित हो रही थी और अब वह वक़्त आ गया था

ज़ब खुलकर रद्द करना और इनसे ख़बरदार करना फ़र्ज़ हो गया था।

मुबल्लिग़ –ए– वहाबियत मो० अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब हिफ़ज़ुल ईमान में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्म के लिए कुल इल्मे ग़ैब का इंकार करते हुए सिर्फ़ बाज़ इल्मे ग़ैब (थोड़ा या कुल से कम ग़ैब का इल्म) को हुज़ूर के लिए साबित किया और साथ ही लिख दिया कि इसमें हुज़ूर की क्या तख़सीस (ख़ासियत) ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद अम्र बल्कि हर सबी (बच्चा), मजनून (पागल), बल्कि जमीअ (सारे) हैवानात और बहाएम के लिए भी है।

मो० अशरफ़ अली थानवी जो देवबन्दियों के हकीमुलउम्मत कहलाते हैं, सैकड़ों किताबें लिख चुके हैं और आम मुसलमान उनकी शोहरत से मुतास्सिर था। तो ऐसे में आला हज़रत का इस फ़ासिद और बेहूदा अक़ीदे से होशियार करना निहायत ज़ुरूरी व फ़र्ज़ था और अब वह वक़्त आ गया था कि इन पर हुक्म लगाया जाए।

वहाबियों की किताबों में कहा जा रहा था अम्बिया व औलिया से मदद मांगना मुसीबतों में या रसूलल्लाह, या अली मुशकिल कुशा, या ग़ौस पुकारना हुज़ूर या उनके महबूब ग़ुलामों को मदद के लिए पुकारना, हुज़ूर अम्बिया के लिए इल्मे ग़ैब साबित करना (अल्लाह की अता से) मीलाद करना, ज़िक्र विलादत के वक़्त क़याम ताज़ीमी, दफ़न के बाद क़ब्र पर अज़ान देना, अपनी औलाद का नाम अब्दुल नबी, अब्दुल रसूल, ग़ुलाम मुईनुद्दीन, हुसैन बख़्श, इमाम बख़्श रखना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम सुनकर अगूँठे चूमना वग़ैरा सब बाते शिर्क कुफ़्र और बिदअत हैं। सुन्नी, हनफ़ी और चिश्ती बनकर मुसलमानों को इन ताज़ीमी बातों से रोक कर तौहीन का सबक़ पढ़ाया जा रहा था ऐसे वक़्त में आला हज़रत ने क़ुरआन व हदीस के दलाइल के अम्बार लगा कर हर मौज़ूँ पर मुसलमानों को अपनी तहरीरों से मुतमइन किया बल्कि बार–बार इन बदअक़ीदों से बचने को होशियार किया। जो हज़रात किसी के बहकावे में आकर इन मसाइल में शक रखते हों वह अपने अक़ीदों को पुख़्ता करने व बचाने के लिए आला हज़रत की तसनीफ़ात को पढ़े और दीगर उलमाए अहले सुन्नत की किताबें पढ़ें।

अब जब बात हद से बढ़ चुकी थी तो आला हज़रत ने इन लोगों को तहरीरों से समझाया, ज़ाती ख़ुतूत लिखे रजिस्ट्रियाँ भेजीं मगर यह बाप

न आए। तब आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु ने "अलमोतक़ाद अल मुस्तनद" जो तेरह सौ इक्कीस हिजरी में पटना से छपी, में फ़तवा दिया और फ़रमाया कि थानवी, गंगोही, नानूतवी, अम्बेठी, अपनी इबारतों में अल्लाह तआला की तक़ज़ीब, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तौहीन और ज़रूरी अक़ीदे ख़त्में नुबुव्वत का इंकार के सबब ब हुक्म –ए– शरा इसलामिया क़तअन यक़ीनन काफ़िर व मुरतद हैं और इसलाम से .ख़ारिज हैं और ऐसे काफ़िरों के हक़ में बहवाला फ़रमाया कि जो शख़्स इन के कुफ़्री अक़ाइद से आगाह होकर इन के काफ़िर होने में और अज़ाब पाने में शक करे तो वह भी काफ़िर है।

आला हज़रत ने "अलमोतक़ाद अल मुस्तनद" की वह सारी बहसें जो वहाबियों के पेशवाओं और मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी की इबारतों के बारे में थीं और अपना फ़ैसला शरइया उन सब को रिसाला मुबारक हुसामुल हरमैन में लिखकर मक्का मुअज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरा के अकाबिर उलमा–ए– इसलाम के सामने जब तस्दीक़ के लिए पेश किया तो उन हज़रात ने मुत्तफ़िक़ा (एक होकर) तौर पर फ़तवा दिया कि ऐसी गंदी कुफ़्री इबारतें लिखने के सबब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी, मो० कासिम, नानूतवी, गंगोही, अम्बेठी और थानवी बहुक्म –-ए– शरा और इसलामिया बिला शक –ओ– शुबा काफ़िर –ओ– मुरतद हैं फिर उन उलमाए इसलाम ने आला हज़रत के फ़तवे की तसदीक़ व तौसीक़ पर ही बस न किया बल्कि साथ ही साथ आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु को दुआंए दी और अज़ीम –ओ– जलील फ़ज़ाइल के साथ याद करते हुए अपना पेशवा तसलीम किया। मक्का मुअज़्ज़मा के बीस और मदीना मुनव्वरा के तेरह मशहूर –ओ– मारूफ़ आलिमों ने दस्तख़त किए।

फेर आला हज़रत ने हुसामुल हरमैन को हिन्दुस्तान (उस वक़्त पाकिस्तान और बंगलादेश की इसी में शामिल था) के कोने –कोने में लगभग सत्तर जगह तसदीक़ को भेजा। सैकड़ों जाने माने मुफ़्ती उलमा और तातर ज़िला खेड़ा गुजरात के दो सौ अड़सठ मुफ़स्सिरीन--ए– किराम, फ़ुक़हा, मुहद्दिसीन आली मक़ाम, मुफ़्तीयाने किराम, उलमाए इसलाम मशाइख़ वग़ैरा ने "हुसामुल हरमैन" की तसदीक़ की।

अब साफ़ हो गया कि आला हज़रत ने क्यों रद्द –ए– वहाबिया पर ज़ोर दिया, और किस अंदाज़ से सिसिलेवार यह मुजद्दिदाना काम अंजाम

दिया जैसा कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि अल्लाह हर सदी में एक शख़्स ऐसा ज़ाहिर फ़रमाएगा जो मेरे दीन को सवांरेगा। बिला शुबा चौधवी सदी का वह शख़्स सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल –ए– बरेलवी हैं।

फ़ैज़ाबाद के तारीख़ी मुक़्दमें में हुसामुल हरमैन का ऐलाने हक़

हुसामुल हरमैन का मुक़द्दस फ़तवा अभी तक सिर्फ़ उलमाए इसलाम में अपनी हक़ गोई (हक़ बात कहना) की सनद हासिल कर चुका था। लेकिन ग़ैब से ऐसा सामान पैदा हुआ कि कचहरी और कोर्ट के मैजिस्ट्रेट साहब से भी उसने अपनी हक़्क़ानियत का लोहा मनवा लिया। इसका मुख़्तसर वाक़्या यूँ है कि हज़रत शेर बेशी सुन्नत अल्लामा हशमत अली ख़ाँ लखनवी अलैहिर्रहमा वर्रिदवान ने ज़िला फ़ैज़ाबाद के कस्बा मदरसा में और उसके आस पास 22 मई 1946 से 6 जून 1946 तक मुसलसल तक़रीरें फ़रमाई जिनमें आप मज़हबे अहले सुन्नत की तबलीग़ और सुन्नी मुसलमानों की नसीहत व हिदायत के लिए हुसामुल हरमैन वग़ैरा के मज़ामीन पढ़कर सुनाते रहे। वहाबियों के कुफ़्री अक़ाइद से आगाह करने के लिए आप वहाबियों की कुफ़्री इबारतों को उनकी किताबों से खोल खोल कर दिखाते रहे। जिसका नतीजा यह हुआ कि बहुत से वहाबी देवबन्दी जो अपने पेशवाओं के कुफ़्री अक़ीदे से वाक़िफ़ न थे, तौबा करके सुन्नी मुसलमान हो गए। जब वहाबियों ने देखा कि अल्लामा लखनवी के हाथों वहाबियों की मट्टी पलीद हो रही है तो उन्होंने अपने उलमा से साज़िश करके अल्लामा लखनवी के ख़िलाफ़ मैजिस्ट्रेट एम० पी० अग्रवाल शहर फ़ैज़ाबाद के इजलास में इस्तेग़ासा दायर कर दिया जिसमें यह इल्ज़ाम लगाया कि :–

मुल्ज़िम मौलाना हशमत अली) ने बतारीख 8 जून 1946 को नौ बजे शब को एक तक़रीर की जिसमें उसने मजमए आम में वहाबियों के पेशवाओं को काफ़िर –ओ– मुरतद कहा है जिससे नुक़्से अमन का अन्देशा है। लिहाज़ा दफ़ा 298, 500 और 153 a के तहत कार्यवाही की जाए।

जब आप 12 जून 1946 को कोर्ट में पेश हुए तो वहाबियों की किताबें और उनके कुछ हिस्से हिन्दी में करके कोर्ट में पेश किए और वही कोर्ट

में वहाबियों की तरफ़ से आए मो० अबुल वफ़ा से आपका मनाज़रा ज़ज के सामने हुआ मगर अहमद रज़ा के इस शेर के सामने मो० अबुल वफ़ा की एक न चली और वह देवबन्दी कुफ़्रियात पर पर्दा डालने में नाकाम रहा।

मैजिस्ट्रेट ने तमाम हवालों और इस मनाज़रे के नतीजे में यह फ़ैसला दिया कि:– मुल्ज़िम ने आठ जून को कोई तक़रीर नहीं की हाँ वह ऐतराफ़ करता है कि उसने इससे पहले तक़रीरें की हैं और उसने कुछ किताबें तक़रीरों में पढ़ी थी जिसका कुछ हिस्सा मैंने भी देखा जिसमें वहाबियों के मौलवियों (अशरफ़ अली, रशीद अहमद, कासिम नानूतवी, और ख़लील अहमद) को इस्लामी फ़तवों से काफ़िर –ओ– मुरतद कहा गया है। गवाहों ने भी यही कहा है। मेरा ख़्याल है कि मुल्ज़िम का फ़ेल बिल्कुल दुरूस्त था कि वह किताब से पढ़ रहा था और मुल्ज़िम यह बात नेक नियती से पब्लिक की भलाई के लिए कर रहा था कि वह मज़हबी बात समझ लें। इसलिए मुल्ज़िम का फ़ेल दफ़ा 500 ताज़ीरात –ए-- हिन्द नहीं आता। मुल्ज़िम की तक़रीर से पब्लिक के झगड़े के ख़तरे के मुताल्लिक़ कुछ गवाहों ने यह बयान किया कि मुल्ज़िम की तक़रीर सुनकर बहुत से वहाबी लोग उसकी बातें समझ कर मुल्ज़िम के हम मज़हब (सुन्नी) हो गए। इसके मायने यह होते हैं का वाज़ बड़ा दिलचस्प था।

इस मुक़दमें में एक्सपर्ट मौलाना अबुल वफ़ा को पेश किया गया मुल्ज़िम ने मज़हबी उमूर में ख़ुद बड़ी लम्बी जिरह उस पर की मौलाना अबुल वफ़ा की गवाही को मुक़दमें की गवाही के बजाए मज़हबी मनाज़रा कहना ज़्यादा मुनासिब है।

मेरे ख़्याल से तो आठ जून को तो कोई तक़रीर नहीं हुई हाँ उससे पहले जो तक़रीरें हुईं उसमें भी मुल्ज़िम पर दफ़ा 500, 153, 298 से जिनका इलज़ाम उस पर लगाया गया है, से बरी और बेक़ुसूर है और उसे बा इत्मिनान बरी करता हूँ।

सेशन जज का फ़ैसला

फ़ैज़ाबाद के इस तारीख़ी फ़ैसले ने वहाबियों मे हलचल मचा दी। उनके सारे मनसूबे पर ख़ाक पड़ गई। वहाबियों की मौलाना हशमत अली ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह को जेल भेजने की तमन्ना अधूरी रह गई। चुनांचे उन्होंने अपनी इस नाकामी को कामयाबी में बदलने के लिए एक बार

फिर ज़ोर बांधा और मजिस्ट्रेट के इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ सेशन जज याक़ूब अली के इजलास में अपील दायर कर दी। कोर्ट के जज ने अपील पर फ़ैसला बरक़रार रखते हुए सुन्नीयों के हक़ में दोबारा फ़ैसला करते हुए 28 अप्रेल 1949 को अपील ख़ारिज कर दी।

बाद में यह फ़ैसला अंग्रेज़ी और ।ह दी ज़बान में छाप कर शाय भी किया गया। जो हज़रात देखना चाहें वह सवानेहे आला हज़रत मुसन्निफ़ मौलाना बद्रुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह की उर्दू की किताब में देख सकते हैं। और इस तरह अल्लााह तआला ने हुसामुल हरमैन की हक़्क़ानियत को और ज़्यादा उजागर फ़रमा दिया।

मुकफ़्फ़िरूल मुसलेमीन (मुसलमानों को काफ़िर करने वाला)

.ख़ुदा –ए– तआला का वह बरगज़ीदा बन्दा जिस की क़लम ऐसी तलवार थी कि जिसके हमले से बेदीनों के कलेजे फट जाते थे। जो गौस–ए– आज़म का सच्चा नाएब, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सुल्तानुल हिन्द का सच्चा जानशीन इसलाम की बुनियाद को मज़बूत करने वाला कुफ़्र के किलों को ढाने वाला।जब उसने अल्लाह पाक की बेऐब ज़ात पर झूठ का ऐब लगाने वालों, हुज़ूर–ए– अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में सारीह गालियां लिखने वालों, मसअला ख़त्में नबुव्वत का इंकार करने वालो को मौत के घाट उतार दिया तो वहाबियों देवबन्दियों नदवियों वग़ैरह ने इस जलील –ओ– क़द्र मोमिन के ख़िलाफ़ यह बोहतान लगाया ताकि आम मुसलमान भड़के कि आला हज़रत मुकफ़्फ़िरूल मुसलेमीन (मुसलमानों को काफ़िर बनाने वाले, कहने वाले) हैं, बात बात पर मुसलमानो को काफ़िर बनाने वाले हैं हालांकि आला हज़रत ने किसी भी मुसलमान को काफ़िर नहीं बनाया बल्कि जो झूठे मक्कार मुरतद अपने आप को मुसलमान कहलवाते रहे ऐसे मुसलमान कहलाने वालों को काफ़िर बताया। और यह काम मुसलमानों का ध्यान बटाने के लिए किया गया। कि कोई मुसलमान वहाबियों नुमाइशी तक़वे से मुतास्सिर होकर उन्हें मुरतद न समझे। हालांकि किताबुत्तौहीद में मुहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी ने, तक़वीयतुल ईमान में मो० इस्माईल देहलवी ने बहशती ज़ेवर में अशरफ़ अली थानवी ने भोले मुसलमानों को मुशरिक और काफ़िर बात–बात पर बताया अब यहाँ चन्द हवाले पेश किये जाते हैं जिनसे

साफ़ ज़ाहिर होता है कि सादा लौह मुसलमानों को किस अन्दाज़ से साफ़–साफ़ मुशरिक कहा जा रहा है ।

1– कोई मुसलमान जो नबी –ए– क़रीम अलैहिस्सलातु व तसलीम और उनके सहाबा को पूजता है कि इस तरह की इन हज़रात को वह अपना शफ़ीअ (शफ़ाअत करने वाला) और मददगार समझता है और हुज़ूर अलैहिस्सलातु व तसलीम को या सहाबा को अपना शफ़ीअ व मददगार मानना सरीह शिर्क है। मआज़ अल्लाह। (किताबुत्तौहीद)

2– बेशक .क़ुरआन के खुले हुए इशारों से साबित हो चुका है कि जो मुसलमान नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और दूसरों को अपना मददगार समझता है तो वह अबू जहल के बराबर मुशरिक है।
(किताबुत्तौहीद)

3– जिस किसी मुसलमान ने कहा कि या रसूलल्लाह मैं हुज़ूर की शफ़ाअत माँगता हूँ या नबी मेरी हाजत पूरी होने के लिए अल्लाह तआला से दुआ कर दीजिए। या रसूलल्लाह मैं हुज़ूर का वास्ता देकर अल्लाह से माँगता हूँ और हुज़ूर के वसीले से अल्लाह की तरफ़ मुतावज्जो होता हूँ वह बहुत बड़ा मुशरिक है और जितने मुसलमान भी हुज़ूर को पुकारते हों वह बहुत बड़े मुशरिक हैं।
(किताबुत्तौहीद)

4– तो उन झूठे मुशरिकों के क्या हाल हैं जो अपनी औलादों का नाम अब्दुल रसूल, अब्दुल नबी रखते हैं। (किताबुत्तौहीद)

5– मौ० इस्माईल देहलवी तक़वीयतुल ईमान के सफ़ा 15 पर लिखते हैं

फिर जब कोई किसी पीर पैग़म्बर को या भूत पलीत को या किसी सच्ची क़ब्र को या झूटी क़ब्र को या किसी थान को या किसी चिल्ले को या किसी के मकान को या किसी के तबर्रुक को या निशान को या ताबूत को सजदा करे या रुकू करे या उस नाम का रोज़ा रखे या हाथ बांध कर खड़ा होवे या जानवर छुड़ावे या ऐसे मकान में दूर–दूर से क़सदन (.जान बूझ कर) करके जावे या वहाँ रौशनी करे, गिलाफ़ डाले, चादर चढ़ावे, उनके नाम की छड़ी खड़ी करे, रुख़सत होते वक़्त उलटे पाँव चले, उनकी क़ब्र को बोसा देवे मोरछल झले, उस पर शामयाना खड़ा करे, चौखट को बोसा देवे, हाथ बाँधकर इल्तिजा करे, मुराद माँगे मुजाविर बनकर बैठे वहाँ के गिर्द पेश के जंगलो का अदब करे और इस किस्म की बातें करे उस पर शिर्क साबित होता है।
(तक़वीयतुल ईमान – इस्माईल देहलवी)

6– मो० अशरफ़ अली थानवी बहशती ज़ेवर सफ़ा 45,46 पर कुछ इस तर
लिख रहें है

किसी को दूर से पुकारना और समझना कि उसको ख़बर हो गई किसी से मुरादें माँगना किसी के सामने झुकना, सेहरा बाँधना, अली बख़्श, हुसैन बख़्श, अब्दुल नबी वग़ैरा नाम रखना यूँ कहना कि ख़ुदा और रसूल अग चाहेगें तो फ़लाना काम हो जायेगा कुफ़्र –ओ– शिर्क है। (बहशती ज़ेवर)

इन हवालों से आप ख़ुद अंद्राज़ कर सकते हैं कि ज़रा ज़रा सी बात पर मुसलमानों को काफ़िर और मुशरिक यहाँ तक कि अबू जहल बताया जा रहा है। इनके हिसाब से तो शायद ही कोई बचा होगा.जिसने कभी न कभी शिर्क न किया हो। अब आप ख़ुद ही फ़ैसला करें कि मुसलमानों को काफ़िर और मुशरिक कौन बना रहा है। हाँ आला हज़रत ने इन मुशरिक बनाने वालों को ज़ुरूर काफ़िर –ओ– मुरतद बताया है बल्कि हरमैन शरीफ़ैन के उलमा ने इन्हें काफ़िर बताया है। लिहाज़ा मुकफ़्फ़िर मुसलेमीन कौन है,अब आप ख़ू समझ गये होंगे।

हरमैन मुक़द्दस की दोबारा हाज़री

आला हज़रत ने पहला हज 1295 हिजरी (1878 ई.) किया 1323 हिजरी 1906 इ. की बात है आपके भाई मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ाँ और आपके बड़े साहबज़ादे मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ मय मुताल्लेक़ीन ह के इरादे के से बरेली से रवाना हुए और आला हज़रत उन हज़रात क लखनऊ तक पहुँचा कर वापस बरेली आ गये लेकिन चूंकि तक़दीरे इलाही इसलाम व सुन्नीयत की अहम अहम ख़िदमतें इस दफ़ा की हाज़री मुताल्लिक़ थी, इसलिए मसलहते ख़ुदावन्दी ने आपके क़ल्ब व रूह में हेजा (बेचैनी) पैदा किया कि आपने पहले से बग़ैर किसी तैयारी के अचानक इरादा फ़रमाया और ट्रेन में सवार होने से पहले अपनी रवानगी का एक तार बरेली स्टेशन से बम्बई रवाना किया। जब जुमे के दिन सुबह आठ बजे बम्बई स्टेश पर पहुँचे तो देखा कि हाजी क़ासिम वग़ैरा अहबाब गाड़ियाँ लिए मौजूद हैं। सलाम व मुसाफ़े के बाद उन लोगों का पहला लफ़्ज़ यही था कि हुज़ूर वक़्त शहर को न चलें, वक़्त कम है सीधे क़र्नतीना चलिए। अभी आप रिश्तेदार दाख़िल नहीं हुए हैं क्यूँकि कल जब डाक्टर हाजियों की आ

जमाअत को भपारा दे चुका तो उसे सख़्त घबराहट पैदा हुई। उसने कहा कि अब बाक़ी लोगों का भपारा कल जुमा को होगा। इस तरह मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ साहब और आपके बाक़ी अज़ीज़ बाक़ी रह गये हैं। लिहाज़ा अब सीधे क़र्नतीना चलना है। चुनांचे आला हज़रत क़र्नतीना पहुँचे अल्लाह तआला का फ़ज़्ल आपको भी जगह उसी जहाज़ में मिल गई जिसमें सब अपने ही लोग थे और इस तरह आप दूसरे हज के लिए रवाना हुए और हज फ़रमाया।

कुतुबख़ाना हरम और फ़ाज़िले जलील मौलाना इस्माईल अलैहिर्रहमा

आला हज़रत ने 1361 हिजरी (1868 ई०) में एक फ़तवा लिखा जिसका नाम फ़तावल हरामैन लेरजफ़ेनदवतिलमैन उसमें 28 सवालों के मुदल्लल (दलील के साथ) जवाब आला हज़रत ने दिये हैं। जब यह फ़तवा हाजियों के ज़रिए फ़ाज़िल जलील मौलाना सय्यद इस्माईल और दूसरे उल्माए मक्का की ख़िदमत में पेश हुआ तो उन हज़रात ने उस फ़तवे को अपनी तसदीक़ात और तक़रीज़ात से नवाज़ा और आला हज़रत की बहुत तारीफ़ें की। यही वह फ़तवा है कि जिसकी वजह से उलमांए मक्का ख़ुसूसन मौलाना सय्यद इस्माइल आला हज़रत से बड़ी अक़ीदत रखते थे। और आप से मुलाक़ात के ख़्वाहिशमन्द थे। इसी साल यानी दूसरे हज के मौक़े पर जब आला हज़रत हज से फ़ारिग़ हो गये। एक दिन हुज्जतुल इसलाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ को साथ लेकर कुतुबख़ाना हरम में पहुँचे उस वक़्त मौलाना सय्यद इस्माईल कुतुबख़ाने में थे लेकिन आला हज़रत से ताअर्रुफ़ न था।

आला हज़रत ने कुछ किताबें मौलाना सय्यद इस्माईल से निकलवाई और पढ़ने में मशग़ूल हो गये। हाज़रीन में से किसी ने यह मसअला पूछा कि ज़वाल से पहले रमी (शैतान के कंकरी मारना) करना जाएज़ है या नहीं ? मौलाना सय्यद इस्माईल ने जवाब दिया यहाँ के उलमा ने जवाज़ का फ़तवा दिया है फिर इसी मसअले के मुताल्लिक़ मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ और सय्यद इस्माईल साहब में गुफ़्तगू होने लगी।इस दरमियान आला हज़रत से भी यह मसअला दरयाफ़्त किया गया। आप ने जवाब दिया कि ज़वाल से पहले रमी करना मज़हबे हनफ़िया के ख़िलाफ़ है। इसी मसअले पर गुफ़्तगू होने लगी। मौलाना इस्माईल फ़ौरन अलमारी से किताब निकाल लाए। उसमें वैसे ही लिखा था जैसे आला हज़रत ने फ़रमाया मौलाना सय्यद इस्माईल ने आला हज़रत के मुताल्लिक़ मौलाना हामिद रज़ा से कान मे पूछा कि यह कौन हैं

अगरचे मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ को भी नहीं जानते थे मगर उस वक़्त गुफ़्तगू उन्हीं से हो रही थी। मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ ने बताया कि आपका नाम आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी है। नाम सुनते ही मौलाना इस्माईल अपनी जगह से बेताबाना दौड़ते हुए आये और आला हज़रत से लिपट गये। फिर तो उनकी अक़ीदत और महब्बत का यह आलम था कि जब तक आला हज़रत मक्का मुअज़्ज़मा रहे आप रोज़ ही उनसे मुलाक़ात के लिए उनकी क़यामगाह पर जाते अक़ीदत और महब्बत का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मौलाना इस्माईल 1338 हिजरी (1910 ई०) में सिर्फ़ आला हज़रत से मुलाक़ात के लिए बरेली तशरीफ़ लाए। हुसामुल हरमैन की तसदीक़ करने में जिन तेतिस उलमा के दस्तख़त हैं उनमें सब से क़ाबिल शख़्स मौलाना सय्यद इस्माईल ही थे।

दौलते मक्किया

आला हज़रत को लोगों ने बताया कि यहाँ वहाबी पहले से आये हुए हैं जिनमें ख़लील अहमद अम्बेठी, और हिन्द के बाज़ वुज़रा और रूऊसा भी हैं। उन्होंने शाह हिजाज़ शरीफ़ अली पाशा तक पहुँच पैदा कर ली है। शाही दरबार में मसअला इल्मे ग़ैब पर गरमा गरम बहसें जारी हैं और इस मसअले से मुताल्लिक़ कुछ सवालात क़ाज़ी मक्का मुकर्रमा रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल की ख़िदमत में हुए थे यह सुनकर आप रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल के दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ ले गये। मौलाना वसी अहमद मुहद्दिस सूरती अलैहिर्रहमा के साहबज़ादे मौलाना अब्दुल अहद भी साथ थे। वहाँ पर आपने फ़सीह और सलीस अरबी में दो घन्टे मुसलसल तक़रीर फ़रमाई और आयात अहादीस व अक़वाल के हवाले से वहाबियों के सारे ऐतराज़ात का मुँह तोड़ जवाब दिया।

25 ज़िलहिज्ज 1323 हिजरी को आला हज़रत अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर कुतुबख़ाना हरम की जानिब तशरीफ़ ले जा रहे थे। जब दफ़्तर के ज़ीने पर चढ़ने लगे तो पीछे से आहट मालूम हुई, देखा तो रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल हैं। सलाम व मुसाफ़े के बाद दोनों हज़रात कुतुबख़ाने के दफ़्तर में जाकर बैठे। उस वक़्त वहाँ दूसरे उलमा के अलावा मौलाना सय्यद इस्माईल और उनके भाई मौलाना सय्यद मुस्तफ़ा और उनके वालिद मौलाना सय्यद ख़लील भी थे। हज़रत मौलाना स्वालेह कमाल ने जेब

ने एक परचा निकाला जिस पर इल्मे ग़ैब से मुताल्लिक़ पाँच सवाल थे। उन्होंने यह परचा आला हज़रत की तरफ़ बढ़ाते हुए फ़रमाया कि यह सवालात वहाबियों ने सय्येदिना शरीफ़ अली पाशा के ज़रिए पेश किये है और आप से जवाब चाहते हैं। आला हज़रत जवाब लिखने के लिए फ़ौरन तैयार हो गये और मौलाना सय्यद मुस्तफ़ा से फ़रमाया कि क़लम दवात दीजिए। इन लोगों ने फ़रमाया हम लोगों को तफ़सीली जवाबात चाहिए मुख़्तसर नहीं। आला हज़रत ने फ़रमाया कि इस तरह के जवाब के लिए कुछ मौहलत चाहिए मौलाना सालेह कमाल ने फ़रमाया कि कल मंगल परसों बुद्ध है। आप दो रोज़ में जवाब मुकम्मल फ़रमा दें और हमें जवाब जुमेरात तक मिल जाए और मैं सय्येदिना शरीफ़ के सामने पेश कर दूँ। आला हज़रत ने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और नबी –ए– करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इनायत पर भरोसा करके वायदा फ़रमा लिया। शाने इलाही दूसरे ही दिन दोबारा से बुख़ार आ गया लेकिन आप इसी हालत में दौलत –ए– मक्किया बराबर लिखते गये और आप के साहबज़ादे हुज्जतुल इसलाम मौलाना हामिद रज़ा वो उसकी तबईज़ (fare) करते रहे मक्का मौअज़्ज़मा में इस बात की गूँज हो चुकी थी कि आला हज़रत इल्मे ग़ैब पर किये गये वहाबियों के सवालातों का जवाब लिख रहे हैं। अभी दौलत –ए– मक्किया की क़िस्म अव्वल ख़त्म हुई थी जिसमें मसलके अहले सुन्नत का सुबूत है और क़िस्म दोयम लिखी जा रही थी जिसमें वहाबियों का रद्द था और उनके सवालों का जवाब था इसी बीच हज़रत शैख़ुल ख़तीब कबीरूल उलमा मौलाना अहमद अबुल ख़ैर मर्दाद का पैग़ाम पहुँचा कि मैं चलने से माज़ूर हूँ, रिसाला दौलत –ए– मक्किया सुनना चाहता हूँ। आला हज़रत उनके यहाँ तशरीफ़ ले गये और जितना हिस्सा लिख चुके थे उन्हे सुनाया हुज़ूर कबीरूल उलमा ने सुनकर बहुत पसंद फ़रमाया और ये ख़्याल ज़ाहिर किया कि इस रिसाले में इल्मे ख़म्स (यानी माँ के पेट का इल्म, कल क्या होगा वग़ैरह) की बहस नहीं आई आला हज़रत ने फ़रमाया इसके मुताल्लिक़ कोई सवाल न था। वह बोले मेरी ख़्वाहिश है कि इसमें इल्मे ख़म्स की बहस का इज़ाफ़ा किया जाए। आला हज़रत ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया। आला हज़रत वहाँ से वापस तशरीफ़ लाए और शाम ही को इल्मे ख़म्स को बढ़ा दिया। बुद्ध के दिन जब आला हज़रत फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर आए तो इतने में मौलाना सय्यद अब्दुल हई इब्ने मौलाना सय्यद अब्दुल कबीर मुहद्दिस

मुल्क मग़रिब का ख़ादिम पयाम लाया कि हमारे मौलाना आप से मिलना चाह हैं। मौलाना सय्यद अब्दुल हई यह वह जलीलुश्शान फ़ाज़िल थे कि जिनकी इस वक़्त चालिस किताबें छप चुकी थी। आला हज़रत ने ख़्याल फ़रमाया कि वायदे में आज ही का दिन बाक़ी है, अभी बहुत कुछ लिखना है इसलिए आप ख़ादिम से फ़रमाया कि तुम्हारे मौलाना आज के लिए मॉफ़ी दें, कल मै .खु ही मुलाकात को हाज़िर हो जाऊँगा और फ़ौरन वापस आकर बताया कि हमा मौलाना आज ही मदीने तय्यबा जा रहे हैं और उनके क़ाफ़िले के ऊँट शह के बाहर जमा हो चुके हैं, ज़ोहर की नमाज़ के बाद सवार हो जाएंगे। मजबू होकर आला हज़रत ने मौलाना सय्यद अब्दुल हई से मुलाक़ात को राज़ी हो गये। चुनांचे वह तशरीफ़ लाए और आला हज़रत से उलूम हदीस की इजाज़त तलब फ़रमाई और लिखवाई इसके बाद इल्मी बातें होती रहीं। यहाँ तक कि ज़ोहर की अज़ान हो गई। बाद –ए– नमाज़ वह मदीने शरीफ़ रवाना हो गये आज के दिन का ज़्यादा हिस्सा यूँही निकल गया और साथ ही बुख़ार भी है। लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ले ख़ास ने इशा के बाद दौलत –ए– मक्किया को पूरा करा दिया और जुमेरात की सुबह को यह किताब हज़रत मौलाना स्वालेह कमाल के यहाँ पहुँचा दी गई

"दौलत –ए– मक्किया" आला हज़रत की ज़िन्दा जावेद करामत है। आप ने बुख़ार की हालत में सिर्फ़ साढ़े आठ घन्टे में बग़ैर किसी किताब की मदद से अपनी .खुदादाद याददाश्त के बल पर इस किताब को पूरा फ़रमाया। और तफ़ासीर अहादीस के दलाएल से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब को साबित किया और वहाबियों को बड़ा करारा जवाब बड़े कम वक़्त में पेश किया।

कुछ बदमज़हब सुन्नीयों पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब के बारे में सुन्नी हज़रात हद से .गुज़र जाते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म को अल्लाह तआला के इल्मे ग़ैब के बराबर बताते हैं। इसलिए यहाँ यह बताना .ज़ुरूरी है कि सुन्नीयों और आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी का इल्मे ग़ैब के बारे में क्या अक़ीदा है। आला हज़रत की अलमलफ़ूज़ में है कि शाहजहाँपुर के एक साहब आये और उन्होंने यही बात आला हज़रत से पूछी आप ने इरशाद फ़रमाया इसका फ़ैसला .क़ुरआन –ए– करीम ने फ़रमा दिया

जो मेरे अक़ाएद हैं वह मेरी किताबों में छप कर शाय हो चुके हैं। हमारा अक़ीदा है अल्लाह तआला ने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है। यह नबी इल्मे ग़ैब बताने में बख़ील नहीं बराबर तो दरकिनार मैंने अपनी किताबों में तसरीह कर दी है कि अगर अव्वलीन व आख़रीन का इल्म जमा किया जाये तो उस इल्म का इल्मे इलाही से वह निसबत हरगिज़ नहीं हो सकती जो एक क़तरे के करोड़वें हिस्से को समुन्द्र से है कि यह निसबत मुतानाही (इन्तेहा यानी आख़ीर तक पहुँचने वाला) की मुतानाही के साथ है और वह ग़ैर मुतानाही। मुतानाही को ग़ैर मुतानाही से क्या निसबत है। इस मिसाल में फिर भी कोई हद है और अल्लाह के इल्म की कोई हद नहीं।

एक दूसरी जगह लिखते हैं कि इल्म ज़ाती अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला से ख़ास है उसके ग़ैर के लिए मुहाल (नामुमकिन) है जो इसमें से कोई चीज़ एक ज़र्रा से कमतर ग़ैर ख़ुदा के लिए माने यक़ीनन वह काफ़िर और मुशरिक है।

हमन इल्मे इलाही से मसावात (बराबरी) मानें न ग़ैर ख़ुदा के लिए ज़ाती इल्म मानें और जो भी इल्म माना वह अल्लाह की अता से माना उसके अलावा जो ऐतक़ाद मेरी तरफ़ से रखे वह बहुत बड़ा झूठा है और अल्लाह के यहाँ इसका हिसाब।

एक जगह इसकी तशरीह और वज़ाहत करते हुए लिखते हैं इल्मे इलाही ज़ाती है और इल्म ख़ल्क़ अताई (यानी अल्लाह तआला का इल्म ख़ुद से है किसी की देन नहीं जबकि मख़लूक़ का इल्म अल्लाह की अता से है) वह वाजिब है या मुमकिन, वह क़दीम (हमेशा से)। यह हादिस (जो बाद में पैदा हुई हो) वह नामख़लूक़ है। यह मख़लूक़ वह नामक़दूर है यह मक़दूर (मक़दूर किया गया)। वह ज़ुरूरी बक़ा (हमेशा रहने वाला) यह जाएज़ुलफ़ना (फ़ना होने वाला)। वह मुमतनाउलतग़य्युर (जिसमें तबदीली न हो सके) वह मुम्किनुत्तबदील (जो तबदील हो सके)

शाहे हिजाज़ का दरबार पुर वक़ार

रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल ने 28 ज़िलहज्जा 1323 को दिन ही में दौलते मक्किया को पूरा पढ़ा और शाम को शरीफ़ अली पाशा के यहाँ लेकर पहुँचे। ईशा की नमाज़ वहाँ अव्वल वक़्त में हो जाती है फिर

बारह बजे रात तक शरीफ़ अली पाशा का दरबार होता था। हज़रत रईसुलउलमा ने दरबार में किताब पेश की। और अलल ऐलान फ़रमाया कि आला हज़रत अहमद रज़ा ने वह इल्म ज़ाहिर किया जो हमारे ख़्वाब में भी न था। शरीफ़ अली पाशा ने किताब पढ़ने का हुक्म दिया दरबार में दो वहाबी अहमद फ़गी और अब्दुर्रहमान अस्कोबी बैठे थे। उन्होंने दौलते मक्किया के शुरू के चन्द सफ़हात सुनकर अंदाज़ा कर लिया कि यह किताब रंग बदल देगी इसलिए उन्होनें चाहा कि बहस में उलझाकर वक़्त गुज़ार दें। चुनांचे किताब पर कुछ ऐतराज़ किया। मौलाना स्वालेह कमाल ने जवाब दिया और आगे बढ़े। उन्होंने फिर ऐतराज़ किया।मौलाना ने उसका भी जवाब देकर फ़रमाया आप हज़रात क़िताब को सुन लीजिए पूरी किताब को सुनने से पहले ऐतराज़ बेमौक़ा है कि हो.सकता है आपके शुबहात का जवाब किताब ही में हो और अगर न होगा तो मैं जवाब का ज़िम्मेदार हूँ और मुझ से जवाब न हो सका तो .ख़ुद किताब का मुसन्निफ़ मौजूद हैं। इतना कहकर आगे पढ़ना शुरू किया कुछ दूर पहुँचे तो वहाबियों ने फिर एक ऐतराज़ जड़ दिया। क्योंकि उनका मतलब तो उलझाना था। अब हज़रत मौलाना ने शरीफ़ अली पाशा की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि आपका हुक्म है मैं किताब पढ़ कर सुनाँऊ और यह लोग बार–बार उलझा रहे हैं अगर आप हुक्म दें तो मैं इनके ऐतराज़ों के जवाब दूँ या हुक्म हो तो किताब सुनाँऊ। शरीफ़ ने फ़रमाया आप किताब पढ़िए शाही फ़रमान के बाद अब कौन बोल सकता था। वहाबियों का मुँह सिल गया और हज़रत मौलाना किताब सुनाते रहे उसके दलाइले क़ाहिरा सुनकर शरीफ़ अली ने बाआवाज़ बलन्द कहा "अल्लाह ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्म –ए– ग़ैब अता फ़रमाया है और यह वहाबिया मना करते हैं। आधी रात तक आधी किताब के मज़ामीन सुनाए जा चुके थे, अब दरबार बर्ख़ास्त होने का वक़्त आ गया। शरीफ़ ने हज़रत मौलाना स्वालेह कमाल साहब से फ़रमाया कि यहाँ निशानी रख दीजिए और फिर किताब बग़ल में लिए हुए बालाख़ाने तशरीफ ले गए और फिर वह किताब उन्हीं के पास रह गई। बहुत से उलमा ने किताब की नकलें लीं।किताब की शोहरत पूरे शहर में फैल गई। वहाबियों पर ओस पड़ गई। बिफ़ज़्लिही तआला उनके सब लोहे ठन्डे हो गये।मक्का मुअज़्ज़मा के बच्चे देखते तो मज़ाक़ उड़ाते कि अब क्यों नहीं बोलते तुम्हारे जोश क्यों रफ़ू चक्कर हो गए प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मानने वालों को काफ़िर कहना किधर गया तुम्हारा कुफ़्र–ओ– शिर्क तुम ही पर पलटा। वहाबिया जवाब देते मौलाना अहमद रज़ा ने मन्तिकी तक़रीरें भर कर शरीफ़ पर जादू कर दिया है।

ख़तरनाक मन्सूबा

शहर मक्का में दौलते मक्किया का डंका बज रहा था अब उलमाए किराम ने उस पर तसदीकें और तक़रीज़ें लिखनी शुरू कीं। हक़ का ग़लबा देखकर वहाबियों का दिल जलता लेकिन बस कुछ न चलता। ग़ौर के बाद उन्होंने यह तय किया कि किसी तरह फ़रेब बल्कि तमाम तक़रीज़ात बरबाद कर दी जाएं। चुनांचे वह सब इकट्ठे होकर मौलाना क़बीरूलउलमा अबुल ख़ैर की ख़िदमत में पहुँचे और कहा दौलते मक्किया पर हम भी तक़रीज़ लिखना चाहते हैं, लिहाज़ा किताब मंगवा दीजिए। वह सीधे मुक़द्दस बुज़ुर्ग वहाबियों के फ़रेब को क्या जानें। अपने साहबज़ादे मौलाना अब्दुल्लाह को आला हज़रत की ख़िदमत में भेजा। यह मौलाना अब्दुल्लाह हरम शरीफ़ के इमाम और आला हज़रत के मुरीद थे। जब मौलाना अब्दुल्लाह पहुँचे आला हज़रत उस वक़्त कुतुबख़ाना हरम में थे और हज़रत मौलाना इस्माईल भी वहीं मौजूद थे।आला हज़रत के कुछ बोलने से पहले ही मौलाना इस्माईल ने हाशमी जलाल के साथ फ़रमाया कि किताब हरगिज़ नहीं दी जायेगी। जो साहब तक़रीज़ लिखना चाहते हों वह लिख कर यहीं भिजवा दें। आला हज़रत ने फ़रमाया मौलाना अबुल ख़ैर मंगवा रहे हैं और उनके साहबज़ादे मौलाना अब्दुल्लाह जो मेरे मुरीद भी हैं लेने आए हैं तो ऐसी सूरत में इंकार मुनासिब नहीं किताब भिजवा देनी चाहिए। मौलाना इस्माईल ने फ़रमाया जो लोग जमा हुए हैं मैं उन्हें जानता हूँ, वह मुनाफ़िक़ हैं।मौलाना अबुल ख़ैर को उन्होंने धोखा दिया है। इस तरह मौलाना इस्माईल के हाशमी जलाल ने किताब को वहाबियों के हाथ से बचा लिया और वहाबियों का मनसूबा नाकाम रहा।

गवर्नर मक्का मुअज़्ज़मा अहमद रातिब पाशा

जब अली पाशा के दरबार में दुश्मनानें दीन का मुँह काला हो गया साथ ही उनका ख़तरनाक मनसूबा भी ख़ाक में मिल गया तो उन्होंने अब तीसरी करवट बदली एक नाख़्वान्दा जाहिल शैख़ अब्दुल क़ादिर शैबी को जो नाएबुल हरम कहलाता था शेख़ मासूम व अहमद फ़गी वग़ैरा ने झूठ व फ़रेब की पट्टी पढ़ाकर अपने मुवाफ़िक़ बना लिया और अहमद रातिब पाशा के पास

भेजा जो उस ज़माने में मक्का मुअज़्ज़मा के गवर्नर थे,। अहमद रातिब पाशा नाख़्वान्दा फ़ौजी आदमी मगर दीनदार थे रोज़ाना अस्र के बाद क़ाबे शरीफ़ का तवाफ़ करते। वहाबियों ने सोचा कि अली पाशा तो एक इल्म वाले आदमी थे। किताब सुनकर मोतक़िद हो गए और यह बेपढ़ा फ़ौजी आदमी हमारे भड़काने से भड़क जाएगा। यह दिन का ज़िक्र है। ज़ब अहमद रातिब पाशा तवाफ़ से फ़ारिग हुए तो अब्दुल क़ादिर नाएबुलहरम ने उनसे मुख़ातिब होकर कहा कि हुज़ूर एक हिन्दुस्तानी आलिम अहमद रज़ा ने हिन्दुस्तान में बहुत से लोगों को अक़ीदे बिगाड़ दिए हैं और अब अहले मक्का के अक़ीदे ख़राब करने आया है। फिर नाएबुलहरम ने सोचा कि गवर्नर यह कैसे मान लेगा कि एक हिन्दुस्तानी शख़्स मक्के वालों के अक़ीदे बिगाड़ देगा। इसलिए मजबूर होकर उसे इतना कहना पड़ा कि शैख़ुल उलमा सय्यद मुहम्मद सईद बाबुसैल, रईसुलउलमा मौलाना शैख़ स्वालेह कमाल और कबीरूल उलमा मौलाना अबुल ख़ैर वग़ैरा अकाबिर उस हिन्दुस्तानी आलिम के साथ हो गए हैं। अल्लाह तआला की शान जो बात नाएबुलहरम ने मजबूरन कही थी उस पर उलटी पड़ी। अहमद रातिब पाशा ने सख़्त नाराज़ होकर एक चपत उसकी गर्दन पर लगाई और कहा ऐ ख़बीस के बेटे ख़बीस ऐ कुत्ते के पिल्ले जब यह बड़े--बड़े उलमाए किराम उस हिन्दुस्तानी आलिम के साथ हैं तो वह अक़ीदे ख़राब करेगा या इस्लाह करेगा इस तरह नाएबुल हरम और वहाबियों ने मुँह की खाई।

रईसुल उलमा की ख़िदमत में रिशवत की पेशकश

जब रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल अली पाशा के दरबार में दौलते मक्किया सुनाने गए थे तो इसी दरमियान आप ने शरीफ़ अली पाशा से ख़लील अहमद अम्बेठी के अक़ाइद बातला उनकी किताब बराहीन क़ातेअ का भी जिक्र कर दिया था। ख़लील अहमद अम्बेठी को जब ख़बर मिली तो आपके पास कुछ अशर्फ़ियाँ नज़राना लेकर पहुँचे और अर्ज़ की हज़रत आप मुझ पर क्यों नाराज़ हैं। हज़रत मौलाना ने फ़रमाया क्या तुम ख़लील अहमद हो ? बोले हाँ मेरा नाम ख़लील अहमद है। आपने फ़रमाया तुझ पर अफ़सोस तूने बरहाने क़ातेआ में इतनी सख़्त बातें कैसे लिखीं। मैं तो तुझे ज़िन्दीक़ लिख चुका हूँ। इससे पहले मौलाना ग़ुलाम दस्तगीर क़ुसीरी लाहौरी की एक किताब की तक़रीज़ में मौलाना स्वालेह क़माल ख़लील अहमद और रशीद अहमद गंगोही को ज़िन्दीक़ लिख चुके थे।

मो० अम्बेठी ने कहा साहब जो बातें मेरी तरफ़ निसबत की गई है वह मेरी किताब में नहीं हैं, लोगों ने मुझे इल्ज़ाम दिया है। आपने फ़रमाया तुम्हारी किताब बरहाने क़ातेअ छप कर शाय हो चुकी है और वह मेरे पास भी मौजूद है। जब ख़लील अहमद ने देखा कि अब भांडा फूटने वाला है तो बोल उठा कि हज़रत क्या कुफ़ से तौबा नहीं हो सकती। हज़रत मौलाना ने जवाब दिया हो सकती है फिर आपने चाहा किसी मुतर्जिम को बुलांए और अम्बेठी साहब को बरहाने क़ातेअ़ की वह कलमात दिखा कर तौबा लें। मगर अम्बेठी साहब रात ही में जद्दा भाग गये। हज़रत मौलाना स्वालेह साहब ने इस वाक़ये की इत्तेला का ख़त हज़रत मौलाना सय्यद इस्माईल को भेजा। उन्होंने वह ख़त आला हज़रत की ख़िदमत में भेज दिया। सुबह को जब मौलाना स्वालेह कमाल ख़ुद आला हज़रत की बारगाह में तशरीफ़ लाए और वाक़या बयान करके फ़रमाया सुना है ख़लील अहमद रात को जद्दा भाग गया। आला हज़रत ने फ़रमाया मौलाना आप ने भगा दिया। रईसुल उलमा ने ताअज्जुब से कहा मैंने भगा दिया ? आला हज़रत ने फ़रमाया हाँ आप ने। तो उन्होंने पूछा यह कैसे ? आला हज़रत ने फ़रमाया कि जब ख़लील अहमद ने पूछा कि क्या काफ़िर की तौबा क़बूल नहीं होती ? उस वक़्त आप ने क्या जवाब दिया रईसुल उलमा ने फ़रमाया कि मैंने कहा होती है। आला हज़रत ने फ़रमाया बस आपके इस जुमले ने इसे भगाया। आपको तो यह कहना चाहिए था कि जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान पाक में गुस्ताख़ी और तौहीन करे उसकी तौबा क़बूल नहीं होती। उन्होंने फ़रमाया वल्लाह बात तो मुझ से रह गई।

नोट :– बारगाहे रिसालत में गुस्ताख़ी करने वाले की तौबा क़बूल न होने का मतलब यह है कि सुलताने इसलाम बाद तौबा भी उसे मौत देगा यानी तौबा करने के बाद वह सज़ाए मौत से बच नहीं सकता। लेकिन अगर उसने सच्चे दिल से तौबा कर ली है तो उसका कुफ़्र मिट जाएगा, वह मुसलमान क़रार पायेगा। दुर्रे मुख़्तार में है जो शख़्स किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी के सबब काफ़िर हुआ। उसकी तौबा किसी तरह क़बूल नहीं। फ़ुक़्हाए किराम के इस इरशाद के मायने यही हैं कि अदमें क़बूले तौबा सिर्फ़ हाकिम इसलाम के यहाँ है।

मौलाना अब्दुल्ला इब्ने सिद्दीक़ हनफ़िया

मक्का शरीफ़ में आला हज़रत का क़याम बीमारी की वजह से 23 सफ़र 1326 तक रहा। आला हज़रत के इल्मो फ़ज़्ल का चर्चा हर तरफ़ फ़ैल चुका था। उलमाए मक्का ने बकसरत आला हज़रत की दावते कीं। हर दावत में उलमा का मजमा होता, इल्मी बाते होतीं, उलमा आप से सनद हासिल करते और इजाज़तें लिखवाते आपकी क़यामगाह पर सुबह से बारह बजे रात तक मुलाक़ात व ज़ियारत करने वाले उलमा वग़ैरह का मजमा रहता

ख़ुद आला हज़रत दावतों के अलावा सिर्फ़ चार हज़रात रईसुल उलमा मौलाना स्वालेह कमाल, शैख़ुल उलमा मौलाना सय्यद मुहम्मद बाबुसैल, शैख़ुद्दलाइल मौलाना अब्दुल हक़ मुहाजिर मक्की और कुतुबख़ाने में मौलाना सय्यद इस्माईल के पास तशरीफ़ ले जाया करते थे, बाक़ी दूसरे उलमा और हज़रत मौलाना स्वालेह कमाल, मौलाना मुहम्मद सईद, मौलाना इस्माईल आला हज़रत की क़यामगाह पर तशरीफ़ ले आते। शैख़ुद्दलाइल मौलाना शाह अब्दुल हक़ अलैहिर्रहमा जो मक्का शरीफ़ में लगभग चालीस साल से रह रहे थे। इस अरसा दराज़ में कभी शरीफ़ मक्का के यहाँ भी तशरीफ़ नहीं ले गए लेकिन ज़ईफ़ी के बावजूद आप आला हज़रत के क़यामगाह पर दो मरतबा तशरीफ़ लाए। अलग़र्ज़ हज़रत मौलाना अब्दुल्ला इब्ने सिद्दीक़ जो इस वक़्त मुफ़्ती हनफ़िया थे। उनके अलावा पूरे शहर मक्का में इस वक़्त कोई ऐसा आलिम न था जो आला हज़रत की मुलाक़ात व ज़ियारत को न आया हो। मुफ़्ती हनफ़िया को उनके जलील –ओ– क़द्र मनसब ने आला हज़रत की क़यामगाह पर तशरीफ़ लाने से रोका। क्योंकि वहाँ मुफ़्ती हनफ़िया का मनसब शाह हिजाज़ शरीफ़ से दूसरे दरजे पर समझा जाता था। लेकिन आला हज़रत के इल्मी कमालात को सुन–सुन कर उनका मुलाक़ात का शौक़ बढ़ता ही रहा। यहाँ तक कि एक दिन उन्होंने अपने एक शागिर्द –ए– ख़ास को भेजा। उनके शागिर्द ने आला हज़रत की ख़िदमत में गुज़ारिश की। हज़रत मुफ़्ती हनफ़िया से मौलाना अब्दुल्ला ने बादे सलाम फरमाया है कि मैं आपकी ज़ियारत का बहुत मुशताक़ हूँ।

उस वक़्त आला हज़रत के पास मौलाना सय्यद इस्माईल भी तशरीफ़ फरमा थे। आला हजरत ने चाहा कि मुफ़्ती हनफ़िया के यहाँ जाने को

वायदा कर लें कि इतने में मौलाना सय्यद इस्माईल ने फ़ौरन रोका और फरमाया कि .ख़ुदा की क़सम यह हरगिज़ न होगा। तमाम उलामा .ख़ुद मिलने आते हैं वह क्यों नहीं आते। आंला हज़रत इस शहज़ादए हाशमी की क़सम की वजह से मजबूर हो गये और वायदा न कर सकें। लेकिन तक़दीर इलाही में एक नई शान से मुलाक़ात होना मंज़ूर था।

वाकया यूँ था कि इसी ज़माने में मौलाना अब्दुल्लाह मर्दाद इमाम हरम शरीफ और मौलाना मुहम्मद अहमद जदावी ने नोट के मुताल्लिक आला हज़रत की खिदमत में एक इस्तिफता पेश किया जिसमें बारह सवाल थे। आला हज़रत ने उसके जवाब में किताब "किफ़्लुलफ़क़ीह" तसनीफ़ करनी शुरू की जो बिफज़्लिही तआला 23 मुहर्रम 1324 को मुकम्मल हो गई। फिर यह किताब तबईज़ (fair) के लिए कुतुबख़ाना हरम में हज़रत मौलाना सय्यद मुस्तफा के पास भिजवाई गई। क्योंकि मौलाना निहायत ख़ुशख़त (good writting) आलिम थे।

4 सफ़र 1324 को आला हज़रत "किफ़लुल फ़क़ीह" की तसहीह (cheeking) के लिए कुतुख़ाना हरम में पहुँचे देखा कि एक शानदार आलिम बैठे हुए "किफ़लुल फ़क़ीह" पढ़ रहे हैं। जब उस मकाम पर पहुँचे जहाँ आला हज़रत ने "फ़तहुलक़दीर" की यह इबारत नक़ल की थी कि "अगर कोई शख़्स अपने काग़ज का टुकड़ा हज़ार रूपये में बेचे तो बिला किराहत जायज़ है। तो फड़क उठे और अपनी रान पर हाथ मार कर बोले हज़रत जमाल इब्ने अब्दुल्ला इस नस–ए–सरीह से कहाँ ग़ाफ़िल रह गये।

जब गुज़शता (गुज़रा हुआ) ज़माने में हज़रत मौलाना जमाल इब्ने अब्दुल्ला इब्ने उमर मक्की अलैहिर्रहमा मुफ़्ती हनफ़िया थे; तो उन से भी नोट के बारे में सवाल हुआ था। उन्होंने जवाब लिखा था कि इल्म उलमा की गर्दनों में अमानत है। मुझे इसके जुज़िये का कहीं पता नहीं चला कि क्या हुक्म है।

मौजूदा मुफ़्ती हनफ़िया अब्दुल्ला इब्ने सिद्दीक़ का इशारा उन्हीं की जानिब था। फिर मौलाना अब्दुल्लाह को कोई मसअला देखना था। उसके लिए किताब निकलवाई और उनकी इबारत नक़ल करना चाहते थे। इधर आला हज़रत "किफ़लुल फ़क़ीह" को असल से मिलाने में मशग़ूल हुए उस वक़्त तक न आला हज़रत ने मौलाना अब्दुल्लाह अलैहिर्रहमा को जाना कि

मौजूदा मुफ़्ती हनफ़िया यही हैं और न उन्होंने आला हज़रत को जाना इसी बीच दवात उन्होंने एक ऐसी किताब पर रखी कि न वह उसे पढ़ रहे थे न उससे कुछ नक़ल कर रहे थे। आला हज़रत ने उन पर कोई ऐतराज़ नहीं फ़रमाया बल्कि किताब की ताज़ीम के लिए दवात उतार कर नीचे रख दी। वह बोले कि बहरूर्राइक़ किताबुल क़राहियह में है कि दवात किताब पर रखना जायज़ है। आला हज़रत ने उनसे यह तो नहीं फ़रमाया बहरुर्राइक़ किताबुल क़राहियह तक कब पहुँची वह किताब किताबुल क़ज़ा ही में ख़त्म हो गई है। हाँ इतना फ़रमाया कि ऐसे नहीं बल्कि मुमानअत आई है। मगर लिखते वक़्त ज़ुरूरत के लिए जायज़ है मसलन हवा की वजह से किताब के वर्क़ उड़ते हों तो उस वक़्त उस पर दवात रखनी जायज़ है। उन्होंने फ़रमाया मैं लिखना ही तो चाहता हूँ। आला हज़रत बोले लेकिन अभी आप लिखते तो नहीं फिर वह ख़ामोश हो गये और मौलाना सय्यद इस्माईल से पूछा यह कौन आलिम हैं ? उन्होंने जवाब दिया यही आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा हैं जिनकी तसनीफ़ "किफ़लुल फ़क़ीह" अभी आप पढ़ रहे थे। अब मिले मगर शरमाते हुए। फिर फ़ौरन तशरीफ़ ले गए।

हुसामुल हरमैन पर उलमा की तक़रीज़ात (Comments)

आला हज़रत ने मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी, मो० गंगोही मो० थानवी मौ० अम्बेठी और मौ० नानूतवी पर उनके अक़ायदे कुफ़्रिया पर कुफ़्र लाज़िम होने के सबब कुफ़्र का फ़तवा दिया। जो 1903 ई० में "अलामोतमद" में पटना से शाय हुआ फिर आप ने अपने इसी मुक़द्दस सफ़र में अलमोतमद" का ख़ुलासा रिसाला "हुसामुल हरमैन" मे नक़ल फ़रमा कर उलाए मक्का के सामने पेश किया। अकाबिर उलमा ने दौलते मक्किया के साथ-साथ हुसामुल हरमैन पर भी नेहायत धूम धाम के साथ तक़रीज़ात व तसदीक़ात तहरीर फ़रमाई।

उलमाए जफ़र बारगाहे आला हज़रत में

इल्मे जफ़र एक बहुत मुश्किल इल्म है और इसके सीखने वाले भी बहुत कम मिलते हैं और इसके जानने वाले बहुत कम मिलते हैं। 1294 हिजरी में मौलाना सय्यद शाह अबुल हुसैन नूरी मारहरवी अलैहिर्रहमा ने आला हज़रत को एक क़ायदा सिखाया था। दीगर किताबों और इसी इल्मे जफ़र से

आला हज़रत ने सवाल कर कर के इस इल्म में उबूर हासिल किया इस इल्म में आपकी तसनीफ़ "सफ़रूस्सफ़र" है। यह मुक़द्दस शहर इल्म का मरकज़ है। यहाँ ज़ुरूर इस इल्म के जानने वाले मौजूद होंगे। एक साहब के बारे में पता चला कि इल्मे जफ़र में मशहूर हैं मालूम हुआ वह मौलाना अहमद दहहान मक्की के छोटे साहबज़ादे अब्दुल रहमान हैं। आप न उन्हें बुलाया तन्हाई में कई घन्टे गुफ़्तगू रही जिसका नतीजा यह निकला कि मौलाना अब्दुल रहमान के पास जो कुछ नाक़िस क़ायदे थे वह पूरे हो गये।

इसी तरह का एक वाक़या मदीनए तय्यबा में पेश आया वहाँ भी एक साहब अब्दुल रहमान आफ़न्दी शामी नाम के आला हज़रत को मिले जो मुसलसल कई रोज़ तशरीफ़ लाते और देर तक बैठ कर चले जाते। एक दिन आला हज़रत ने हाज़री की ग़र्ज़ पूछी। जवाब दिया तन्हाई में कहूँगा। दूसरे दिन उनके लिए वक़्त मुक़र्रर हुआ। तशरीफ़ लाये बोले मैं इल्मे जफ़र में कुछ बातें करना चाहता हूँ। जब गुफ़्तगू हुई तो उन पर ज़ाहिर हो गया कि इल्मे जफ़र इतना आसान नहीं जितना उन्होंने समझा था। कहने लगे मेरा यहाँ क़याम ज़्यादा दिन तक रहेगा, न आपका। लिहाज़ा मैं इस इल्म को सीखने के लिए आपकी ख़िदमत में हिन्दुस्तान आऊँगा। वह तो न आ सके मगर मौलाना सय्यद अब्दुल क़ादिर मदनी के साहबज़ादे मौलाना सय्यद हुसैन मदनी बरेली शरीफ़ आये और चौदह माह आला हज़रत के यहाँ रहे इस मुद्दत में उन्होंने इल्मे जफ़र, इल्मे औफ़ाक़ और इल्म तफ़सीर सीखा इसी फ़न में आला हज़रत ने अरबी ज़ुबान में एक रिसाला उन्हें लिखकर दिया। इल्मे जफ़र में मौलाना सय्यद हुसैन मदनी को इतनी .कुदरत हासिल हो गई थी कि पाँच सवालों में दो का सही जवाब निकाल लेते थे। आला हज़रत उनके मुताल्लिक़ फ़रमाते थे कि अगर वह चन्द महीने और रह जाते तो सब के जवाब सही निकालने लगते आप ने उन्हें तालीम देने से पहले जो इल्मे जफ़र से सवाल किया तो जवाब मिला .ज़ुरूर सिखाईए कि इतनी दूर से यहाँ इसी के वास्ते आये है फिर रूख़सत के वक़्त अपनी इजादात (Reserch) जो आला हज़रत ने इस फ़न में की थी, उन्हें नज़र फ़रमाई और .खुद इस फ़न को तर्क का इरादा कर लिया जिस की वजह यह थी कि लोगों के सवालात करना आप के ख़ालिस दीनी काम में रूकावट थे।

सरकार-ए-आज़म मदीनए तय्यबा को रवानगी

24 सफ़र 1324 हिजरी (19 अप्रैल 1906) को आला हज़रत काबए तन से काबए जॉ मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ रवाना हुए। इस ज़माने में यह सफ़र ख़ुशकी में ऊँट और दरिया में कशती से तय करते थे, मोटर गाड़ियों का इंतेज़ाम न था। आला हज़रत चूँकि बीमार थे इसलिए यह सफ़र आपने जद्दे तक ऊँट से और जद्दे से राबिग़ तक बड़ी कशती से। इस सफ़र में राबिग़ के सरदार शैख़ हुसैन आप के साथ थे जिन्होंने आला हज़रत को मदीने पाक तक बहुत सहूलते दीं। राबिग़ में भी आला हज़रत के फजलो कमाल का चर्चा रहा। सरदार हुसैन के भाई ईब्राहीम अपने ख़ानदान के एक नजाई (झगड़े वाला) मुक़दमा जो मुद्दत से बेफ़ैसला पड़ा था पेश किया और आप ने शरई हुक्म बयान करके कुछ ही देर में फ़ैसला भी करा दिया। राबिग़ से ऊँट के ज़रिए छह दिन में मदीने शरीफ़ पहुँचे।

एक मुख़ालिफ़ मदीना तय्यबा के जेल ख़ाने में

मदीनए तय्यबा के एक हिन्दुस्तानी साहब शैख़ुल हरम उसमान पाशा तक कुछ रसाई रखते थे। वह एक मदरसे के नाम पर हिन्दुस्तान वग़ैरह मुमालिक से चन्दा भी मगांया करते थे। यह साहब भी दुश्मनाने दीन की बातों में आकर आला हज़रत के मुख़ालिफ़ हो गए। अभी आला हज़रत मक्का मुअज़्ज़मा में ही थे कि आपकी आमद की शोहरत मदीनए मुनव्वरा में भी हो गई। यह हिन्दुस्तानी साहब यह बोले कि मौलाना अहमद रजा ने तो मक्का मुअज़्ज़मा में तो अपना सिक्का जमा लिया यहाँ आने दो आते ही उनको क़ैद करा दूँगा। अभी आला हज़रत का क़याम मक्का में था कि इन्हीं साहब के ख़िलाफ़ धोके से चन्दा मगाँने का चार्ज लगा और यह जेल भेज दिये गये। जब आला हज़रत मदीनए तय्यबा आये तो यह साहब सज़ा काट चुके थे। मस्जिद –ए– नब्वी में आला हज़रत से मुलाक़ात की और फ़रमाया कि तन्हाई में मिलना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया आप उलमा का हुजूम देख रहें हैं मुझे तो तन्हाई आधी रात में मिलती है और बारह बजे के बाद हुकूमत की तरफ़ से आने जाने पर पाबन्दी है। उन्होंने कहा मुझ पर कोई बन्दिश नहीं है। फिर वह हाज़िर हुए और अपनी पिछली बदगुमानी की माफ़ी चाही। आला हज़रत ने माफ़ फ़रमा दिया। फिर वह साहब जब हिन्दुस्तान आये तो दो मरतबा आला हज़रत से मुलाक़ात को आए। परदापोशी की वजह से आला हज़रत ने उनका नाम ज़ाहिर नहीं फ़रमाया।

आलम -ए- बेदारी में (जागते में) ज़ियारत की दौलते कुबरा

आला हज़रत उन आशिके रसूल में से हैं जिनके नज़दीक हरमैन शरीफ़ैन की हाज़री का अस्ल मक़सद आस्तानए नुबुव्वत की ज़ियारत है। आशिक़ाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एंतक़ाद है कि अगर ज़ियारत की नियत न हो तो हज्जे काबा का कोई लुत्फ़ हासिल नही होता। चुनांचे आला हज़रत अपने इस एतक़ाद को अपने एक शेर में यूँ फ़रमाते हैं–

उसके तुफ़ैल हज भी ख़ुदा ने करा दिया
अस्ल मुराद हाज़री उस पाक दर की है
काबे का नाम तक नहीं लिया तैबा ही कहा
पूछा था जिसने मुझ से नुज़हत किधर की है

हदीस शरीफ़ में है कि हर शख़्स लिए वही चीज़ है जिसकी उसकी नियत है। चूंकि आला हज़रत की नियत ख़ालिस थी इसलिए अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सारे दुनियावी हिजाबात (परदे) अपने सच्चे आशिके रसूल अहमद रज़ा के लिए हटा दिये और आला हज़रत ने हालते बेदारी में अपने आक़ा –ओ– मौला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अपनी सर की आँखों से देखा और ज़ियारते मुक़द्दस की दौलते कुबरा (बहुत बड़ी दौलत) नसीब हुई।

मौलवी सय्यद शाह जाफ़र मियाँ साहब ख़तीब जामा मस्जिद कपूरथला ने अपने वालिद साहब के उर्स के मौक़े पर बयान किया कि आला हज़रत जब मदीनए तय्यबा हाज़िर हुये तो शौक़े दीदार में मवाज़ए अक़दस में दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहे और यक़ीन किया कि सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज़ुरूर करम फ़रमायेगें। लेकिन पहली शब दीदार न हो सका तो एक ग़ज़ल लिखी जिसका मतला (पहला शेर) यह है :–

वह सूऐ लालाज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

यह ग़ज़ल अर्ज़ करके इंतेज़ार में बैठे थे कि किस्मत जाग उठी *और* जागते में सर की आँखों से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई।

आला हज़रत उलमाए मदीना के झुरमुट में

मदीनए तय्यबा में आला हज़रत की हाज़री से पहले ही आपके इल्मो फ़ज़ल का शोहरा और आपके सच्चे इश्क़ का चर्चा पहुँच चुका था। यहाँ उलमाए मदीना इस सच्चे आशिक़ –ए– रसूल नाएब नबी का बेक़रारी में इन्तज़ार कर रहे थे।

शैख़ुद्दलाइल हज़रत मौलाना शाह अब्दुल हक़ मुहाजिर मक्की अलैहिर्रहमा के मुख़लिस शागिर्द हज़रत मौलाना करीम उल्लाह मुहाजिर मदनी अलैहिर्रहमा का बयान है कि हम सालों से यहाँ मदीने पाक में रह रहे हैं। हज़ारों उलमा दुनियाँ के कोने–कोने से यहाँ आते हैं, जूतियाँ चटकाते हैं कोई बात नहीं पूछता चले जाते हैं लेकिन आला हज़रत के पहुँचने से पहले ही उलमा तो उलमा अहले बाज़ार तक आप की ज़ियारत और मुलाक़ात के ख़्वाहिशं मन्द थे। चुनांचे आप जब मदीनए तय्यबा हाज़िर हुये तो सुबह से इशा तक उलमाए मदीना का हुजूम रहता मुलाक़ात व ज़ियारत करने वालों की भीड़ बारह बजे से पहले हटने का नाम नहीं लेती यहाँ तक कि किसी को तन्हाई में आला हज़रत से मिलना होता तो वह आधी रात क़े बाद ही मिल पाता। शैख़ुद्दलाइल हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद सईद मगरिबी की अक़ीदत का यह आलम था कि आप आला हज़रत को सय्यदी कहकर मुख़ातिब करते। एक मरतबा आला हज़रत ने उनसे फ़रमाया कि हज़रत सय्यद तो आप हैं वह बोले वल्लाह सय्यद (सरदार) तो तुम हो। आला हज़रत ने फ़रमाया कि मैं सय्यदों का ग़ुलाम हूँ। उन्होंने फ़रमाया तो यूँ भी सय्यद हुये सय्यदे आलम नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि कौम का आज़ाद शुदा ग़ुलाम उन्हीं में से है।

जो मर्द –ए– मोमिन प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इज़्जत–ओ– अज़मत पर अपनी इज़्ज़त को क़ुर्बान कर देता है और फ़नाफ़िर रसूल की मन्ज़िल पर पहुँच जाता है तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह से ऐसी ही इज़्ज़त नसीब होती। छोटे बड़े सब उसे इज़्ज़त देते हैं।

मक्का मुअज़्ज़मा के उलमए किराम की तरह मदीना तय्यबा में भी उलमा ने आला हज़रत से सनदें हासिल की इजाज़तें लीं। यह सिलसिला मदीने पाक से वापसी तक क़ायम रहा यहाँ तक कि रवानगी के दिन तक जब काफ़िले के ऊँट आ गये और उस पर सवार होने की तैयारी हो चुकी तो उ

वक़्त तक उलमाए किराम इजाज़तें लिखवाते रहे।

हुसामुल हरमैन की तसदीक़ात और दौलते मक्किया पर तक़रीज़ात का काम यहाँ भी शान--ओ--शौकत से हुआ। मुफ़्ती शाफ़इ मौलाना सय्यद अहमद बरज़ंजी ने तो हुसामुल हरमैन की तसदीक़ में एक मुसतक़िल रिसाला लिखा। यहाँ के उलमा ने दौलते मक्किया की नक़लें हासिल कीं और हज़रत मौलाना करीम उल्लाह मुहाजिर मदनी ने तो जो नक़ल हुसामुल हरमैन की अपने पास रखी थी उसे बाहर से आने वाले उलमा जैसे मिस्र शाम बग़दाद वग़ैरह को दिखाते और उनके तक़रीज़ात लिख कर आला हज़रत को डाक से भेजा करते थे।

हिन्दुस्तान को वापसी

आला हज़रत का क़याम मदीने पाक में 31 दिन रहा वहाँ से वापसी पर कुछ दिन बम्बई भी रहे। घर की मसतूरात (औरतें) को आपने मौलाना मुहम्मद रज़ा और हुज्जतुल इसलाम मौलाना हामिद रज़ा के साथ बरेली भेज दिया। यहाँ पर आला हज़रत का यह सफ़र नामा अलमलफ़ूज़ हिस्सा दोयम से नक़ल किया गया है जो कि मुख़तसर है। ज़्यादा मालूमात के लिए अलमलफ़ूज हिस्सा दोयम देखें।

हिन्दुस्तान में वहाबियों ने यह ख़बर गरम कर रखी थी कि मौलाना अहमद रज़ा को मक्के में गिरफ़्तार कर लिया गया है। चुनांचे सुन्नियों ने मौलाना शाह अब्दुल हक़ मुहाजिर मक्की को ख़त भेजे। हज़रत मौलाना ने जवाब दिया ख़बीसों का किज़्ब (झूट) ख़बीस है। आला हज़रत को वह इज़्ज़त मिली है जो किसी को नसीब नहीं हुई।

ज़मानए क़रीब के उलमाए मक्का

हकीक़त यह है कि आला हज़रत से मनसब व रिफ़अत से जिस कद्र उलमाए हरमैन वाक़िफ़ थे उतने हिन्दुस्तानी नहीं। इसका अन्दाज़ा पीछे गुज़रे वाक़यात से ख़ूब हो जाता है। लेकिन यह वाक़यात 1324 हिजरी के हैं। जब आला हज़रत इस दुनियाँ में थे और मक्का मुअज़्ज़मा में शरीफ़ की हुकूमत थी। अब कुछ बाद के वाक़यात पेश किए जाते हैं ताकि यह वाज़े हो जाए कि आज भी उलमाए हरमैन में आला हज़रत की अज़मत है। 1379हिजरी (1959 ई०) में मौलाना ग़ुलाम मुस्तफ़ा पाकिस्तानी जब हज व ज़ियारत से वापस आए तो उन्होंने अपने सफ़र नामें पर एक किताब लिखी जिसके कुछ वाक़यात नक़ल किये जाते हैं।

मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी काज़ीउलकुज़ा (चीफ़ जज)

मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा साहब अपनी किताब सफ़रनामा हरमैन के सफ़ा 66 पर लिखते हैं हम लोग इकट्ठे होकर उलमाए हरम की बारगाह में हाज़िर होते। पहली मुलाकात हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईदुल्लाह मक्की से हुई जो बहुत बुज़ुर्ग हस्ती और तीस साल बम्बई रह चुके हैं और अब मक्का शरीफ़ में रह रहें हैं। मौलाना ने फ़रमाया आला हज़रत का पूरे अरब में ढंका बज रहा है। आला हज़रत से जिस कद्र उलमाए हरमैन शरीफ़ैन वाकिफ़ हैं उतना हिन्दुस्तानी नहीं। हज़रत मौलाना ने हम लोगों को बतौर इम्तेहान मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी मालकी के पास भेजा जो इस वक़्त मक्का शरीफ़ के काज़िलउलकुज़ा हैं। उनके वालिद मोहतरम आला हज़रत के हम असर दोस्त थे। हज़रत मौलाना सईदुल्लाह मक्की ने हम लोगों से फ़रमाया कि आप लोग उनसे मुलाकात के बाद कह दें कि हम लोग आला हज़रत के शागिर्दों में से हैं। फिर अपनी आँखों से देख लीजिएगा कि आला हज़रत का इल्म ओ फ़ज़ल का सिक्का किस कद्र उलमाए मक्का पर बैठा हुआ है। और उलमाए अरब में आला हज़रत का कितना ऐहतराम है। जब हम लोग वहाँ पहुँचे। वह नूरानी बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए सलाम और दस्त बोसी के बाद हमने अर्ज़ की हुज़ूर हम लोग आला हज़रत के शार्गिदों के शार्गिद हैं। इतना सुनते ही मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी उठ कर खड़े हो गये और सब से अलग–अलग मुसाफ़ा व मुआनका (गले लगाना) किया और बेहद ताज़ीम की। और दोबारा शर्बत व हलवा पेश हुआ। और हम लोगों पर ख़ास तवज्जो फ़रमाई और एक सर्द आह भरकर बोले हम हज़रत मौलाना अहमद रज़ा बरेलवी को उनकी तसनीफ़ात से पहचानते हैं। उनकी महब्बत सुन्नीयत की अलामत है और उनसे बुग़्ज़ बदमज़हबी की पहचान है। इस मजलिस में बड़े–बड़े रूऊसा तशरीफ़ रखते थे। यह शफ़कत और महब्बत देखकर हम दंग रह गये उन्होंने हमारा सब से ताअर्रुफ़ कराया और बार–बार आला हज़रत का ज़िक्र फ़रमाया।

अल्लामा शैख़ मुहम्मद मग़रिबी अलजज़ाइरी

अल्लामा मुहम्मद मग़रिबी वह बेबाक आलिम–ए– हक़्क़ानी हैं कि जिस वक़्त सऊदी अरब का बादशाह इब्ने सऊद जन्नतुल माला, जन्नतुल बक़ी शरीफ़ के मज़ारात मुक़दिसा को तोड़ रहा था और अपनी बरबरियत दिखा

रहा था।सब लोग दम बख़ुद थे। उस वक़्त अल्लामा शैख़ मुहम्मद मग़रिबी ही की ज़ात थी जिसने खानए काबा की दीवार के नीचे बादशाह के इस जाबराना व ज़ालमाना हरकत के ख़िलाफ आवाज़ बलन्द की और उलमाए हरम को ग़ैरत दिलाई और फ़रमाया ऐ उलमाए हरम तुम कहाँ मुँह छिपाए फिर रहे हो ? आओ हम खानए काबा की इस मुकद्दस दीवार के नीचे कसम खाएं कि हम बादशाह से पूछेंगे कि तू मज़ारात के साथ ज़ुल्म क्यों कर रहा है ? इस का असर हुआ और लोग उठ खड़े हुए हर जगह बादशाह के ख़िलाफ एहतेजाज होने लगा। बादशाह इब्ने सऊद यह देखकर घबरा गया और अल्लामा शैख़ मुहम्मद को कैद कर लिया। अल्लामा ने जेल की वहशतनाक ज़िन्दगी तो कबूल कर ली मगर हक़ कहने में कोई लचक पैदा न होने दी। थोड़े दिनों के बाद बादशाह मर गया और उसका लड़का जो तख़्त पर बैठा तो उसने आपको और आपके साथियो को रिहा कर दिया और मज़ारात की तोड़ फोड़ का सिलसिला भी बन्द हुआ।

इन्हीं बेबाक मर्दे मोमिन की मुलाक़ात का तज़करा करते हुए मौलाना ग़ुलाम मुस्तफा अपने सफर नामे सफ़ा 70 पर लिखते हैं:-

हम लोग दूसरे दिन हज़रत अल्लामा शैख़ मुहम्मद मग़रिबी के दरबार तक पहुँचे यहाँ कमरों की सजावट का अजब आलम था। हर तरफ़ निहायत क़रीने से गाव तकिये लगे थे, कीमती कालीन बिछे थे, बड़ी–बड़ी अलमारी में नायाब किताबें सजी थी। एक तरफ़ टेलीफोन रखा था। बड़े–बड़े फ़र्रासा शैख़ को पंखा झल रहे थे। हबशी जवान पटका बाँधे अदब से खड़े थे। शैख़ निहायत मुअम्मर लेकिन तंदरूस्त थे, चहरे पर बहुत नूर था। हम लोग शैख़ से मिले। शैख़ को जब मालूम हुआ कि हम आला हज़रत के सिलसिले से मुनसलिक हैं तो फिर दोबारा खड़े होकर शैख़ ने मुसाफा व मुआनका किया और बड़ी इज़्ज़त दी। शैख़ ने आला हजरत का बार–बार ज़िक्र फरमाया और फरमाया आला हजरत मेरे हम असर और बहुत दोस्त थे। हम आज भी उनके इल्म–ओ–फज़ल की तारीफ़े करते और उन्हें दुआओं में याद रखते हैं। एक दिन हम लोग शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए मग़रिब की नमाज़ हो चुकी थी। मिस्र, यमन, तुर्की के बड़े–बड़े उलमा मौजूद थे। हम लोगों को देखते ही शैख़ खड़े हो गए। शैख़ के खड़े होते ही ग़ैर मुमालिक़ के उलमा की निगाहें हमारी तरफ़ उठ गई कि यह कौन लोग हैं जिन्हें शैख़ इतनी इज़्ज़त दे रहे हैं। शैख़ ने हम लोगों का ताअर्रुफ़ कराया और आला हज़रत के हालात बयान किये।

आला हज़रत के शार्गिदो के शार्गिदो का उलमाए हरमैन कितनी ताज़ीम फ़रमाते थे इसी से आला हज़रत के मक़ाम का पता चलता है।

मौलाना अब्दुर्रहमान दुरवेश

मौलाना .गुलाम मुस्तफ़ा अपने सफ़रनामे में सफ़ा 74 पर फ़रमाते है :–

मक्का शरीफ़ में हमारी मुलाक़ात दरवेश मौलाना अब्दुर्रहमान साहब क़िबला बाजू से हुई उनसे मिलकर बहुत सी बातें मालूम हुईं। यह निहायत ही हर दिल अज़ीज़ बुज़ुर्ग हैं। मैं दिन के वक़्त गरमी से परेशान होकर उनके मकान पर चला जाता। उनकी उम्र तक़रीबन 80 साल की है लेकिन जवानों से ज़्यादा चुस्त हैं। सिवाए बालों की सफ़ेदी के उन पर बुढ़ापे का कोई अस्र नहीं है। मौलाना अब्दुर्रहमान वह बुज़ुर्ग है कि आला हज़रत के बहुत से तबर्रुकात उनके पास हैं जिनकी मैंने और मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा साहब आज़मी ने ज़ियारत की। उनके पास आला हज़रत की काले रंग की एक शेरवानी, एक रूई दार बंडी, बरेली शरीफ़ के बने ताँबे को दो लोटे और एक मशक मौलाना अब्दुर्रहमान साहब का बयान है कि मुझे ख़ूब याद है कि उलमाए हरमैन जब आला हज़रत से मिलते तो उनकी दस्त बोसी करते और इतना एहतराम फ़रमाते कि मैंने किसी हिन्दुस्तानी आलिम का इतना ऐहतराम करते उन लोगों को नहीं देखा।

आला हज़रत के शार्गिद और .ख़ुलफ़ा

आला हज़रत की तवज्जो ज़्यादा तर तसनीफ़ व इफ़्ता (फ़तवा देना) की तरफ़ ज़्यादा रही फिर भी आला हज़रत ख़ालिस अल्लाह के लिये लोगो को दर्स देते। दूर–दूर से लोग दर्स हासिल करने आते। बाक़ायदा तौर पर रजिस्टर वग़ैरा में नाम लिखे जाते फिर भी लोगों की मालूमात के लिये कुछ शार्गिदों के नाम उर्दू एडीशन में दिये गये है, यहाँ हिन्दी में उन्हें शामिल नहीं किया जा रहा है जिनकी तादाद लगभग बीस है। आला हज़रत को बहुत से सिलसिले की इजाज़त थी जिनके नाम और आला हज़रत के 45 मशहूर .ख़ुलफ़ा के नाम उर्दू एडीशन में देखे जा सकते हैं।

आला हज़रत की आलमगीर इसलामी ख़िदमात

एक जलीलुलक़द्र आलिम अपने ज़माने की दीनी ज़ुरूरयात और उसके तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखने और ज़माने की नब्ज़ को पहचानने के बाद ही सही क़दम उठता है और आख़री फ़ैसला करता है। कोई भी ऐसी शख़्सियत जो किसी मुल्क क़ौम या मुआशरे में इंक़लाब लाती है उसको यह जानना ज़रूरी है कि हम किन राहों से गुज़र कर अपने मक़सद तक कैसे पहुँच सकते हैं और अपनोंऔर दुश्मनों का जवाब किन–किन तरीक़ों से दे सकते हैं।

फ़ाज़िले बरेलवी क़ुद्दिसा सिर्रहु जो अपने वक़्त के ज़ब्रदस्त फ़क़ीह थे। माहिरे उलूमो फ़ुनून के साथ–२ रहनुमाई की भी ज़ब्रदस्त सलाहियत रखते थे। ज़माने की रफ़तार और उसके इन्क़लाबात की पूरी तरह ख़बर रखते थे। उसके तक़ाज़ो और मुतालबात को पूरा करने के लिए उन्होंने बज़ाते ख़ुद और अपने जलीलुलक़द्र ख़ुलफ़ा और शार्गिदों को अपनी रहनुमाई में लेकर ऐसे–ऐसे अज़ीम कारनामें अंजाम दिये जो हमारी इस्लामी तारीख़ को ख़ूब रौशन है। फ़ाज़िल बरेलवी ने दाख़ली और खारजी मोर्चे पर वक़्त के हौलनाक फ़ितनों और बातिल क़ुव्वतों के चढ़ते हुए तूफ़ानों से क़लम के जिहाद को इस शानदार तरीक़े से अंजाम दिया जिसकी मिसाल मुश्किल से मिलेगी। मुसलमानों की इसलाह व तरबियत के लिए आपने ज़ुबान व क़लम के ज़रिये हर तरह की ख़िदमतें अंजाम दीं। उनकी फ़िक्रो नज़र का दायरा न तो कोई एक मख़सूस शोबए ज़िन्दगी और मैदाने अमल था न सिर्फ़ हिन्दुस्तान तक उन्होंने अपने फ़ैज़ को महदूद रखा।

मुसलमान मग़रिबियत की झूठी चमक धमक की तरफ़ भाग रहा था और इसलामी मुआशरा हाथ से निकलता जा रहा था इस ज़र्क, बर्क ख़ूबसूरत और ज़हर आलूद मग़रीबियत से मुसलमनाने हिंद ही नहीं बल्कि आलमे इसलाम को निकालने व बचाने के लिए फ़ाज़िले बरेलवी ने अपने ख़ुलफ़ा व शर्गिदों को हर तरफ़ फैला दिया था। जिन्होंनें पूरी मेहनत जाँनिसारी और हकीमाना तरीक़े से जदीद तालीमयाफ़ता के ज़हनो से मग़रीबियत व दीन से बेबैरगी के फैलते हुये जरासीम को ख़त्म करने और उनमें ईमान व यक़ीन की जड़ें मज़बूत करने की बड़ी बेहतरीन ख़िदमात अंजाम दीं। यहाँ फ़ाज़िले बरेलवी की ख़िदमात का एक ख़ाका पेश किया जा

रहा है जिससे आला हज़रत की आलमगीर खिदमाल का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

मलिकुल उलमा मौलाना सय्यद ज़फर उद्दीन बिहारी आला हज़रत के बड़े ही खास शार्गिद और खलीफा हैं जिन्हें आला हज़रत प्यार से अपना बेटा कहा करते थे। शम्सुलहुदा कालेज पटना के हदीस व हैअत (Astronomy) के सदर रहे और इसी कालेज के प्रिन्सीपल भी रहे ।

दूसरे इसलामी मदारिस में सदर व मुदर्रिस रहने के साथ साथ फ़ाजिले बिहारी ने शम्सुलहुदा कालेज के कुशादा माहौल मे उलूम-ए-इसलामिया के दर्स-ओ- तदरीस का फरीज़ा अंजाम दिया। उन्होंने अपने शार्गिदो को इसलामी मुआशरे की हिफाजत की तरफ़ तवज्जो दिलाई कि जहाँ और जिस माहौल के भी जाये इसलामी उसूल और अकायद के पाबन्द और उसके सच्चे खादिम हों ताकि उन पर कोई दूसरा गैर इसलामी रंग गालिब न हो सके।

सदरूश शरिया मौलाना अमजद अली आजमी खलीफा फाजिले बरेलवी कुद्दिसा सिर्रूहू जिनकी 17 हिस्सो में ज़ब्रदस्त फिकही तसनीफ "बहारे शरीयत" हिन्द -ओ- पाक के तमाम दीनी इदारो की जीनत है और मुस्लिम घरानों मे बड़े शौक से पढ़ी और पढ़ाई जाती है। आला हज़रत के क़ुर्आन पाक का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान भी आप ही की मेहनत का नतीजा है। आप मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ के शोबा दीनयात कमेटी के रूकुन थे

आपने अपने चन्द शार्गिदों और ख़ुद्दाम अजमेर शरीफ़ को लेकर आस पास के राजा पृथ्वीराज की औलाद राजपूत कौम जिसमें नौमुसलिम होने की वजह से बहुत सी बिदअतें और मुशरिकाना रस्में राएज थी, फराएज़ व वाजिबात से बाज़ लोग नावाकिफ़ थे। उनमें बहुत तबलीग की, पूर इलाके में बेशुमार तबलीगी दौरे किए। लोगों को नरमी से समझाया। आपकी कोशिशों से बहुत सी मुशरिकाना रस्मों का ख़ात्मा हुआ। बियावर, लाडनून, जयपुर, पाली, जोधपुर, मारवाड़, चित्तौड़, नसीराबाद वगैराह में आपके बहुत दौरे हुए। शुद्धी तहरीक के ख़िलाफ़ भी आपने बहुत काम किया।

सदरूल अफ़ाज़िल मौलाना नईम उद्दीन मुरादाबादी ख़लीफा फ़ाज़िले बरेलवी जो बेहतरीन मुफक्किर, मुदब्बिर और मुल्की हालात पर पूरी नजर रखते थे। अबुल कलाम आजाद के रिसाले "अलबलाग" व "अल हिलाल" मे बराबर मजामीन लिखा करते थे। आपने बहुत दीनी ख़िदमात अजाम दी।

आपकी कई क़ीमती तसनीफ़ है।आपकी क़ुर्आन पाक की तफ़सीर उर्दू ज़ुबान में "खज़ाएनुल इरफ़ान" के नाम से बहुत मशहूर है।

आर्य धर्म का जिस वक़्त बड़ा ज़ोर था और श्रद्धानन्द की तहरीक शुद्धी संगठन अपने शबाब पर थी और इरतेदाद का फ़ितना फैला हुआ था और लाखों मुसलमान गैर मुसलिम हो रहे थे। उस वक़्त आपने इस फ़ितने की सरकोबी में बड़ा सरगर्म हिस्सा लिया। राम चन्द्र आर्या, श्रद्धानन्द, और धर्म भिक्षु वगैरह मशहूर आर्य रहनुमाओं से मज़हबी मसाइल पर गुफ़्तगू की उनसे कई मनाजरे किये। वह सब लाजवाब हुए और आप फ़ातेहाना शान से मुसलमानों को इसलाम की तरफ़ बुलाते और उनका सर बलन्द करते रहे।

आपकी तबलीग़ से मुतास्सिर होकर बहुत से मुसलमान जो किसी दुनयावी लालच या खौ़फ़ से मआज़ अल्लाह इरतेदाद (Conversion of Religion) की जानिब झुक रहे थे या इसलाम का दामन छोड़ चुके थे, वह फिर इसलाम की तरफ़ लौट आये। शुद्धी संगठन के बढ़ते हुए तूफ़ान और उसकी हलाकत का सही अन्दाज़ा वही लोग कर सकते हैं जिन्होंने इन मनाज़िर को देखा है या इतिहास पढ़ा है। इस ज़माने में इस फ़ितने का मुकाबला करना और श्रद्धानन्द वग़ैरा को ज़ेर करना बड़े दिल गुर्दे का काम था।

प्रोफ़ेसर सय्यद मुहम्मद सुलेमान अशरफ़ कुद्दिसा सिर्रुहू सद्दर शोबए दीनयात मुसलिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ अरबी .ज़ुबान की .खुसूसियत और उसके मुहासिन के मौज़ूँ पर "अल मुबीन" उर्दू में आपकी मशहूर तहक़ीक तसनीफ है।

आप आला हज़रत के कहने से मुस्लिम यूनिवर्सिटी से जुड़ गये। अलीगढ़ की इल्मी व दीनी फ़िज़ा पर आप पूरी तरह छाये हुये थे। यह दर्सगाह एक ऐसी जगह थी जहाँ हिन्दुस्तान के हज़ारों ऊँचे घरानों के तलबा तालीम पा रहे थे। इस माहौल में जाने का मक़सद यही था कि उन्हें सही राह से किसी हाल में भटकने न दिया जाये और कोई भी इसलाम दुश्मन नज़रिया उनके ऊपर मुसल्लत न हो सके।

आपके इल्म की बड़ी धूम और दबदबा था।आप एक अरसे तक जामिया अलीगढ़ में दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे और मुसलमानों की कई नौजवान नस्लों को उन्होंने इसलामी ज़िन्दगी के सफ़र के लिये तैयार किया। वह अपनी शख़सियत इल्मो फ़ज़ल और किरदार की वजह से अलीगढ़ ही नहीं

बल्कि तमाम हिन्दुस्तान में बड़ी अक़ीदत व ऐहतराम की नज़र से देखे जाते थे।

मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में मुल्क का दिलो दिमाग और निचोड़ जमा रहता था। यहाँ अपनी रहनुमाई से तलबा को इसलामी माहौल की तरफ़ राग़िब करना और उनके दीनी अक़ाइद की हिफ़ाज़त करना आपका असल काम था।

क़ाएद तहरीक ख़त्मे नुबुव्वत अल्लामा अबुल हसनात सय्यद मुहम्मद अहमद क़ादिरी जिन्होंने फ़ज़िले बरेलवी से फ़ैज़ हासिल किया और इनके वालिद–ए– वाजिद मौलाना सय्यद दिलदार अली शाह अलवरी .कुद्दिसा सिर्रूहू फ़ाज़िले बरेलवी के ख़लीफ़ा हैं।

तालीम से फ़ारिग़ हुये तो एक हादसा हुआ चन्द शर पसंद लोगों ने अलवर की एक मस्जिद शहीद कर दी। इस वाक़ये ने मौलाना को शोला बना दिया। आपने अपनी तक़रीरों से मुसलमानों में रूह फूँक दी मस्जिद की दोबारा तामीर के लिए जद्दो जहद शुरू हो गयी। मौलाना को गिरफ़्तार कर लिया गया मगर मुसलमानों के शदीद दबाव की बिना पर महाराजा अलवर ने न सिर्फ़ मौलाना को रिहा कर दिया बल्कि हुकूमत के खर्चे पर मस्जिद की तामीर करा दी।

बटवारे के बाद क़ादयानी पाकिस्तान चले गये और पाकिस्तान के वज़ीरे ख़ारजा ज़फ़र उल्लाह के नाम से कुछ ज़मीन ख़रीदकर वहाँ ख़त्मे नुबुव्वत के फ़ितने फैलाने लगे। इसी फ़ितने को ख़त्म करने के लिये पाकिस्तान के उलमा की एक कमेटी बनाई गयी जिसका सदर अबुल हसनात क़ादिरी को चुना गया। ख़्वाजा निज़ामुद्दीन की हुकूमत से मुतालबा किया गया कि ज़फ़र उल्ला को विज़ारत से हटाया जाये और क़ादयानियों को क़ानूनी तौर पर ग़ैर मुसलिम क़रार दिया जाये। लेकिन हुकूमत टस से मस न हुई बाद में एक वफ़्द कराची में ख़्वाजा मुईन उद्दीन से मिला और उनसे मुतालबात पेश किए ख़्वाजा साहब ने न माना और सब को गिरफ़्तार कर लिया। यह ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। जगह जगह जलसे जुलूस और ऐतजाज हुए और पूरे मुल्क के जेलख़ाने फ़िदायाने ख़त्में नबुव्वत से भर गये।

यही तहरीक दोबारा 1974 में अल्लामा शाह अहमद नूरानी मेम्बर ऑफ़ पार्लियामेंट पकिस्तान जो मुबल्लिग़े इसलाम मौलाना अब्दुल अलीम मेरठी(ख़लीफ़ा फ़ाज़ले बरेलवी) के साहबज़ादे हैं, इनकी क़यादत में इत

ज़ोरदार तरीक़े से पूरे मुल्क में चली कि हुकूमत को उनके सामने झुकना पड़ा। और क़ादयानियों का क़ानूनी तौर पर ग़ैर मुसलिम अक़लीयत क़रार दिया गया जिससे क़ादयानियों को सख़्त धक्का पहुँचा और रूस, अमरीका, फ्रांस, बरतानिया, जरमन, हालैंड, अफ़्रीका, वग़ैरह में क़ादयानी सोचने पर मजबूर हो गये और हज़ारों लोगों ने तौबा भी की।

ख़लीफ़ा फ़ाज़िले बरेलवी हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी जो 1327 हिजरी में मदीनए तय्यबा हाज़िर हुए। और वहीं सादात घराने में आपका निकाह हुआ। आप एक ज़ब्रदस्त आलिम व शैखे तरीक़त हैं बग़दाद शरीफ में सालहा साल तक रहे। शबो रोज आप उलमा व ख़ल्के .खुदा को हिदायत व रहनुमाई का फ़रीज़ा अंजाम दे रहे हैं। आपकी ज़ाते गिरामी सऊदी अरब, शाम ईराक़ व मिस्र वग़ैरा के उलमा अहले सुन्नत के लिए मदीना तय्यबा में मरकज़ व मरजेअ हैं। आप तक़रीबन 90सालपहले से भी आला हज़रत से ख़िलाफ़त रखते हैं।

हज़रत मौलाना अहमद मुख़्तार मेरठी सरकार आला हज़रत ने खुलफ़ा में से हैं आपने पूरी उम्र तबलीग़ में गुज़ारी। बर्रे सग़ीर हिन्द के अलावा अफ़्रीक़ा व इन्डोनेशिया के जज़ीरे में तबलीग़ी इदारे क़ायम किए और लाखों ग़ैर मुस्लिमों को दाख़िले इसलाम किया।

बर्मा का सफ़र किया तो वहाँ एक स्कूल क़ायम किया मांडे में आला तालीम के लिए एक दर्सगाह की बुनियाद डाली। डर्बन में औरतों की तालीम की तरफ़ तवज्जो की। 1908 ई में अफ़्रीका से "अल इसलाम" नामी गुजराती अख़बार जारी किया। क़ौमी और मुल्की मुआंमलात में आपको ख़ुसूसी दिलचस्पी थी 1920 ई० में ख़िलाफ़त तहरीक में बड़े जोश के साथ हिस्सा लिया। आपके दोनो छोटे भाईयों मौलाना नज़ीर अहमद और मौलाना अब्दुल अलीम ने 1921 ई० में मरकज़ी ख़िलाफ़त फण्ड में तीन लाख का चन्दा दिया। 1922 ई० में आप जेल भी गये।

हिजाज़े मुक़द्दस में सऊदी ख़ानदान ने जब हुकूमत संभालने के बाद मदीनए मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ और जन्नतुल माला में अज़वाजे मुतहेरात व सहाबा किराम के मक़ाबिर मुताबर्रका के तोड़ फोड़ का सिलसिला शुरू किया तो आलमे इसलाम में नजदियों की इस हरकत से हलचल मच गई। 1924 ई० में बम्बई से मुसलमानों के आपकी क़यादत में एक वफ़्द

सऊदी अरब सुलतान को इस हरकत से बाज़ रखने को भेजा।

मुबल्लिग़–ए– इसलाम अब्दुल अलीम मेरठी .कुद्दिसा सिर्रूहू जो इसलामी उलूम के साथ–साथ बी० ए० पास थे। जदीद उलूम के अलावा आपको अरबी, उर्दू, फ़ारसी, फ़्रांसीसी, जापानी, चीनी और मलाई .ज़ुबानों पर पूरी .कुदरत हासिल थी।

1951 ई० में आपने पूरी दुनियाँ का तब्लीग़ी दौरा किया जिसमें क़ाबिले ज़िक्र मुल्क यह हैं– इंग्लैंड, फ़्रांस, इटली, ग्याना, मडगास्कर, सऊदी अरब, त्रिनिडाड, अमरीका, कनाडा, फिलपाइन सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, इन्डोनेशिया, और सैलून थे। तमाम मज़ाहिब के लोगों को दावते इसलाम दीं।

मुख़तलिफ़ ज़ुबानों में इसलामी लिट्रेचर शाय किया। आपकी तबलीग़ी कोशिशों से बोरनिया की शहज़ादी, मारिशस उत्तरी अफ़्रीका के फ़्रांसीसी गवर्नर मदवाट और त्रिनडाड की एक ख़ातून वज़ीर ने इसलाम कबूल किया।

1935 ई० में आपकी मुलाक़ात मुम्बासा साऊथ अफ़्रीका में जार्ज बर्नाड शॉ से हुई। जार्ज बर्नाड शॉ से बातचीत में आपने तारीख़ साइंस व फ़लसफ़े के ज़रिए इसलाम और ईसाई मज़हब पर बहुत कामयाब गुफ़्तगू की जो माहनामा तर्जमान अहले सुन्नत लाहौर के 1392 हिजरी के मुहर्रम सफ़र के शुमारे में शाय हुई।

हज़रत मौलाना अब्दुल अलीम सिदीक़ी अलैहिर्रहमा ने इसलामी तालीमात को आम करने के लिए हर पहलू पर तवज्जो दी बहुत सी मस्जिदें तामीर कराई जिनमें हनफ़ी जामा मस्जिद कोलम्बो, सुल्तान मस्जिद सिंगापुर और मस्जिद नागरिया जापान ज़्यादा मशहूर हैं। इसके अलावा अरबी यूनिवर्सिटी मलाया, पाकिस्तान न्यूज़ मुस्लिम डाईजेस्ट, त्रिनिडाड मुसलिम, ऐनोदल दक्षिणी अफ़्रीका की बुनियाद आप ही ने रखी। 1949 ई० में सिंगापुर में तनज़ीम बैनुल मज़ाहिब के नाम से इदारे की बुनियाद डाली और तमाम दुनियाँ के ईसाई, यहूदी, बुद्ध मत, और सिक्ख मज़ाहिब के पेशवाओं को एक प्लेट फ़ार्म पर जमा करके लादीनियत का क़लामुमा करने की अपील की। तमाम मज़ाहिब की इस कान्फ़्रेस में आपको 'His Exaited Eminunce' का ख़िताब दिया गया। मिस्र में "तंज़ीम बैनुल मज़ाहिबुल इसलामियां" के नाम से एक तंज़ीम क़ायम की और आपकी क़यादत में एक वफ़्द सऊदी अरब गया जहाँ हाजियों पर लगे

टैक्स के ख़ातमें और हाजियों को सहूलते फ़राहम करने के लिए दुनिया भर से आए लोग उलमा, सऊदी लीडरों और अब्दुल अज़ीज़ इब्ने सऊद से बातचीत की, जिनका अच्छा ख़ासा असर हुआ।

वतन से महब्बत और अंग्रेज़ी से नफ़रत की वजह से आप मुहम्मद अली, मुहम्मद शौक़त अली, मौलाना अब्दुल माजिद साहब क़ादिरी बदायूंनी, हज़रत ताजुलउलमा मौलाना अब्दुल बारी फ़िरंगी महली, हज़रत मौलाना निसार अहमद कानपुरी वग़ैरह के साथ तहरीके ख़िलाफ़त में साथ–साथ शामिल थे। तहरीक़े ख़िलाफ़त के बढ़ते हुए सैलाब और मुसलमानाने हिन्द के सियासी उरूज को ख़त्म करने के लिए महा सभाईयों ने पहली बार यू० पी० और दूसरे सूबो में शुद्धी का जाल फैलाना शुरू किया तो आपने हर जगह तबलीग़ी सैन्टर क़ायम करने शुरू किये। बम्बई, कर्नाटक, अहमदाबाद गुजरात वग़ैरह में ऐसी क़यादत फ़रमाई कि उन जगहों पर मुसलमान शुद्धी की लानत से महफ़ूज़ रहे। पूना में आपने एक नैशनल हाईस्कूल क़ायम किया।

1923 ई में सैलून के मुसलमानों ने आपको दावत दी आप वहाँ पहुँचे। उस वक़्त मुसलमानों में वहाँ काफ़ी इन्तेशार था। आपने मुसलमानों को एक किया। मुख़्तलिफ़ जमातों को तोड़ कर एक जमात बना दिया। सैलून का एक इसाई वज़ीर मिस्टर एफ़० किंगसन बेरी मुसलमान हुआ।

1944 में जबकि सब ही इसलामी मुमालिक सियासी उलझनों से घिरे हुए थे। आप इस वक़्त मक्का मुकर्रमा में थे। हुकूमत मक्का ने आपसे मुस्लिम कांग्रेस यूरेशलम की कार्यवाहियों में शिरकत की दरख़्वास्त की।

1928 ई० में मुसलमानों की दरख़्वास्त पर दोबारा सैलून गये। तबलीग़े दीन फ़रमाई और एक अंग्रेज़ी अख़बार कोकब इसलाम की बुनियाद रखी। यह अख़बार बड़े शौक़ से पढ़ा जाता था।

आपने जुनूबी मशरिक़ी एशिया का दौरा ऐसे वक़्त में किया जबकि दुनिया के मुसलमानों के हालात बड़े ख़राब थे। उन पर दूसरे मज़हबों का असर ज़्यादा था। आपने तवील अरसे तक सैलून, वर्मा, इन्डोनेशिया, फ़्रांस, चीन, जापान और सिंगापुर वग़ैरह में क़याम फ़रमाया और दुनिया के दूसरे मज़हब के लोगों को इसलाम की दावत दी। क़ादयानियों के ख़िलाफ़ काम करते रहे। जिन मुसलमानों को इसाईयों ने इसाई बना लिया था। उन्हें फिर से इसलाम की दावत दी। इस दौरान लगभग 18 हज़ार लोगों में आपने फिर

से इसलाम की महब्बत जगाई।

वर्मा में अन्जुमन नौजवान बर्मा क़ायम की और एक अंग्रेज़ी अख़बार "The genuin Islam" जारी किया।

यूरोपी मुमालिक दौरे में हज़रत अल्लामा की तक़रीर सुनने अवाम और उलमा के अलावा कालेज और यूनिवर्सिटी के लोग, साइंस दाँ, फ़लसफ़ी और दहरिये भी आते और बाज़ लोगों से बहसें भी होतीं लेकिन आपके सामने उनको सर झुकाना पड़ता।

साउथ अफ़्रीका में क़याम के दौरान आपने Wit waters rand यूनिवर्सिटी में तक़रीरें कीं। उसके बाद आपने मुम्बासा वग़ैरा का भी दौरा किया। वहीं आपकी बर्नाड शॉ से भी आपकी मुलाक़ात हुई। फ़्रांसिसी गवर्नर ने आपके हाथों इसलाम क़बूल किया। और आपने उसी गवर्नर के ज़रिए जेल में मशहूर लीडर ग़ाजी अब्दुल करीम से क़ैद में मुलाकात की। और यहाँ से न्यूज़ीलैन्ड, आस्ट्रेलिया का दौरा किया। न्यूज़ीलैन्ड में अपने अज़ीज़ शार्गिद जनाब अज़ीज़ एच० अब्बासी को तबलीग़ का काम सुपुर्द किया। आस्ट्रेलिया में मशहूर फ़ाज़िल डाक्टर मुहम्मद आलम को मुबल्लिग़ बनाया।

1936 ई० में एक बार फिर जुनूबी मशरिक़ी एशिया का दौरा किया। उस वक़्त आप फ़ांसिसी हिन्द चीन और चीन में तक़रीरें फ़रमा रहे थे। जहाँ लाखों मुसलमान यूरोपियन चीनी और जापानियों ने आपकी मजलिसों में शिरकत फ़रमाई। शघांई और पीकिंग में अरसे तक आप का क़याम रहा और जगह जगह तक़रीरें फ़रमाते रहे।

आपने मिस्र, सीरिया, ईराक़, लेबनान, के भी दौरे किये। रोम में क़याम के बाद मौलाना स्पेन, पुर्तगाल, जर्मनी और हाईलैंड भी तशरीफ़ ले गये और वहाँ से इंग्लैंड और अमेरिका भी तशरीफ़ ले गए। जहाँ लोगों को आप का बहुत इन्तेज़ार था। मशरिक़ी यूनाईटेड स्टेट के मुफ़्तीए आज़म हज़रत अब्दुल रहमान आपके शार्गिद हुए। शिकागो के दौराने क़याम में आठ अमेरीकी मुसलमान हुये। एक दिन शहर न्यूयार्क के सिटी हाल में एक आलमाना पुरज़ोर तक़रीर का जलसा बरखास्त होते ही 192 अमरीकियों ने इसलाम क़बूल किया। जिसमें मशहूर साइंस दाँ मिस्टर जार्ज एन्टिन ब्यूफ और उनकी बेगम शामिल हैं। वाशिंगटन में मुख़्तलिफ़ इल्मी इदारों में लैक्चर देने के बाद 136 अंग्रे जो कालेजों में प्रोफ़ेसर थे अपने अहल व अयाल के साथ मुसलमान हुए।

मीजीगन यूनिवर्सिटी का होनहार माहिरे तालीम मिस्टर अब्दुल बासित नईम आपका ख़ास शार्गिद हुआ और मौलाना की ज़ेरे सरपरस्ती अमेरिका से एक बलन्द पाया इसलामी मैगज़ीन बनाम "The Islamic world and the U•S•A." जारी किया जो आज भी इसी आब व ताब से शाय होता है।

कनाडा में ग्यारह इसलामी इदारों कालेजो और यूनिवर्सिटीयों में आप ने लैक्चर दिये मान्ट्रियल में अरसे तक क़याम किया। अमेरिका के दौराने सफर में ब्रिटिश वैस्टन्डीज़ तशरीफ़ ले गये।

अल्लामा के क़ायम करदा चन्द अहम तरीन इदारे जो गरम जोशी से आज भी मसरूफ़ अमल हैं वह यह है :– हनफ़ी मस्जिद कोलम्बो (सैलून) मस्जिद नागीरया जापान, सुल्तान मस्जिद सिंगापुर, अरबक यूनिवर्सिटी मलाया वग़ैरह।

मशहूर मज़हबी जराएद व अख़बारात दी मुसलिम डाईजेस्ट डर्बन (जुनूबी अफ्रीका) स्टार ऑफ़ इसलामी सैलून पाकिस्तान न्यूज़ जुनूबी अफरीका इसलामिक वर्ल्ड एण्ड यू० एस० ए० अमेरिका व दीगर स्कूल, लाइब्रेरियाँ, तबलीग़ी इदारे और सोसाइटियाँ वग़ैराह से आप जुड़े थे। इंगलिश ज़ुबान में भी आपकी कई तसानीफ़ है।

आप दुनिया के तक़रीबन हर हिस्से में पहुँचे और इसलामी सोसाइटियाँ इलमी इदारे मस्जिदें मिशिन्रियाँ और लाअब्रेरियाँ क़ायम कीं। और हज़ारो जलसों और कॉन्फ़्रेन्सेस में तक़रीरें कीं। सैकड़ों साइंस दॉं फ़लसफ़यों और अग्रेज़ी दॉं से बहसे कीं और उन्हें इसलाम की दावत दी। हज़ारों लोगों को मुसलमान भी किया। जिन में से बहुतेरे आज भी मुख़्तलिफ़ मुल्कों में इसलाम की ख़िदमत अंजाम दे रहें हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि आला हज़रत ने अपने मुरीदों , ख़ुल्फ़ाओं और शार्गिदों के ज़रीये ऐसी आलमगीर ख़िदमात अंजाम दीं जो एक मुजद्दिद की शान है। इसीलिए दुनियाँ आपको मुजद्दिद –ए– आज़म कहती है। आज भी आपकी तसनीफात से लाखों लोग पूरी दुनियाँ में फैज़याब हो रहे हैं। दुनियाँ के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में आला हज़रत पर रिसर्चेज़ भी जारी हैं। आपकी सारी तसानीफ़ अगर छप कर शाय हो जायें तो न जाने दुनिया को क्या क्या ख़ज़ाना मिलेगा और यह भी उसी आलमगीर ख़िदमात का एक हिस्सा होंगे मगर अफ़सोस हम न जाने क्यूँ आला हज़रत की तसानीफ़ को अपनी ज़ाती लाइब्रेरियों में रखे है उन्हे छपवाना तो दूर उन्हे कभी उठाकर देखना भी नहीं चाहते।

फ़तावा रज़विया का मुख़्तसर ताअर्रुफ़

"अलअतायन नबविया फ़ी फ़तावा रज़विया" के नाम से आला हज़रत के फ़तावों का मजमुआ जो हाल ही में नई तरजीब के साथ 12 ज़खीम जिल्दों में "रज़ा एकाडमी बम्बई" से शाय हुआ। ये फ़तावे हज़ारों सफ़ाहात पर बिख़रे हैं। "अल हिजाज़" के इमाम अहमद रज़ा नम्बर में शाय एक मज़मून जो प्रोफ़ेसर मजीदउल्लाह साहब क़ादिरी कराची यूनीवर्सिटी का है, से फ़तावा रज़विया का एक मुख़्तसर ताअर्रुफ़ यहाँ पेश किया जा रहा है।

फ़तावा रज़विया का जाएज़ा लेने के बाद हर वह शख़्स जिसने मशहूर फ़ुक़हा की तसानीफ़ को पढ़ा होगा इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि कभी आप इमामे आज़म नज़र आते हैं तो कभी इमाम स्यूती कभी इब्ने हमाम की शान नज़र आते हैं तो कभी इमाम इब्ने आबदीन शामी। फ़तावा रज़विया पढ़ने के बाद जो नतीजा निकलता है वह यह है :–

किसी मसअले पर गुफ़्तगू करते हुए .कुरआन से दलाएल पेश करते हैं उसे नज़र अंदाज़ नहीं करते,अगर मुमकिन हैं। आप तफ़सीर .कुरआन में अपनी राय को दख़ल न दे कर बुज़ुर्गों की ही तफ़सीर पेश करते हैं।

आप तहक़ीक़ी फ़तावा में अहादीस से इतनी ज़्यादा दलाएल पेश करते हैं कि मालूम होता है कि तमाम अहादीस आपकी पेशे नज़र हैं। कभी–कभी एक– एक हदीस के लिए दस पन्द्रह किताबों के नाम पेश करते हैं। अगर मुहक्क़ेक़ीन सलफ़ से कहीं कोई भूल हुई है तो आप उसे बड़ी .ख़ूबी से सही फ़रमाते हैं। जहाँ कहीं मसाइल में दूसरे उलूम की .ज़ुरूरत पेश आती है तो उसे भी पेश करते हैं जैसे लुग़त, सर्फ़, नहव, मआनी बयान, मन्तिक़, हिसाब, साइंस, कामर्स, इकॉनामिक्स, एस्ट्रोनामी वग़ैरह। मालूम होता है इन उलूम पर आपको पूरी मास्टरी है।

बाज़ मसाइल जो फ़तावा "आलमगीर" में अधूरे से महसूस होते हैं, उनको फ़तावा रज़विया में देखा जा सकता है। फ़तावा आलमगीर सैकड़ों किताबों की मदद से 40 फ़ुक़हा –ए– किराम ने लिखी थी।

फ़तावा रज़विया में फ़तवे चार .ज़ुबानों में मिलते हैं अरबी, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी जबकि हिन्दी .ज़ुबान का इस्तेमाल आम है। इस तरह पाँच .ज़ुबानें कही जा सकती हैं। फ़तावा रज़विया की एक ख़ासियत यह भी है। कि इसमें इस्तिफ़्ता का जवाब छह तरीक़ों से दिया गया है। अरबी नज़्म,

फ़तावा रज़विया का मुख़्तसर ताअर्रुफ़

"अलअतायन नबविया फी फ़तावा रज़विया" के नाम से आला हज़रत के फ़तावों का मजमुआ जो हाल ही में नई तरजीब के साथ 12 ज़खी जिल्दों में "रज़ा एकाडमी बम्बई" से शाय हुआ। ये फ़तावे हज़ारों सफ़ाहात पर बिखरे हैं। "अल हिजाज़" के इमाम अहमद रज़ा नम्बर में शाय एक मज़मून जो प्रोफ़ेसर मजीदउल्लाह साहब क़ादिरी कराची यूनीवर्सिटी का है, से फ़तावा रज़विया का एक मुख़्तसर ताअर्रुफ़ यहाँ पेश किया जा रहा है।

फ़तावा रज़विया का जाएज़ा लेने के बाद हर वह शख़्स जिसने मशहूर फ़ुकहा की तसानीफ़ को पढ़ा होगा इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि कभी आप इमामे आज़म नज़र आते हैं तो कभी इमाम स्यूती कभी इब्ने हमाम की शान नज़र आते हैं तो कभी इमाम इब्ने आबदीन शामी। फ़तावा रज़विया पढ़ने के बाद जो नतीजा निकलता है वह यह है :-

किसी मसअले पर गुफ़्तगू करते हुए .कुरआन से दलाएल पेश करते हैं उसे नज़र अंदाज़ नहीं करते,अगर मुमकिन हैं। आप तफ़सीर .कुरआन में अपनी राय को दख़ल न दे कर बुज़ुर्गों की ही तफ़सीर पेश करते हैं।

आप तहक़ीक़ी फ़तावा में अहादीस से इतनी ज़्यादा दलाएल पेश करते हैं कि मालूम होता है कि तमाम अहादीस आपकी पेशे नज़र हैं। कभी-कभी एक- एक हदीस के लिए दस पन्द्रह किताबों के नाम पेश करते हैं। अगर मुहक्क़ेक़ीन सलफ़ से कहीं कोई भूल हुई है तो आप उसे बड़ी .खूबी से सही फ़रमाते हैं। जहाँ कहीं मसाइल में दूसरे उलूम की .ज़ुरूरत पेश आती है तो उसे भी पेश करते हैं जैसे लुग़त, सर्फ़, नहव, मआनी बयान, मन्तिक़, हिसाब, साइंस, कामर्स, इकॉनामिक्स, एस्ट्रोनामी वग़ैरह। मालूम होता है इन उलूम पर आपको पूरी मास्टरी है।

बाज़ मसाइल जो फ़तावा "आलमगीर" में अधूरे से महसूस होते हैं, उनको फ़तावा रज़विया में देखा जा सकता है। फ़तावा आलमगीर सैकड़ों किताबों की मदद से 40 फुक़हा -ए- किराम ने लिखी थी।

फ़तावा रज़विया में फ़तवे चार .ज़ुबानों में मिलते हैं अरबी, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी जबकि हिन्दी .ज़ुबान का इस्तेमाल आम है। इस तरह पाँच .ज़ुबानें कही जा सकती हैं। फ़तावा रज़विया की एक ख़ासियत यह भी है। कि इसमें इस्तिफ़्ता का जवाब छह तरीक़ों से दिया गया है। अरबी नज़्म,

अरबी नस्र,फ़ारसी नज़्म,फ़ारसी नस्र, उर्दू नज़्म ओ नस्र। गोया जिस तरह से सवाल हुआ जवाब भी उसी अंदाज़ से दिया गया है। जिस .ज़ुबान में सवाल आया उसी में जवाब भी दिया। इससे पता चलता है कि इन .ज़ुबानों पर आपको पूरा उबूर हासिल था। इस का सुबूत आपकी इस नात से भी मिलता है जिसमें एक ही नात में चार .ज़ुबाने इस्तेमाल की गई हैं जिसका मतला (पहला शेर) यह है–

लम याते नज़ीरुका फ़ी नज़ारिन मिस्ले तो न शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तोरे सर सो है, तुझ को शए दोसरा जाना

इस दौर में हज़ारों मसाइल जिनका ताअल्लुक इबादात से लेकर मुआमलात तक फैला हुआ था और मुसलमानों के लिए हल तलब थे। आला हज़रत ने उन मसाइल पर गुफ़्तगू करते हुए एक अज़ीम तजदीदी कारनामा अन्जाम दिया कि क़यामत तक पैदा होने वाले बेशुमार और मुस्तक़बिल (Future) में होने वाली एक से एक आला इजाद (Reserch) और इन्सानी ज़िन्दगी पर उनके असरात से पैदा होने वाले नताइज के, अहकाम की दरयाफ़्त के ऐसे रहबर–ओ–रहनुमा उसूल फ़रमा दिए कि आइन्दा फ़ुक़्हा को मुश्किलें पेश न आयेंगी और उनका हल आला हज़रत के फ़तावों में मिल जाएगा। फ़तावा रज़विया अहले सुन्नत व जमाअत के लिए अक़ीदत और महब्बत का ख़ज़ाना है नहीं बल्कि इबादात व मुआमलात में आए दिन पेश आने वाले हज़ारों मसाएल के जवाबात का क़ीमती ख़ज़ाना है और इसमें सिर्फ़ रज़वियत की तख़सीस ही नहीं बल्कि आम मुसलमानों की फ़िक़ही .ज़ुरूरत का जामेअ दस्तूर अमल है।

आला हज़रत अपने फ़तावों को सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अतिया बताते हुए फ़रमाते हैं :–

हाँ हाँ मैं अपने रब की रज़ा के लिए उसकी हम्द करता हूँ और वह मुझे काफ़ी है। मेरे दिल में कभी यह ख़तरा न गुज़रा कि मैं आलिम हूँ .फ़ुक़हा के गिरोह से हूँ या इमामों के मुक़ाबिल मुझे कोई लफ़्ज़ कहना ज़ेबा देता है या हुक्म-ओ-हिकमत शरहे में मुझे उनके साथ कुछ मजाल है। मैंने इसका नाम "अलअताया अन्नब्विया फ़ी फ़तावा रज़विया" रखा। अल्लाह इसे अपनी रज़ा का वसीला बनाए और दोनों जहान में मुझे और अपने बन्दों को इससे नफ़ा पहुँचाये। मैंने यह नाम इसलिए रखा कि मैं उनका नाम लेवा हूँ और उनका

तुफ़ैली। उन्हीं से लेता हूँ और फ़ायदा पाता हूँ। मुझ पर जो फ़ैज़ आता है उन्हीं से आता है,उनकी बरकत से मौला ने मुझ पर दरवाज़े खोल दिए और असबाब आसान किए और ख़ुदा चाहे हर मसअले में हक़ की तरफ़ हिदायत फ़रमाए। मैं पहचानता हूँ कि मुक़ल्लिद को किस जगह अक़ूल (अपना क़ौल) कहना रवा है तो मैं अपने ही मैदान में जौलान (घोड़े दौड़ाना यानी अपनी कोशिश) करता और उसी तरफ़ फिरता हूँ और मेरी मदद मेरी हिफ़ाज़त नहीं मगर अल्लाह से फिर नबी से फिर हमारे इमामों सरदारों मर्दान मैदाने इल्म से

(फ़तावा रज़विया जिल्द अव्वल तर्जमा .ख़ुतबा)

फ़िक्ह या फ़तावा की किताबों में हर मुसन्निफ़ एक .ख़ुतबा तहरीर करता है, जिसमें हम्द –ओ– नात बयान की जाती है और लिखने की वजह का इज़हार किया जाता है। इमाम अहमद रज़ा .क़ुद्दिस सिर्रूहू ने यहाँ भी अपने आपको मनवा लिया है। .ख़ुतबे के अन्दर जो हम्द –ओ– नात बयान की है उसको बयान करने के लिए आपने उन तमाम मुस्तनद किताबों को पेश कर दिया है जिनसे आपने मदद ली है। उन किताबों की तादाद .ख़ुतबे में नब्बे है यानी फ़िक़्ह और उसूल फ़िक्ह की तमाम जामेअ और मुस्तनद किताबों के नाम .ख़ुतबे में शामिल क़रके आला हज़रत ने यह भी साबित कर दिया कि उनकी निगाह फ़िक्ह हनफ़ी की तमाम किताबों को बारीकी से समझने की कितनी ज़ब्ररदस्त सलाहियत रखती थी। साथ ही .ख़ुतबे में फ़िक़्ही साहिबान और तलामिज़ा इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के नाम भी पेश फ़रमा दिए हैं। तफ़सील के लिए .ख़ुतबा फ़तावा रज़विया जिल्द अव्वल देखें। अब यहाँ हर जिल्द का अलग-२ मुख़्तसर ताअर्रफ़ दिया जा रहा है।

पहली जिल्द

इस जिल्द में 946 सफ़हात हैं। पूरी जिल्द तहारत के बयान में है। इसके 80 फ़तवे अरबी .ज़ुबान में, 28 तहक़ीक़ी रसाइल। 114 से ज़्यादा फ़तावे हैं हज़ारों की तादाद में मसाइल का हल पेश किया गया है। इस जिल्द में ज़िम्नन (यानी जो बीच–बीच में दूसरे मसाइल आ जायें) मसाइल की तादाद 800 से ज़्यादा हो जाती है। इसकी एक ख़ुसूसियत यह भी है कि इनमें 3536 अक़्वाल ख़ुद अपने आला हज़रत ने बयान किये हैं। इस जिल्द में वुज़ू ग़ुस्ल, तयम्मुम और पानी का बयान है। अट्ठाइस तहक़ीक़ी रसाइल के मौज़ू यह हैं :–

1- वुज़ू के फ़र्ज़ अमली और एतक़ादी का बयान 2– तहारत के

बाद बदन पोछने का बयान 3– ज़ुकाम से वुज़ू नहीं जाता की तहक़ीक़ 4– बदन से ख़ून निकलने से कब–कब वुज़ू जाता रहता है 5– वुज़ू टूटने के मसाइल की तहक़ीक़ 6– वुज़ू व ग़ुस्ल की ऐहतियात की शरहे 7– एहतलाम के मसाइल की तहक़ीक़ 8– वुज़ू व ग़ुस्ल में पानी की मिक़दार पर बहस 9–वुज़ू व ग़ुस्ल में ज़्यादा पानी ख़र्च करने का क्या हुक्म है। 10– जुनुब (बे ग़ुस्ला) की क़िरात के अहकाम 11– आबे मुसतामल (इस्तेमाली पानी की तहक़ीक़ 12– पानी में जुनुब या बे वुज़ू का हाथ लग जाने पर उस से वुज़ू का हुक्म है या नहीं की तहक़ीक़ 13– आबे मुस्तदीर मसाहत (यानी अगर वृत्ताकार जगह में जमा है) और मुसन्निफ़ की तहक़ीक़ 14– जब पानी ऐसी जगह है जहाँ ऊपर क्षेत्रफल कम नीचे ज़्यादा है या इसके विपरीत है तब क्या हुक्म है। 15– आबे कसीर (ज़्यादा पानी) में मिक्दारे अमक़ (यानी कितनी गहराई में पानी भरा हो) की तहक़ीक़ 16– बेनज़ीर तहक़ीक़ से इस बात का सुबूत कि हमेशा हर मसअले में क़ौले इमाम पर ही फ़तवा है। 17– आबे मुतलक़ के बयान में बेनज़ीर तहक़ीक़ जो आज तक देखने में न आई। 18– बच्चों के भरे हुए पानी से वुज़ू के मसाइल 19– तहक़ीक़ मायनी रिक़्क़त व सीलान में बहस 20– मुतलक़ तहक़ीक़ की 181 क़िस्म की मिट्टी से तयम्मुम जायज़ है और 130 क़िस्म से नाजायज़ 21– पानी से मजबूरी की 175 क़िस्में 22– वक़्त में तंगी पर तयम्मुम का हुक्म 23– जिन्स अर्ज़ (ज़मीन की जिन्स) के मुताल्लिक़ बेनज़ीर तहक़ीक़ 24– तयम्मुम में जिन्स अर्ज़ मुस्तामल (इस्तेमाली) नहीं होती मुसन्निफ़ की तहक़ीक़ 25– मुख़्तलिफ़ बदमज़हब फ़िरक़ों पर ज़र्बे 26– तयम्मुम वाला नमाज़ में पानी की इत्तेला पाए या इससे पहले पाये तो क्या हुक्म है, की तहक़ीक़ 27– इमाम सदरुश शरीया की इबारत आज तक मारकतुलआरा रही है 28– जनाबत और हदस दोनों एक साथ जमा होने की 98 सूरतें और उनके अहकाम में हैरतअंगेज़ बहस।

दूसरी जिल्द

इस जिल्द में तहारत के बक़िया मसाइल और नमाज़ के मसाइल और दूसरे बहुत से मसाइल हैं। वुज़ू और गुस्ल के मुताल्लिक़ मसाइल का बयान बड़ी तफ़सील से है इस जिल्द में 388 फ़तवे शामिल हैं और सात तहक़ीक़ी रसाइल हैं। इसमें वुज़ू, गुस्ल, पानी, हैज़, निजासत, इस्तिनज़ा, अज़ान, औक़ात ए नमाज़ वग़ैरह का बयान है रसाइल के मौज़ू यह हैं।

1– कोई निजासत मादिन में हुक्में निजासत नहीं पाती और सिर्फ़ शुबा से कोई चीज़ नापाक नहीं होती। 2– मेराज से पहले सरकार नमाज़ कैसे अदा फ़रमाते थे। 3– सफ़र में नमाज़ जमा करने का हुक्म 4– अगँठे चूमने की तहक़ीक़ 5– इक़ामत में नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर अगूँठे चूमने का बयान और थानवी का रद्द। 6– अज़ाने क़ब्र की तहक़ीक़ 7– शकर की सफ़ाई में इस्तेमाल होने वाली हड्डियों की हुरमत की मुताल्लिक़ बेनज़ीर नुक़ात।

तीसरी जिल्द

यह जिल्द नमाज़ से मुताल्लिक़ है इसमें बीस अबवाब और 842 फ़तवे हैं और 16 रसाइल हैं जिनकी तफ़सील यह हैं। 1– सिम्ते क़िबला के बयान में तहक़ीक़ 2– हर्फ़े दुआद की तहक़ीक़ 3– हर्फ़े दुआद के अहकाम व अदा करने का तरीक़ा 4– ग़ैर मुक़ल्लेदीन के पीछे नमाज़ नाजायज़ होने के बयान में 5-- मो० अशरफ़ अली थानवी के चार फ़तवों का रद्द 6– जमाअते सानिया (दोबारा जमाअत) के सबूत में तहक़ीक़े रज़वी 7– मेहराब के मायनी और उसमें इमाम के खड़े होने की तहक़ीक़ 8– क़ुनुते नाज़ला पढ़ने का बयान 9– नमाज़े ग़ौसिया के सबूत में तहक़ीक़ 10– नमाज़े गौसिया के नुक़ात और उसके पढ़ने का तरीक़ा 11– ख़त्म तरावीह में एक बार बिस्मिल्लाह जहर (आवाज़ से) से पढ़ने के बयान में 12– सहन मस्जिद के मस्जिद होने के बयान में 13– ख़ुतबए सानी में एक सीढ़ी उतरने व चढ़ने के बारे में का जवाब दिया है। 14– दोनों ख़तवो के दरमियान दुआ करने के बयान में 15– अज़ाने सानी (यानी जुमे के ख़ुतबे की अज़ान) मस्जिद के बाहर होने के बयान में 16– नमाज़े ईद के बाद हाथ उठाकर दुआ माँगने के बयान में।

चौथी जिल्द

यह जिल्द किताबुल जनायज़ किताबुल ज़कात किताबुल सोम और किताबुल हज के बयान में है। इसमें 355 फ़तवे हैं इसमें 27 रसाइल हैं यह जिल्द भी इल्मी फ़िक़्ही तहक़ीक़ का ख़ज़ाना है। नामालूम किन वुजूहात से इस जिल्द के चन्द रसाइल नहीं हैं रसाइल के मौज़ू यूँ हैं – 1– नमाज़े जनाज़ा की तकरार नाजायज़ है। 2– गायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जायज़ नहीं। 3– नमाज़े जनाज़ा के बाद दुआए मग़फ़िरत करने का सबूत और

मुनकेरीन का रद्द 4– जो दुआऐं हदीस में आई वह एक रिसाले में मय तर्जमें के जमा हैं और क़ब्र पर तलक़ीन करने का तरीक़ा बताया गया है। 5– क़ब्रों में शजरा रखने और कफ़न पर कलिमए तय्यबा और अहदनामा वग़ैरह रखने का बयान 6– मय्यत के घर खाने का बयान (दावते क़तअन मना है) 7– मज़ारात पर रौशनी करने का सबूत 8– औरतों का क़ब्रों पर जाना जायज़ नहीं 9– मरवजा तारिख़ों में उर्स और बर्सी मनाने का सुबूत 10– घरों पर रूहों के आने का बयान और उसका सुबूत 11– मय्यत का ज़ाएरीन को देखना, कलाम करना, सुनना वग़ैरह का बयान, लाजवाब तहक़ीक़ 12– क़सम के मसाइल के बारे में 13– हर क़िस्म के माल की ज़कात के हिसाब लगाने और अदा करने के औक़ात और मसारिफ़ (ख़र्च करना) का बयान 14– साहिबे निसाब ज़कात अदा न करें और दूसरे नवाफ़िल सदक़ात अदा करें तो वह क़बूल नहीं 15– इमाम अबू यूसुफ़ की जानिब ज़कात के एक ग़लत मसअले का मनसूब किया जाना उसका इस रिसाले में रद्द किया गया है। 16– हिन्दुस्तान की ज़मीनों के तफ़सीली अहकाम 17– बनी हाशिम पर ज़कात और सदक़ात वाजिबा हराम हैं 18– चाँद देखने में तार की ख़बर मोतबर नहीं 19– चाँद देखने से मुताल्लिक़ दो अहम मसाइल 20– रूअते हिलाल (चाँद दिखना) के तफ़सीली मसाइल 21– अगरबत्ती का धुँआ मुँह में जाने से किस तरह रोज़ा टूटता है 22– नमाज़ और रोज़े के फ़िदये की मिक़दार का बयान 23– सुबह सादिक़ काज़िब और अफ़तार सहर के औक़ात का तफ़सीली बयान 24– सुबह सादिक़ के मालूम करने का तरीक़ा और क़ायदे का बयान 25– अफ़तार की दुआ अफ़तार के बाद पढ़ने के बयान में 26– हरमैन तय्येबैन में सुकूनत करने का बयान 27– आदाबे सफ़र, मुक़दमात, हज, अहकामे हज, अहराम, तवाफ़ और तरीक़ए हज वग़ैरह का बयान

पाँचवी जिल्द

यह किताबुन्निकाह, किताबुल तलाक़, किताबुल ईमान, किताबुल हुदूद व ताज़ीर पर है। पूरी जिल्द में 954 फतवों के जवाब दिये हैं और हज़ारों मसाइल का हल पेश किया गया है। ना मालूम किन वुजूहात से इस जिल्द के तीन रसाइल गायब हैं। इसमें दस रसाइल हैं। रसाइल के मौज़ू यह हैं :– 1– औरत कहे यह मेरा शौहर है, मर्द कहे यह मेरी बीवी है क्या इतना कहने से निकाह हो जायेगा जबकि गवाहों के सामने कहे 2– हिन्द व बंगाल में औरत

से निकाह की इजाज़त लेने की रस्म से मुताल्लिक़ 3-बीवी की मौजूदगी में सास से ज़िना करने वाले के बारे में शरई हुक्म का बयान 4- ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी से निकाह नाजायज़ या ममनूअ इसका तफ़सीली बयान 5- दूर का वली क़रीब के वली की ग़ैर मौजूदगी में अगर निकाह कर दे तो करीब के वली के इख़्तेयार से मुताल्लिक़ 6- महर मुअज्जल लेने और वती के बाद शौहर के यहाँ न जाने से इन्कार पर हुक्म के बयान में रिसाला (इसमें यह भी बयान है कि कब औरत शौहर को अपने पर क़ब्ज़ा देने से रोक सकती है) 7- दूसरे निकाह के अहकाम में 8- तलाक़ के अलफ़ाज़ जिनकी तादाद तक़रीबन सौ है कि उनसे तलाक़ बाइन हो जाती है अगर तलाक़ की नियत हो 9- मसअला तालीक़ में एक देवबन्दी फ़तवे का रद्द 10- एक तरह क़सम के बारे में इजतेहादी जुज़या और उस पर तफ़सीली बहस।

छटी जिल्द

यह जिल्द इस लिहाज़ से कि इसमें सियासत के चन्द ऐसे मसाइल हैं जिनको पढ़कर गाँधी और उसके हम नवा मुसलमान सियासत दाँ और उलमा की एक बड़ी जमाअत को अपने रंग रूप में पहचाना जा सकता है। वहाबियत और क़ादयानियत का ज़बरदस्त रद्द करके आला हज़रत ने सुन्नीयत पर बहुत बड़ा एहसान किया है। मिर्ज़ा .ग़ुलाम अहमद क़ादयानी को मुरतद क़रार दिया है। ख़त्मे नबुव्वत पर बेहतरीन दलाइल हैं। इसके अलावा सियासी मसाइल पर बेशुमार शरई फ़ैसले हैं। मसाइल मस्जिद और मसारिफ़े वक़्फ़ के मसाइल का ख़ज़ाना है जिसको पढ़कर इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की इल्मी जहानत का पता चलता है। इस जिल्द में 500 फ़तावे और आठ रसाइल। रसाएल के मौज़ू यूँ हैं- 1- तर्के मवालात से मुताल्लिक़ चन्द अहम उमूर का तफ़सीली जवाब 2- रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ख़ातमुन्नबिय्यीन होना .ज़ुरूरियाते दीन में से है 3- अल्लाह तआला को मुहाल पर क़ादिर मानना उसको ऐब लगाना है बल्कि उसकी उलूहियत का इन्कार है। सिफ़ाते इलाही की तफ़सील व तौज़ीह 4- इम्काने किज़्ब इलाही के क़ायल (यानी अल्लाह के झूट बोलने का सही मानने के क़ायल) पर हज़ारों वजह से कुफ़्र साबित होने का बयान। झूट ऐब है और अल्लाह के लिए क़तअन मुहाल होने का बयान 5- मसाएरा व शरहे मवाक़िफ़ व हाशिया अब्दुल हकीम सियालकोटी की इबारत में झूटों की

सरशिकनी पर 6- मिर्ज़ा क़ादयानी मिस्लुलमसीह है मगर अल्लाह का नहीं बल्कि मसीह दज्जाल का,मिर्ज़ा की कुफ़्री इबारत का रद्द 7- मख़दूम बिहार की इबारत से पैदा वसवसों का जवाब कि इस्माईल देहलवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में कौन--कौन से बेअदबी के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए 8- इजारे पर ले गई दुकान या मकान में किसी ने इजाफ़ा किया उसकी शरई हैसियत।

सातवी जिल्द

यह जिल्द किताबुल बुयू, किताबुल किफ़ाला, किताबुल हवाला किताबुश्शहादा, किताबुल क़ज़ा, अद्दआवी वग़ैरह पर है। इस जिल्द में कुछ ऐसे मसाइल का भी ज़िक्र है जो बिल्कुल अछूते हैं। इसमें बाज़ फ़तवे तो मसअलन कचहरी का नीलाम, बीमा कोआपरेटिव बैंक , कम्पनी के बहुत से राजमर्रा के मसाइल हैं जो आज की .ज़ुरूरत भी हैं।

इस जिल्द की किताबुल बुयू मे दो निहायत तहक़ीक़ी मक़ाम हैं। जहाँ आला हज़रत की बेमिसाल फ़क़ाहत नज़र आती है एक बाबुल मुराबिया की तारीख़ का बयान दूसरा काग़ज़ के नोट का अहम मसअला जिस पर इस वक़्त तक किसी आलिम या मुफ़्ती ने क़लम नहीं उठाया था। इस जिल्द में 375 फ़तवे और चार ज़खीम रसाइल हैं जिनके मौज़ू यह हैं -- 1- हक़ीक़त नोट का बयान 2- मो० रशीद अहमद गंगोही और मौलाना अब्दुल हई लखनवी के नोट पर फ़तवे का रद्द 3- शिरकत और मीरास के उलझे हुए मसाइल का शानदार हल 4-- हिन्दुस्तान में दीवानी का ग़ैर मुसलिम जज शरा मुहम्मदी के बमुजिब क़ाज़ी हो सकता है या नहीं इसका मुदल्लल जवाब।

आठवीं जिल्द

अट्ठारह अबवाव पर मुश्तमिल जिल्द में 521 फ़तवे हैं और सात रसाइल हैं जिनके मौज़ू यह हैं :-

1- हब और तमलीक (मालिक बनाना) में फ़र्क़ 2- ठेके पर ज़मीन देने के हुक्म के बयान में 3-- मनी आर्डर का हुक्म 4- औलिया किराम के नाम से जानवर पलिने और अल्लाह के नाम पर हलाल करना जायज़ है।5- भेड़ की .क़ुर्बानी का हुक्म 6- गाय की .क़ुर्बानी का हुक्म 7- चर्म .क़ुर्बानी का हुक्म।

नवीं जिल्द

इस जिल्द में 519 फ़तवे और 13 रसाइल हैं । इस जिल्द में रोज़मर्रा के मसाइल ज़्यादा हैं जो बहुत ज़रूरी हैं। रसाइल के मौज़ू यूँ है :-

1– सियाह ख़िज़ाब के बारे में मुफ़ससल अहकाम 2– बाप पर बेटे का किस क़द्र हक़ है। मुफ़स्सल बयान 3– हुक़ूक़ुल इबाद (इंसान के एक दूसरे पर हुक़ूक़) किस क़द्र हैं और किस तरह मॉफ़ हो सकते हैं, तफ़सीली बयान 4– दाढ़ी मुडाने और कतर वाने के मुताल्लिक़ तहक़ीक़ रज़वी 5– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़्याली तस्वीर बनाना सख़्त हराम है। उनके रौज़े की शबीह की भी ताज़ीम चाहिए 6– बाज़ बीमारीयों में डाक्टर हुक्म देते हैं कि बीमार के साथ खाना पीना नहीं चाहिए शरअन उसका क्या हुक्म है इसका तफ़सीली बयान 7– ताऊन की वबा फैल जाये उस वक़्त शरअन क्या अहक़ाम हैं 8– फ़ोनोग्राम में आवाज़ सुनने की शरई हैसियत और आवाज़ से मुताल्लिक़ तहक़ीक़ कि यह आवाज़ बदल जाती है या वही रहती है· 9– तस्वीरों से मुताल्लिक़ अहकाम 10– शदीद ज़ुरूरत के वक़्त फ़ोटो खिचवाने का हुक्म 11– ग़ैर ख़ुदा के लिए सजदए ताज़ीमी या तहीयत क़तअन हराम है और सजदए इबादत कुफ़्रो शिर्क है। 12– मौलाना सय्यद आसिफ़ के इस्तिफ़ता का जवाब कि काफ़िर को राज़दार बनाना मुत्लक़न हराम है 13– यह रिसाला अलग से शाय हुआ है और इस जिल्द में नहीं है।

दसवीं जिल्द

इस जिल्द में 377 फ़तवे और छह अबवाब हैं [illegible] रसाइल जिनके मौज़ू यूँ हैं:– 1– मनी आर्डर का शरई हुक्म 2– हुक़्क़ा पीने का शरई हुक्म 3– ताड़ी का शरई हुक्म 4– असबा की चौथी किस्म की वज़ाहत 5– तर्क के मसाइल के मुताल्लिक़ 6– इल्में फ़राइज़ निस्फ़ इल्में दीन है 7– राफ़ज़ीयों का रद्द।

ग्यारहवीं जिल्द

इल्में कलाम पर मुशतमिल इस जिल्द में 140 फ़तवे और नौ रसाइल हैं जिनके मौज़ू और तफ़सील यूँ है:– 1– सरकार की शफ़ाअत के सिलसिले में चालीस अहादीस 2– हज़रत सिद्दीक़े अकबर और मौला अली की ख़िलाफ़त की तहक़ीक़ 3– हुज़ूर के आबा ओ अजदाद सब मुसिलम और एक ख़ुदा के मानने वाले थे 4– तदबीर का बयान 5– मसअले तक़दीर की वज़ाहत 6– वहाबियों की धोके बाज़ी से मुताल्लिक़ 7– अल्लाह तआला को जिस्म मानने वालो का रद्द 8– मनतिक़े जदीद की किताब के कुफ़्रीयात का रद्द तैब मक्की ग़ैर मुक़ल्लिद से सवालात।

बांरहवीं जिल्द

बीस अबवाब और आठ रिसालों पर मुशतमिल इस जिल्द में 219 फतवे हैं जिनके मौज़ूआत की तफ़सील यूँ हैः– 1– हुज़ूर की विलादत व विसाल की तारीख़ 2– आयत इल्म अरहाम की तफ़सीर 3– क़याम व मिलाद पर ऐतराज़ का जवाब 4– औलिया किराम के नाम पर जानवर ज़िबा करने का हुक्म 5– या रसूलुल्लाह कहना जायज़ है 6– निजात व कायाबी की तदबीरे 7– शैख़ अहमद रिफाई की बैत से मुताल्लिक़ 8– ज़मीन व आसमान साकिन हैं के बयान।

आला हज़रत का रद्दे बिदआत व मुनकिरात

फ़ाज़िले बरेलवी ने अपनी तसानीफ़ मे जाबजा मुनकिरात शरिइया बिदआत व ख़ुराफ़ात के ख़िलाफ़ लिखा है और मुसलमानों को इन चीज़ों से दूर रहने की ताकीद की है। हुरमत सजदएं ताज़ीमी के ख़िलाफ़ लिखते हुए एक रसाले में फ़रमाते हैं।

मुसलमान ऐ मुसलमान शरीयते मुसतफ़वी के ताबे फ़रमान जान और यक़ीन जान यह सजदा अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं उसके ग़ैर के लिए सजदए इबादत शिर्क ओ कुफ़ है और सजदए तहिईयत हराम और गुनाहे क़बीरा बिल यक़ीन। सजदए ताज़ीमी के कुफ़ होने में इख़्तेलाफ़ है बाज़ उलमा के नज़दीक कुर्फ़ है और हराम तो सभी के नज़दीक़ है।

बाज़ मुख़ालफ़ीन आला हज़रत पर क़ब्र परस्त होने जैसे इल्ज़ाम लगाते हैं। फ़ाज़िले बरेलवी से एक साहब ने अर्ज़ किया कि क़ब्र का ऊँचा बनाना कैसा है आपने इरशाद फ़रमाया ख़िलाफ़े सुन्नत है। मेरे वालिदे माजिद मेरी वालिदा माजिदा और भाई की क़ब्रें देखिये एक बालिश्त से ऊंची न होंगी और क़ब्र पर नमाज़ पढ़ना और क़ब्र की तरफ़ नमाज़ पढ़ना हराम और मुसलमान की क़ब्र पर क़दम रखना हराम क़ब्रो पर मस्जिद बनाना या ज़राअत वग़ैरह करना हराम।

बोसा व तवाफ़े क़ब्र से मुताल्लिक़ एक सवाल के जवाब में फ़तावा रज़विया चौथी जिल्द में फ़रमातें हैं।

मज़ार का तवाफ़ ताज़ीम की नियत से नाजायज़ है क्यों कि तवाफ़ ख़ानए क़ाबा के साथ मख़सूस है। मज़ार को बोसा न देना चाहिये उलमा इसमें मुख़्तलिफ़ हैं और बेहतर बचना है और इसी में अदब ज़्यादा है वल्लाह तआला आलम।

मज़ारात पर उर्स के ज़माने में औरतें बहुत जाती हैं जिससे बहुत सी बुराईयाँ फैलती हैं इनके ख़िलाफ़ फ़ाज़िले बरेलवी ने एक रिसाला लिखा। जिसमें औरतों को मज़ारात पर जाने से रोकने का हुक्म दिया।

फ़ाज़िले बरेलवी उर्स में सिर्फ़ .कुरआन ख़्वानी इसाले सवाब व दूसरी सही बातों को पसंद करते थे। रक़्स, ग़ैर शरई कव्वाली और शराब कबाब की महफ़िलो के सख़्त ख़िलाफ़ थे। उर्स में और मज़ारात पर जो ग़ैर शरई बातें होती हैं उनसे मुख़ालफ़ीन को सुन्नीयों को बदनाम करने का मौक़ा मिलता है। आला हज़रत इन ग़ैर शरई चीज़ों के ख़िलाफ़ थे।

बाज़ जगह ऐसा होता है कि लोग फ़र्ज़ी और मसनूई क़ब्र बनाकर ऐलान कर देते हैं कि इस क़ब्र में फ़लाँ बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाये हैं और उसके बाद उर्स और दीगर लवाज़मात शुरू कर देते हैं इन सब चीज़ों के बारें में फ़तावे रज़विया चौथी जिल्द में आप फ़रमाते हैं

फ़र्ज़ी क़ब्र की ज़ियारत के लिए बुलाना और उसके लिए यह सब बातें करना सख़्त गुनाह और जबकि वह इस पर अड़ा रहे और ऐलान के साथ यह सब करा रहा है तो वह फ़ासिक़े मौअल्लिन है और फ़ासिक़े मौअल्लिन को इमाम बनाना गुनाह और उसके पीछे नमाज़ पढ़ी तो फेरना वाजिब। इनके इस जलसे में शिरकत करना गुनाह और जो लोग उनसे .खुश हों वह सब गुनाहगार और फ़ासिक़ हैं।

एक साहब ने सवाल किया कि किसी द्रख़्त या ताक़ में शहीद मर्द का होना वहाँ हर जुमेरात को शीरीनी वग़ैरह पर फ़ातहा दिलाना, हार लटकाना, लोबान सुलगाना, मुरादें माँगना यह सब चीज़े दुरूस्त हैं या नहीं। आपने जवाब दिया : –

यह सब वाहीयात ख़ुराफ़ात और जाहीलाना हिमाक़त व बतलात हैं। इनका दूर करना लाज़िम। (अहकामे शरीअत)

बहुत से लोग अपने नफ़्स के ख़ातिर अड़ी दिलचस्पी से कव्वाली मय मज़ामीर यानी म्यूज़िक वग़ैरह की महफ़िल में तशरीफ़ ले जाते हैं और सिमा सुनते हैं फ़ाज़िले बरेलवी एक सवाल के जवाब में लिखते हैं ख़ाली क़व्वाली जायज़ है (यानी बग़ैर ढोल बाजे के जैसे शायर लोग जलसों में नात शरीफ़ पढ़ते हैं, बस इतना जायज़ है) और मज़ामीर हराम (अहकामे शरीअत)

एक दूसरी जगह लिखते हैं ऐसी क़व्वाली जिसमें ढोल सारंगियाँ

वग़ैरह बजें वह सब हराम हैं हाज़रीन सब गुनाहगार हैं और उन सब का गुनाह ऐसा उर्स करने वालों और क़व्वालों पर है। और क़व्वालों का भी गुनाह उस करने वालों पर है बग़ैर इसके कि उर्स करने वालों के माथे क़व्वालों का गुनाह जाने से क़व्वालो पर से गुनाह की कुछ कमी आ जाती है या उसके और क़व्वालों के ज़िम्में हाज़रीन का वबाल पड़ने से हाज़रीन के गुनाह में कुछ कमी ही नहीं, बल्कि हाज़रीन में हर एक पर अपना पूरा गुनाह और क़व्वालों पर अपना गुनाह अलग और सब हाज़रीन के बराबर अलग हैं। और ऐसा उर्स करने वाले पर. अपना गुनाह अलग और क़व्वालों के बराबर अलग और सब हाजरीन का अलैहिदा। हुक्म बयान करने के बाद फ़रमाते हैं मुसलमानों जो आइम्माए तरीक़त इस दर्जा ऐहतियात फ़रमाये कि ताली की सूरत को ममनू बतायें वह और मआज़ अल्लाह मज़ामीर की तोहमत, अल्लाह इंसाफ़ ! कैसा खब्द बेरब्त है। अल्लाह इत्तेबाए शैतान से बचाये और सच्चे महबूबाने .ख़ुदा की इत्तेबा अता फ़रमाये, आमीन (अहकामे शरीअत)

ताज़ियादारी जिसमें आजकल के बहुत से जाहिल सुन्नी भी गिरफ़्तार हैं और इसमें बहुत सी बुरी रस्में राइज है। बहुत सी बातें ऐसी होती है जो मुसलमानों के लिए बड़ी शर्म की बात है। फ़ाज़िले बरेलवी एक सवाल के जवाब में लिखते हैं ताज़िया आता देखकर रोना या रोनी सूरत बनाना तो दूर उसकी जानिब देखना ही मना है। सुना जाता है कि इसकी शुरूआत तैमूर लंग बादशाह देहली के वक़्त से हुई वल्लाह तआला आलम (इरफ़ाने शरीअत)

मौहर्रम में मरसिया ख़्वानी की मजलिस में शिरकत जायज़ है या नहीं उसके जवाब में लिखते हैं नाजायज़ है यह महफ़िलें मुनकिरात और खिलाफे शरा बातों से भरी हुई होती हैं। (इरफ़ाने शरीअत)

ताज़िया और ताज़ियादारी के बारे में एक जगह फ़ाज़िले बरेलवी लिखते हैं –

हर जगह नई तराश नई गढ़त जिसे अस्ल रौज़ा सय्यदुश्शोहदा रदियल्लाहु तआला अन्हु से न कुछ इलाक़ा न कुछ निसबत। फिर किसी में परियाँ, किसी में बर्क़, किसी में और बेहुदा तमतराक़ फिर कूचा ब कूचा दश्त बदश्त, इज़हारे ग़म के लिये उनका गश्त और उसके गिर्द सीना ज़नी मातमदारी की शोर अफ़गनी, हराम मरसियों से नौहाकनी अक्लों नक़्ल से कटी छनी, कोई खपच्चीयों को झुक कर सलाम कर रहा है कोई तवाफ़ कर रहा

है कोइ सजदे में गिरा है। कोई इस मायये बिदआत को माअज़अल्लाह जलवागाहे हज़रत इमाम आली मक़ाम समझकर उस अबरक से कोई अपनी मुरदे माँग रहा है मन्नते मांगता है, अरज़ीयाँ बाँधता है– हाजत रवा जानता है फिर बाक़ी तमाशे बाजे तमाशे मर्दो औरतों का रातों रात मेल और तरह तरह के बेहूदा खेल उस पर तुर्रा यह (चन्द लाइनों के बाद)– अब बाहर अशरा के फूल खिले ताशे बाजे बजते चले रंग रंग के खेलों की धूम, बाज़ारी औरतों का हर तरफ़ हुजूम –शहबानो मेलों की पूरी रूसूम– जश्ने फ़ासिकाना– यह और कुछ उसके साथ ख़्याल वह कुछ तो गोया यह साख़्ता ढाँचे बिऐनहा हज़रत शोहदा किराम अलैहिमुर्रिदवान के पाक जनाज़े हैं।

"ऐ मोमिनों उठाओ जनाज़ा हुसैन का" गाते हुए मसनूई कर्बला पहुँचे वहाँ कुछ नोच उतार बाक़ी तोड़ ताड़ दफ़न कर दी। यह हर साल फ़ुज़ूल ख़र्चे का वबाल अलग है।

अल्लाह तआला सदका ख़ैरात शोहदए किराम कर्बला अलैहिमुर्रिदवान का मुसलमानों को नेक तौफ़ीक बख़्शे और बिदआत से तौबा दे आमीन आमीन।

दावते मईयत के बारे में तहक़ीक़ फ़रमाते हैं कि मुर्दे का खाना सिर्फ़ .फ़ुकरा के लिए है। आम दावत के तौर पर.जो करते हैं यह मना है। ग़नी को न खाना बेहतर मइयत के घर शादियों की तरह अहबाब और दोस्तों की तरह जमा होना। और दावतों के मुताल्लिक़ एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं ऐ मुसलमान यह पूछता है जायज़ है या क्या ? यह पूछ कि नापाक रस्म कितने कबीह और शदीद गुनाहों सख़्त व शनी ख़राबियों पर मुशतमिल है।

एक दूसरी जगह तहरीर फ़रमाते हैं(यह चीज़ जिन पर फ़ातिहा दी गई हो) ग़नी न लें। फ़कीर लें और वह जो इनके इन्तेज़ार में रहता है उनका क़ल्ब सियाह हो जाता है। मुशरिकों वग़ैरह को उनका देना गुनाह, गुनाह गुनाह फ़कीर लेकर ख़ुद खाये ग़नी ले ही नहीं और ले लिये हों तो मुसलमान फ़कीर को देदे। यह हुक्म आम फ़ातिहा का है। नियाज़ औलिया किराम तुआमे मौत (दावते मइयत) नहीं वह तबर्रुक है फ़कीर व ग़नी सब लें जबकि मानी हुई नज़र बतौर नज़र शरई न हो नज़र शरई नज़र फिर ग़ैर फ़क़ीर को जायज़ नहीं। वल्लाह तआला आलम। (अहकामे शरीअत)
आपने अपनी किताबों में उन बहुत सी गलत और बेबुनियाद रवायतों की जो अवाम में राएज हैं उनकी तरदीद की है जिन में से दो तहरीरें दर्ज ज़ेल हैं।

एक साहब ने पूछा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वादिए अमीन में नालैन शरीफ़ उतारने का हुक्म हुआ था। शब्बे मेराज जब हुज़ूर –ए– अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अर्शे बरी पर पहुँचे तो नालैन पाक उतारना चाहा फ़ौरन ग़ैब से निदा आई ऐ हबीब तुम्हारे नालैन शरीफ़ रौनक़ अफ़रोज़ होने से अर्श की ज़ीनत व इज़्ज़त ज़्यादा होगी।

आपने इरशाद फ़रमाया – यह रिवायत महज़ बातिल व मौज़ू है।

(अलमलफ़ूज़ हिस्सा दोयम)

एक वाईज़ साहब ने बयान किया कि एक मरतबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि तुम वही कहाँ से और किस तरह लाते हो। आप ने जवाब में अर्ज़ किया कि एक पर्दे से आवाज़ आती है। आपने दरयात फ़रमाया कि कभी तुम ने पर्दा उठाकर देखा। उन्होंने जवाब दिया कि यह मेरी मजाल नहीं कि पर्दा उठा सकूँ। आपने फ़रमाया अबकी पर्दा उठाकर देखना। हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने ऐसा ही किया। क्या देखते हैं कि पर्दे के अन्दर ख़ुद हुज़ूर पुरनूर जलवा फ़रमा हैं और अमामा सर पर बाँधे हैं और सामने शीशा रखा है और फ़रमा रहें हैं मेरे बन्दे को यह हिदायत करना। यह रिवायत कहाँ तक सही है। अगर ग़लत है तो इसका बयान करने वाला किस हुक्म के तहत में दाख़िल।

अलजवाब– यह रिवायत महज़ झूठ और क़िज़्बो इफ़्तिरा है इसका यूँ बयान करने वाला इबलीस का मसख़रा है और अगर उसके ज़ाहिर मज़मून का मोतक़िद है तो काफ़िर है।

(इरफ़ाने शरीअत)

यह बात साफ़ ज़ाहिर हो गई कि फ़ाज़िले बरेलवी ने ग़लत रस्मों रिवासजो बातिल ख़्यालात बेबुनियाद रिवायात बिदआत व ख़ुराफ़ात और मुनकिरात शरईया की रोक थाम और उनकी बेख़कनी में कोई कसर न छोड़ी और अपने क़लम और ज़ुबान की ताक़त से उनकी जड़ों को उखाड़ दिया इसके बावजूद मुख़ालफ़ीन का यह कहना कि उनकी ज़ात से बिदआत व ख़ुराफ़ात को फ़रोग़ हुआ ऐसी बातें करना इंसाफ़ के ख़िलाफ़ है और बड़ा ज़ुल्म है और नासमझी का काम।

नोटः– इस मौज़ूँ पर तफ़सीली जानकारी के लिए किताब "इमाम अहमद रज़ा रद्दे बिदआत व मुनकिरात" का मुताअला करें।

हज़रत की नातिया शायरी पर एक नज़र

मुल्के सुख़न की शही तुमको 'रज़ा' मुसल्लम
जिस सिम्त आ गये हो सिक्के बिठा दिए हैं

आला हज़रत का यह मक़ता (ग़ज़ल या नात का आख़री शेर जिसमें शायर का तख़ल्लुस होता है) शायराना तअल्ली ही नहीं बल्कि हक़ीक़त है क्योंकि आपने हर लग़वियात से बहुत दूर रहकर फ़ने सुख़न (शायरी का फ़न) के हर किस्म में लिखा है। ग़ज़ल, क़सीदा, मसनवी, मुस्तज़ाद, क़तआत रूबाईयात वग़ैरा जिस मैदान की तरफ़ आ गए हैं सिक्के बिठा दिए हैं। आपके कलाम में वह तमाम ख़ूबियाँ पाई जाती हैं जो एक माहिर शायर में पाई जाती हैं।

आपका नातिया दीवान "हदाइके बख़्शिश" हम्द –ओ– नात, दुआ–ओ–इल्तिजा, सलाम–ओ–मनक़बत, इश्क–ओ–महब्बत, हक़ीक़त–ओ–मारफ़त, मोजज़ात–ओ–करामत, शरहे आयात ओ हदीस वग़ैरह मज़ामीन का ऐसा बहता समन्दर है जिसकी गहराई का अंदाज़ करना अहले नज़र ही का काम है।

जिस तरह आप इमाम अहले सुन्नत हैं, उसी तरह आपका कलाम भी कलाम –ओ– सुख़न का इमाम हैं। चुनांचे आपके दीवान हदाइके बख़्शिश को "कलामुल इमाम इमामुल कलाम" कहा गया है क्योंकि आपका कलाम आपके इश्क़ भरे दिल की आवाज़ है और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तारीफ़ करने वालों के लिए शमे हिदायत है।

आप दूसरे शायरों की तरह सुबह से शाम तक अशआर की तैयारी में मसरूफ़ नहीं रहते थे बल्कि जब प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की याद तड़पाती और दर्दे इश्क़ आपको बेताब करता तो ख़ुद –ब– ख़ुद ज़बान पर नातिया अशआर जारी हो जाते और इन्हीं अशआर से आपको तसकीन होती। चुनांचे आप अक्सर फ़रमाया करते थे कि जब सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की याद तड़पाती है तो मैं नातिया अशआर से बेक़रार दिल को तसकीन देता हूँ वरना शेर –ओ– सुख़न मेरी आदत नहीं।

आपके शेर –ओ– सुख़न में दर्द के साथ–साथ अदब भी है ख़ुसूसन क़सीदए रंग इलमी, क़सीदए रंग इशक़ी, क़सीदए सलाम, क़सीदए

दुरूद और क़सीदए मेअराज वग़ैरा में तो पेश किया गया अदब बड़े बलन्द पाए का है।

आपने शेर –ओ– सुख़न का सारा ज़ोर नात के मैदानमें ख़र्च किया और कभी किसी अमीर, बादशाह नवाब हाकिम वग़ैरा की तारीफ़ में कभी कोई ग़ज़ल वग़ैरा नहीं लिखी। एकं मरतबा नानपारा के नवाब की शान में शायरों ने क़सीदे लिखे कुछ लोगों ने गुज़ारिश की कि आप भी नवाब नानपारा की शान में कोई क़सीदा लिख दें उसके जवाब में आपने एक नात लिखी जिसका मिसरा यह है –

वह कमाले ले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नुक़्स से जहाँ नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शमा है कि धुँआ नहीं

और मक़ते में "नानपारा" को कितने लतीफ़ अन्दाज़ में अदा करते हैं

करूँ मदहे अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
गदा हूँ अपने करीम का मेरा दीन पारए नाँ नहीं

आपके कलम में शरीअत का बड़ा ऐहतराम देखने को मिलता है। नात कहना आपने .कुरआन से सीखा आप ख़ुद ही एक रूबाई में फ़रमाते हैं

हूँ मैं अपने कलाम से निहायत महज़ूज़
बेजा से है अलमिन्नतुलिल्लाह महफ़ूज़
.कुरआन से मैंने नातगोई सीखी
यानी रहे अहकामे शरीअत मलहूज़

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नाते पढ़ना और लिखना आशिक़ाने रसूल का शौक़ रहा है लेकिन नात का लिखना बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है आला हज़रत फ़रमाया करते थे।

हक़ीक़तन नात शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है जिसको लोग आसान समझते हैं इसमें तलवार की धार पर चलना है अगर बढ़ता है तो उलूहियत (.ख़ुदाई) में पहुँच जाता है और कमी करता है तो तनक़ीस होती है। अल्बत्ता हम्द आसान है कि उसमें रास्ता साफ़ है और नात शरीफ़ में दोनों जानिब सख़्त हदबंदी है।

आला हज़रत ने शरीअत की हदों में रहकर जिस जोश और जिस ख़ुलूस में अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़मत व जलालत के ख़ुतबे पढ़े हैं और जिस वलवले के साथ अपने मौला की तारीफ

में नग़में गाये हैं वह आप अपनी मिसाल हैं नात और मनक़बत के मैदान में आपका जवाब नहीं आप का कोई मुक़ाबिल नहीं चुनांचे ख़ुद फ़रमाते हैं :–

यही कहती है बुलबुले बाग़े जिना के "रज़ा" की तरह कोई सहरे बयाँ
नहीं हिन्द में वासिफ़े शाहे हुदा मुझे शोख़िए तबए रज़ा की कसम

आपके नातिया दीवान हदाइक़े बख़्शिश से चन्द मशहूर नातें यहाँ पेश की जा रही हैं।

है कलामे इलाही में शम्सुद्दुहा

है कलाम इलाही मे शम्सुद्दुहा तेरे चेहरए नूरे फ़िज़ा की क़सम
क़समें शबे तार में राज़ ये था के हबीब की ज़ुल्फ़े दुता की क़सम
तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा तेरी ख़ल्क़ को हक़ ने जमील किया
कोई तुझसा हुआ है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम
वो ख़ुदा ने है मरतबा तुझको दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
के कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम
तेरा मसनदे नाज़ है अर्शे बरीं तेरा महरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हरदो जहाँ है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम
यही अर्ज़ है ख़ालिके अर्ज़ो समा वह रसूल हैं तेरे मैं बन्दा तेरा
मुझे उनके जवार में दे वो जगह के है ख़ुल्द को जिसकी सफ़ा की क़सम
तू ही बन्दो पे करता है लुत्फ़ो अता है तुझी पे भरोसा तुझी से दुआ
मुझे जलवए पाक रसूल दिखा तुझे अपने ही इज़्ज़ो उला की क़सम
मेरे गरचा गुनाह हैं हद से सिवा मगर उनसे उम्मीद है तुझसे रिजा
तू रहीम है उनका करम है गवाह वह करीम हैं तेरी अता की क़सम
यही कहती है बुलबुले बाग़े जिना कि 'रज़ा' की ताह कोई सहरे बयाँ
नहीं हिन्द में वासिफे शाहे हुदा मुझे शोख़िए तबऐ 'रज़ा' की क़सम

वाह क्या जूदो करम

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मागने वाला तेरा
धारे चलते हैं अता के वो है क़तरा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वो है ज़र्रा तेरा
अग़नियॉ पलते है दर से वो है बाड़ा तेरा
अस्फ़ियाँ चलते हैं सर से वो है रस्ता तेरा
फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जाने
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरैराह तेरा
आसमाँ ख़्वान ज़मीं ख़्वान ज़माना मेहमान
साहिबेख़ाना लक़ब किसका है तेरा तेरा
मैं तो मालिक ही कहूँगा के हो मालिक के हबीब
यानी महबूब–ओ–मुहिब में नहीं मेरा तेरा
चोर हाकिम से छुपा करते हैं या इसके ख़िलाफ़
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा
दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका ही सही भारी है भरोसा तेरा
एक मैं क्या मेरे इस्याँ की हक़ीक़त कितनी
मुझसे सौ लाख को काफ़ी है इशारा तेरा
ख़्वारो बीमार ख़ताकार सियाहकार हूँ मैं
राफ़ओ नाफ़ओ शाफ़ा लक़ब आक़ा तेरा
तूने इसलाम दिया तूने ज़माअत में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अतिया तेरा
तेरे सदक़े मुझे इक बूदं बहुत है तेरी
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलकता तेरा
हरमो तैबा ओ बग़दाद जिधर कीजिए निगाह
जोत पड़ती है तेरी नूर है छनता तेरा
तेरी सरकार में लाता है 'रज़ा' उसको शफ़ीअ
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेर

सबसे औला व आला हमारा नबी

सबसे औला व आला हमारा नबी
सबसे बाला ओ बाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनो आलम का दूल्हा हमारा नबी
बज़्मे आख़िर का शमऐ फ़रोज़ाँ हुआ
नूरे अव्वल का जलवा हमारा नबी
बुझ गई जिसके आगे सभी मशअलें
ऐसी शमा वह लाया हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रूसुल
और रसूलों से आला हमारा हमारा नबी
जैसे सब का ख़ुदा एक है वैसे ही
इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी
क़रनों बदली रसूलों की होती रही
चाँद बदली का निकला हमारा नबी
कौन देता है देने को मुँह चाहिए
देने वाला है सच्चा हमारा नबी
क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गये
पर न डूबे न डूबा हमारा नबी
सारे अच्छों से अच्छा समझइये जिसे
है उन अच्छों से अच्छा हमारा नबी
सारे ऊँचों से ऊँचा समझइये जिसे
है उन ऊँचो से ऊँचा हमारा नबी
जिसने टुकड़े किए हैं क़मर के वह है
नूरे वहदत का टुकड़ा हमारा नबी
सब चमक वाले चमकों में चमका किए
अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी
ग़मज़दों को रज़ा मुस़दा दीजे के है
बेकसों का सहारा हमारा नबी

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्से जहाँ नहीं
वही फूल ख़ार से दूर है वही शमा है कि धुआँ नहीं
दो जहाँ की बेहतरियाँ नहीं के अनानिए दिल ओ जाँ नहीं
मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किसको जुबाँ नहीं
वो सुख़न है जिसमें सुख़न न हो वो बयाँ है जिसका बयाँ नहीं
ब.खुदा .खुदा का यही है दर नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहाँ से हो यहीं आ के हो जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं
करें मुस्तफ़ा की अहानतें खुले बन्दों उस पे जुराअतें
के मैं क्या नहीं हूँ मुहम्मदी अरे हाँ नहीं अरे हाँ नहीं
तेरे आगे यूँ हैं दबे लचे .फ़ुसाहा अरब के बड़े बड़े
कोई जाने मुँह में .जुबाँ नहीं नहीं बल्कि जिस्म में जाँ नही
वो शरफ़ के क़ता हैं निसबतें वो करम के सबसे क़रीब हैं
कोई कह दो यास ओ उम्मीद से वो कहीं नहीं वो कहाँ नहीं
वही नूरे हक़ वही ज़िल्ले रब है उन्हीं से सब है उन्हीं का सब
नहीं उनकी मिल्क में आसमाँ के ज़मीं नहीं के ज़मा नहीं
वही ला मकाँ के मकीं हुए सरे अर्श तख़्त नशीं हुए
वो नबी है जिसके है ये मकाँ वो .खुदा है जिसका मकाँ नही
सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलाकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वो जो तुझ पे अयाँ नहीं
करूँ तेरे नाम पे जाँ फ़िदा न बस इक जाँ दो जहाँ फ़िदा
दो जहाँ से भी नहीं जी भरा करूँ क्या करोरों जहाँ नहीं
तेरा क़द तो नादिरे दहर है कोई मिस्ल हो तो मिसाल दे
नहीं गुल के पौदों में डालियाँ के चमन में सरवे चमाँ नहीं
नहीं जिसके रंग का दूसरा न तो हो कोई न कभी हुआ
कहूँ उसको गुल कहे क्या बनी के गुलों को ढेर कहाँ नही
करूँ मदहे अहले दुवल 'रज़ा' पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूँ अपने करीम कर मेरा दीन पारए नाँ नहीं

अर्शे हक़ है मसनदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की

अर्शे हक़ है मसनदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लहराएंगे ता हश्र चशमें नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
लावरब्बिल अर्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की
वो जहन्नम में गया जो उनसे मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
सूरज उलटे पाँव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नजदी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की
तुझसे और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयाँ रहे
फिर कहे मरदक के हूँ उम्मत रसूलुल्लाह की
नजदी उसने तुझको मोहलत दी के इस आलम में है
काफ़िरो मुरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वो करीम उनका ख़ुदा उनसे फ़ज़ूँ
और न कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की
ख़ाक होकर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की अकसीर है उलफ़त रसूलुल्लाह की
टूट जायेंगे गुनाहगारों के के फ़ौरन क़ैदो बन्द
हश्र को खुल जायेगी ताक़त रसूलुल्लाह की
या रब इक साअत में धुल जायेंगे सियाकारों के जुर्म
जोश पर आ जायेगी अब रहमत रसूलुल्लाह की
है गूले बाग़े कुदुस रूख़सारे ज़ेबाए हुज़ूर
सरवे गुलज़ारे कदम क़ामत रसूलुल्लाह की
ऐ 'रज़ा' खुद साहिबे क़ुरआँ है मददाहे हुज़ूर
तुझ से कब मुमकिन है फिर मिदहत रसुलुल्लाह की

ज़मीन-ओ- ज़मा तुम्हारे लिए

ज़मीन-ओ ज़मा तुम्हारे लिये मकी ओ मकाँ तुम्हारे लिए
चुनी–ओ–चुनाँ तुम्हारे लिए बने दो जहाँ तुम्हारे लिए
दहन में ज़ुबाँ तुम्हारे लिए बदन में है जाँ तुम्हारे लिए
हम आए यहाँ तुम्हारे लिए उठे भी वहाँ तुम्हारे लिए
फरिश्ते ख़िदम रसूल–ए–हशम तमाम–ए–उमम गुलामे करम
वुजूद–ओ–अदम हुदूस–ओ–क़िदम जहाँ में अयाँ तुम्हारें लिए
असालत–ए–कुल इमामत–ए–कुल सियादत–ए–कुल अमारत–ए–कुल
हुकूमत–ए–कुल विलायत –ए– कुल .खुदा के यहाँ तुम्हारे लिए
तुम्हारी चमक तुम्हारी दमक तुम्हारी झलक तुम्हारी महक
ज़मीन –ओ– फ़लक सिमाक–ओ– समक में सिक्का निशाँ तुम्हारे लिए
अता–ए–अरब जिलाए करब फ़यूज़–ओ– अजब बग़ैर–ए–तलब
ये रहमत –ए– रब है किसके सबब बरब्बे जहाँ तुम्हारे लिए
ज़ुनूब फ़ना उयूब हिबा क़ुलूब सफ़ा .खुतूब रिदा
ये ख़ूब अता कुरूब ज़ुदा पए दिल –ओ– जाँ तुम्हारे लिए
न जिन्न–ओ–बशर के आठ पहर मलाइका दर पे बस्ता कमर
ये ज़बीं ओ सर के क़ल्ब ओ जिगर हैं सदजा किनाँ तुम्हारे लिए
न रूहे अमीं न अर्श–ए–बरीं न लौह–ए–मुबीं कोई भी कहीं
ख़बर ही नहीं जो रमज़े खुली अज़ल की निहाँ तुम्हारे लिए
जिनाँ में चमन चमन में समन समन में फ़बन फ़बन में दुल्हन
सराए मिहन ये ऐसे मिनन ये अमनों अमाँ तुम्हारे लिए
ये मरहमतें के कच्ची मतें न छोडें लतें न अपनी गतें
क़ुसूर करें और उनसे भरें क़ुसूर –ए– जिनाँ तुम्हारे लिए
इशारे से चाँद चीर दिया छिपे हुए ख़ुर को फेर दिया।
गए हुए दिन को अस्र किया ये ताबो तवाँ तुम्हारे लिए
सबा वो चले के बाग़ फलें फूल खिलें के दिन हो भले
लिवा के तले सना में खुले "रज़ा" की ज़ुबाँ तुम्हारे लिए।

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले
बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
मदीने के ख़ित्ते ख़ुदा तुझको रखे
ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले
तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चशमे आलम से छुप जाने वाले
मैं मुजरिम हूँ आक़ा मुझे साथ ले लो
के रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले
हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले
तेरा खायें तेरे गुलामों से उलझें
है मुन्किर अजब खाने ग़ुर्राने वाले
रहेगा यूँही उनका चर्चा रहेगा
पड़े ख़ाक हो जायें जल जाने वाले
अब आई शफ़ाअत की साअत अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले
'रज़ा' नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहाँ तुमने देखे हैं चन्दराने वाले

सुनते हैं के महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई

सुनते हैं के महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई है
गर उनकी रसाई है लो जब तो बन आई है
मचला है कि रहमत में उम्मीद बन आई है
क्या तेरी मुजरिम क्या बात बनाई है
सबने सफ़े महशर में ललकार दिया हमको
ऐ बेकसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है
यूँ तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
यूँ टूटे हुए दिल ही ख़ास उन की कमाई है
बाज़ार--ए--अमल में तो सौदा न बना अपना
सरकार--ए-- करम तुझ में ऐबी की समाई है
गिरते हुओं को मुस्दा सजदे में गिरे मौला
रो --रो कर शफ़ाअत की तम्हीद उठाई है
ऐ दिल कि सुलगना क्या जलना है तो जल भी उठ
दम घुटने लगा ज़ालिम क्या धूनी रमाई है
मुजरिम को न शरमाओ अहबाब कफ़न ढक दो
मुँह देखकर क्या होगा परदे में भलाई हैं
अब आप ही सभांले-तो काम अब भी सभल जाये
हम ने तो कमाई सब फ़ेलों में गमाई है
ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है
तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बड़ाई है
मतले में यह शख़्स क्या था वल्लाह 'रज़ा' वल्लाह
सिर्फ़ उनकी रसाई है सिर्फ़ उनकी रसाई है

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे
बेकसी लूट ले .खुदा न करे
उसमें रौज़े का सजदा कि तवाफ़
होश में जो न हो वह क्या न करे
यह वहीं हैं जो बख़्श देते हैं
कौन इन जुर्मों पर सज़ा न करें
सब तबीबों ने दे दिया है जवाब
आह ईसा अगर दवा न करे
दिल कहाँ ले चला हरम से मुझे
अरे तेरा बुरा .खुदा न करे
दिल में रौशन है शमे इश्क़े रसूल
काश जोशे हवस हवा न करे
हश्र में हम भी सैर देखेंगे
मुनकिर आज उन से इल्तेजा न करे
ज़ाअफ़ माना मगर यह ज़ालिम दिल
उनके रस्ते में क्यों थका न करे
जब तेरी ख़ू है सब का जी रखना
वही अच्छा जो दिल बुरा न क़रे
दिल से इक ज़ौक़े मय का तालिब हूँ
कौन कहता है इत्तेबा न करे
ले 'रज़ा' सब चले मदीने को
मैं न जाऊँ अरे खुदा न करे

कन्ज़ुल ईमान (ईमान का ख़ज़ाना)

'एक इन्सान अपनी दिमाग़ी कोशिशों से बलन्द पाया मुसन्निफ़ व काबिल अदीब तो बन सकता है; अपनी ज़ाती क़ाबलियत से उर्दू, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी वग़ैरह मुख़्तलिफ़ ज़बानों का माहिर तो बन सकता है; बड़ी बड़ी डिग्रियाँ हासिल कर सकता है डाक्टरेट कर सकता है लेकिन क़ुरआने हकीम का मुतर्जिम (तर्जमा करने वाला) बनना उसके बस की बात नहीं क़ुरआने मजीद की तर्जुमानी करना, कलामें इलाही की अस्ल मंशा –ओ– मुराद को समझना आयाते क़ुरआनी के अंदाज़ को पहचानना, महकमात व मुताशाबेहात (महकमात यानी वह आयाते क़ुर्आनी जिनके मायनी साफ़ ज़ाहिर हो मुताशाबेहात वह आयाते क़ुर्आनी जिनके मायनी छुपे हुए हैं) में फ़र्क करना सिर्फ़ उस आलिमें दीन का काम है जिसका दिमाग़ अनवारे रब्बानी से रौशन, उसका क़ल्ब इश्क़े मुस्तफ़ा का मदीना और उसकी दीनी नज़र बहुत तेज़ हो। और आला हज़रत में यह तमाम ख़ूबियाँ मौजूद थीं।

जब हम दूसरे उर्दू तर्जमा से कन्ज़ुल ईमान (आला हज़रत ने अपने तर्जमे का यही नाम रखा है) मुक़ाबला करते हैं तो यह पाते हैं कि दूसरे मुतर्जिमों ने बहुतेरी जगह ऐसी ग़लतियाँ की हैं जो अल्लाह व रसूल की शान के एक दम ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा हम यह पाते हैं कि दूसरे लोगों ने अरबी को तो उर्दू में कर दिया मगर इस तबदीली को तर्जमा क़रार नहीं दिया जा सकता। दौरे हाज़रा के तर्जमें को जब हम देखते है तो आला हज़रत के तर्जमें कन्ज़ुल ईमान में यह ख़ासियतें पाते हैं :–

1– सही व क़दीम तफ़सीरों के मुताबिक़ है।
2– बेमिसाल सलीस ज़बान है।
3– अवामी लुग़ात व बाज़ारी बोली से पाक है।
4– कुरआने करीम की अस्ल मंशा व मुराद को बताता है।
5– आयाते रब्बानी के अन्दाज़े ख़िताब को पहुँचाता है।
6– क़ुरआन के मख़सूस मुहावरों की निशानदेही करता है।
7– क़ादिर –ए– मुतलक़ की इज़्ज़त व जलाल में ऐब का धब्बा लगाने वालों के लिए नंगी तलवार है।'
8– हज़रात अम्बिया की अज़मत –ओ– हुरमत का मुहाफ़िज़ –ओ– निगेहबान है।
9– आम मुसलमानों के लिए बा मुहावरा उर्दू में सादा तर्जमा है।

10—लेकिन उलमा व मशाइख़ के लिए हक़ाइक व मारफ़त का उमड़ता समन्दर है।

बस इतना समझ लीजिए कि .क़ुरआने हकीम क़ादिर मुतलक़ हक़ जल्लाजलालुहू का मुक़द्दस कलाम है और कन्ज़ुल ईमान उसका मौहज़्ज़ब तर्जमान (यानी ऐबो से पाक किया गया, ऐबो से पाक करने वाला तर्जमा) है। और क्यों न हो कि यह तर्जमा उसका पेश किया हुआ है जो इश्क़े मुस्तफ़ा अलैहिस्सलाते व सना का आलमबरदार, ताईदे रहमानी का सरमायादार, अनवारे रब्बानी का हामिल, हक़ाइक़े क़ुरआन का माहिर दक़ाइक़े आयात का आरिफ़ है। जो हमेशा अपने आप को अबदे मुस्तफ़ा समझता कहता और लिखता रहा जिसको आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कहते हैं.

यह मालूम करके आप को सख़्त हैरत होगी कि इतनी .ख़ूबी वाला तर्जमा बग़ैर किसी किताब की तैयारी से आलमे ज़हूर में आया है। वाकया यूँ है कि सदरूश शरिया हज़रत मौलाना अमजद अली आज़मी अलैहिर्रहमा ने क़ुर्आन मजीद की सही तर्जमें की .ज़रूरत पेश करते हुए आला हज़रत से तर्जमा करने की सिफ़ारिश की।

आपने वायदा तो फ़रमा लिया लेकिन दूसरे दीनी मसरूफ़ियात की वजह से देरी होती रही जब हज़रत सदरूश शरीया की जानिब से इसरार बढ़ा तो आला हज़रत ने फ़रमाया चूँकि तर्जमें के लिए मेरे पास मुसतक़िल वक़्त नहीं इसलिए आप रात में सोने के वक़्त या दिन में क़ैलूला के वक़्त आ जाया करें। चुनांचे हज़रत सदरूश शरिया एक दिन काग़ज़ कलम दवात लेकर आला हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो गये और यह दीनी काम भी शरू हो गया। तर्जमें का तरीक़ा यह था कि आला हज़रत ज़ुबानी तौर पर आयाते करीमा का तर्जमा बोलते जाते और सदरूश शरिया उसको लिखते जाते लेकिन यह तर्जमा इस तरह पर नहीं था कि पहले तफ़सीर व लुग़त देखें बाद में तर्जमा करें बल्कि आप क़ुरआन मजीद का फ़िलबदीह बर्जस्ता (यानी फ़ौरन .ज़ुबानी तौर पर इस तरह बोलते जाते जैसे कोई पुख़्ता याद्दाश्त का हाफ़िज़ अपनी कुव्वते हाफ़िज़ा पर बग़ैर ज़ोर डाले .क़ुरआन शरीफ़ फ़र—फ़र पढ़ता जाता है फिर जब सदरूश शरिया और दूसरे उलमाए हाज़रीन आला हज़रत के तर्जमा का तफ़सील की किताबों से मुक़ाबला करते तो यह देख कर हैरान रह जाते कि आला हज़रत का तर्जमा बिल्कुल सही है। अलग़र्ज़ इसी थोड़े से

समय में तर्जमा होता रहा और फिर वह मुबारक घड़ी भी आ गई जब सदरूश शरिया अलैहिर्रहमा की मेहनत व कोशिश की बदौलत दुनियाए सुन्नियत को कन्ज़ुल ईमान की दौलत नसीब हुई।

जब हम आला हज़रत के तर्जमें कन्ज़ुल ईमान का मुक़ाबला दूसरे तर्जमों से करते हैं तो यह पाते हैं कि दूसरे लोगों ने बाज़ गलतियाँ ऐसी की हैं जो अल्लाह व रसूल की शान के ख़िलाफ़ हैं इस मौज़ूँ पर कई किताबें भी लिखी गई हैं जो हज़रात तफ़सील जानना चाहें वह उनको पढ़ें। अलबत्ता शाह रफ़ीउद्दीन अलैहिर्रहमा का तर्जमा क़ाबिले एतमाद था मगर अब उसमें भी कुछ लोगों ने तहरीफ़ (फ़ेर बदल) करके उसे ग़ैर ऐतमादी बना दिया।

मुसाफ़िरे आलिमे बाला की पेशनगोई

आला हज़रत उन औलिया कामलीन में से थे जिनके दिलों पर अल्लाह के फ़र्ज़ की अहमीयत छाई रहती है। चुनांचे 1339 हिजरी का रमज़ान शरीफ़ में पड़ा और मुसलसल बीमारी और कमज़ोरी की वजह से आला हज़रत ने इस साल अपने अंदर रोज़ा रखने की ताक़त न पाई तो अपने हक़ में फ़तवा दिया कि पहाड़ पर सर्दी होती है वहाँ पर रोज़ा रखना मुमकिन है। लिहाज़ा रोज़ा रखने के लिए जाना इसतिताअत की वजह से फ़र्ज़ हो गया (यानी जो शख़्स बीमारी वग़ैरा किसी मजबूरी से रोज़ा न रख सके और किसी दूसरी जगह जाकर रोज़ा रखने में कोई परेशानी न आये तो उसे वहाँ जाकर रोज़ा रखना चाहिये) फिर आप रोज़ा रखने के इरादे से भवाली ज़िला नैनीताल तशरीफ़ ले गये।

आपको अपने आक़ा और मौला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अता किये इल्म से मालूम हो चुका था कि मुझे 134 हिजरी में इस दुनियाँ से कूच करके बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में हाज़िर होना है। चुनांचे भवाली में ही तीन रमज़ान 1339 हिजरी को अपने तारीख़े विसाल की ख़बर देते हुए आप ने अपने हक़ में यह आयते करीमा तहरीर फ़रमाई –

وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَّأَكْوَابٍ ط

سـ ٣٠ ١٣ ـه

अल्लाह अल्लाह अपने आक़ा के अता करदा इल्म से आला

हज़रत ने अपने इंतेक़ाल की ख़बर चार माह बाईस दिन पहले ही देदी। हत्ता कि. वह आयाते मुबारका भी तहरीर फ़रमा दी। जिससे आपका तारीख़े विसाल निकलता है। और फिर दुनिया ने देखा 25 सफ़र 1340 हिजरी को आलमे बाला के सफ़र पर रवाना हो गए। लेकिन यह सब देखने और सुनने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वाले अभी तक बाज़ न आये और अभी तक यही बकते हैं कि हुज़ूर को अपनी मौत की ख़बर न थी। माआज़ अल्लाह तआला।

नसीहत की आख़री मजलिस

भवाली ही में आला हज़रत के पहलू में दर्द हुआ जिस की वजह से बहुत कमज़ोरी हो गई यहाँ तक कि मौहर्रम के महीने में आपको कुछ दिन तक भवाली ही में रहना पड़ा। 14 मौहर्रम 1340 को आप भवाली से बरेली तशरीफ़ लाये। आपकी बीमारी की इत्तेला हर तरफ़ पहुँच चुकी थी इसलिए लोग आला हज़रत का हाल पूछने को आने लगे। कमज़ोरी के बावजूद आपकी हर महफ़िल में दीनी नसीहतें होतीं। इसी दौराने अलालत आप सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़िक्र बहुत ज्यादा करते और अपने तमाम मुसलमानों के लिये हुस्न–ए– ख़ातमा की दुआ करते। अक्सर ऐसी अहादीस बयान करते कि आपकी और सुनने वालों की रोते–रोते हिचकियाँ बँध जाती। अक्सर फ़रमाते जिस का ईमान पर ख़ातमा हो गया, उसने सब कुछ पा लिया। कभी फ़रमाते अल्लाह तआला अगर बख़्श दे तो उसका फ़ज़ल है न बख़्शे तो उसका अदल इंसाफ़ है। एक दिन लोगों को बुलवाया और दीनो ईमान को बचाने के सिलसिले में उनको सख़्त ताकीद और नसीहत फ़रमाई। वाज़ की इस आख़िरी मजलिस में आपने जो ईमान अफ़रोज़ तक़रीर फ़रमाई उसका निचोड़ यह है (जो आला हज़रत के वसाया शरीफ़ से लिया गया है)

प्यारे भाईयों मुझे मालूम नहीं कि मैं कितने दिन तुम्हारे अन्दर ठहरूँगा। तीन ही वक़्त होते हैं बचपन जवानी और बुढ़ापा। बचपन गया जवानी आई। ज़वानी गई बुढ़ापा आया। अब कौन सा चौथा वक़्त आने वाला है जिसका इन्तेज़ार किया जाये एक मौत ही बाक़ी है। अल्लाह क़ादिर है कि ऐसी हज़ार मजलिसें अता फ़रमाये और आप सब लोग हों और मैं आप सब लोगों को सुनाता रहूँ मगर बज़ाहिर इसकी उम्मीद नहीं।

ऐ लोगों तुम प्यारे मुस्तफ़ा की भोली भेड़े हो। भेड़िये तुम्हारे चारों तरफ है वह चाहते हैं कि तुम्हें बहकायें, फ़ितने में डाल दें तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जायें। इन से बचो दूर भागो। देवबन्दी, वहाबी, नैचरी, राफ़ज़ी, कादयानी, चकड़ालवी, वग़ैरह यह सब फ़िरके भेड़िये हैं। तुम्हारे ईमान की ताक़ में है इनके हमलो से ईमान को बचाओ।

हुज़ूर –ए– अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के नूर हैं। हुज़ूर से सहाबा रौशन हुए। सहाबा किराम से ताबईन रौशन हुए। ताबईन से तबअ ताबईन रौशन हुए। उनसे आइम्मा मुजतहेदीन रौशन हुए। उनसे हम रौशन हुए। अब हम तुम से कहते हैं यह नूर हमसे ले लो। हमें इसकी ज़रूरत है कि तुम हम से रौशन हो। वह नूर यह है कि "अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सच्ची महब्बत उनकी ताज़ीम और उनके दोस्तों की ख़िदमत और उनकी तकरीम और उनके दुश्मनों से सच्ची अदावत"। जिससे अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में अदना सी तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो फ़ौरन उससे जुदा हो जाओ । जिसको बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो फिर वह तुम्हारा कैसा भी बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों न हो अपने अन्दर से उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेक दो। मैं पौने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और इस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ। अल्लाह तआला .ज़ुरूर अपने दीन की हिमायत के लिए किसी बन्दे को खड़ा कर देगा मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आये कैसा हो और तुम्हें क्या बताये इसलिए इन बातों को ख़ूब सुन लो। हुज्जतुल्लाह (अल्लाह की दलील) क़ायम हो चुकी। अब मैं क़ब्र से उठकर तुम्हारे पास बताने न आऊँगा जिसने इसे सुना और माना क़यामत के दिन उसके लिये नूर व नजात है और जिसने न माना उसके लिए ज़ुलमत व हलाकत है।

दस्ते हक़ परस्त की आख़री तहरीर

आला हज़रत ने 25 सफ़र 1340 जुमा मुबारक को विसाल से दो घन्टा सत्रह मिनट पहले तजहीज़ व तकफ़ीन (कफ़न दफ़न) वग़ैरह से मुताल्लिक़ .ज़ुरूरी वसाया जिसमें चौदह अहम बातें थी क़लम बंद करा और आख़िर में 12 बजकर 21 मिनट पर .ख़ुद दस्ते अक़दस से हम्द व दुरूद

शरीफ़ के क़लमात तहरीर फ़रमाये जो यह हैं:–

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى وَبَارَكَ وَسَلَّمَ عَلٰى
شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ وَاٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ وَ
صَحْبِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ
اِلٰى اَبَدِ الْاٰبِدِيْنَ اٰمِيْنَ وَ الْحَمْدُ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

शहीदे महब्बत की दुनिया से रवानगी का ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र

आला हज़रत ने 25 सफ़र 1340 मुताबिक़ 28 अक्टूबर 1921 ई० को जुमा के दिन दो बजकर अड़तीस मिनट पर ऐन अज़ाने जुमा में उधर हइयाअललफ़लाह की आवाज़ सुनी इधर रूह परवाज़ हुई। फ़ाज़िले जलील हज़रत मौलाना हसनैन रज़ा खाँ साहब जो विसाल के वक़्त आला हज़रत की बारगा में हाज़िर थे वह तहरीर फ़रमाते हैं कि:–

आला हज़रत ने वसीयत नामा तहरीर कराया फिर उस पर .खु अमल कराया। विसाल शरीफ़ के तमाम काम घड़ी देखकर ठीक वक़्त प इरशाद होते रहे जब दो बजने में चार मिनट बाक़ी थे तो आप ने वक़्त पूछा अर्ज़ किया गया कि इस वक़्त एक बजकर छप्पन मिनट हो रहे हैं। फ़रमाया घड़ी खुली सामने रख दो। यकायक इरशाद फ़रमाया कि तसावीर हटा दो। (हाज़रीन सोचने लगे यहाँ तस्वीरों का क्या काम) फिर .खुद ही इरशा फ़रमाया यही कार्ड, लिफ़ाफ़ा, रूपया, पैसा। फिर ज़रा देर बाद हज़र मौलाना मुहम्मद हामिद रज़ा खाँ से इरशाद फ़रमाया वुज़ू करके .कुरआ करीम लाओ। अभी वह तशरीफ़ न लाये थे कि हुज़ूर मुफ़्ती –ए– आज़ मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा खाँ से फिर इरशाद फ़रमाया अब बैठे क्या कर रहे सूरए यासीन और सूरए रअद शरीफ़ तिलावत करो।

अब आपकी उम्र शरीफ़ के चन्द मिनट रह गये हैं। आपके हुक्म के मुताबिक़ दोनों सूरते तिलावत की गईं आप ने उन्हें बग़ौर सुना जिस आयत में शुबा हुआ या सुनने में पूरी न आई उसे ख़ुद तिलावत फ़रमाकर बता दिया।

उसके बाद सय्यद महमूद हुसैन साहब एक मुसलमान डाक्टर सय्यद आशिक़ हुसैन साहब को अपने साथ लेकर आये। उनके साथ और लोग भी हाज़िर हुए उस वक़्त जो जो हज़रात अंदर गये सब के सलाम के जवाब दिये और सय्यद महमूद अली साहब से दोनों हाथ बढ़ाकर मुसाफ़ा फ़रमाया। डाक्टर साहब ने आला हज़रत क़िबला से हाल दरयाफ़्त फ़रमाना चाहा मगर आप उस वक़्त सफ़र की दुआए पढ़ रहे थे फिर कलिमए तय्यबा लाइलाहाइल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पूरा पढ़ा। जब इसकी ताक़त न रही और सीने पर दम आया और होटों की हरकत व ज़िक्रे पास अनफ़ास (ज़िक्र ख़फ़ी यानी बिना होंट व ज़बान हिलाए सासो सें ज़िक्र करना) का ख़त्म होना था कि चहरए मुबारक पर एक चमक नूर की चमकी जिसमें जुम्बिश थी जैसे आईने में सूरज की चमक जुम्बिश करती है। उसके ग़ायब होते ही वह जाने नूर जिस्में अतहर से परवाज़ कर गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। खुद इसी ज़माने में आपने इरशाद फ़रमाया था जिन्हें सरकार मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिसे एक झलक दिखा देते हैं वह शौक़े दीदार में ऐसे जाते हैं कि जाना मालूम नहीं होता।

25 सफ़र को ठीक नमाज़े जुमा के वक़्त इस बात का मुशाहिदा हुआ कि महबूबाने ख़ुदा बड़ी ख़ुशी से जान देते हैं। जाकनी (मौत का आख़री दम निकलने का वक़्त) सख़्त तरीन वक़्त है लोगों के चेहरों पर वहशत छा जाती है वरना कम अज़ कम शिकन पड़ जाती है और क्यों न हो यह जिस्म और रूह दो पुराने दोस्तों की जुदाई की घड़ी है। मगर आला हज़रत के चेहरए मुबारक पर मैंने तकलीफ़ के बजाय ख़ुशी देखी। आप विसाले महबूब की पहले से बशारत पा चके थे। विसाले महबूब का वक़्त क़रीब आ गया है अज़ीज़ और रिश्तेदार हाज़िर हैं मगर आप किसी की तरफ़ नज़र भर कर नहीं देखते यक़ीनन आप ऐसी ज़ात से अनक़रीब मिला चाहते हैं जो आपको सब प्यारों से कहीं ज़्यादा प्यारी और महबूबे हक़ीक़ी है।

ग़ुस्ल शरीफ़ में उलमाए किराम सादाते किराम और हुफ़्फ़ाज़

आली मक़ाम शरीक थे। जनाब सय्यद अज़हर अली साहब ने लहद खोदी। वसीयत के मुताबिक़ सदरूश शरिया अमजद अली आज़मी ने ग़ुस्ल दिया। और जनाब हाफ़िज़ आमिर हसन साहब मुरादाबादी ने मदद की। हज़रत मौलाना सय्यद सुलेमान अशरफ़ प्रोफ़ेसर मुसलिम यूनिवार्सिटी अलीगढ़, हज़रत मौलाना मुहम्मद रज़ा खाँ, हज़रत मौलाना हसनैन रज़ा खाँ सय्यद महमूद जान साहब , सय्यद मुमताज़ अली साहब वग़ैरहुम पानी देने में मसरूफ़ थे। हज़रत मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ मुफ़्ती –ए– आज़म हिन्द अलावा दूसरी ख़िदमात के वसीयत नामे की दुआयें भी याद फ़रमाते रहे। हज़रत हुज्जतुल इसलाम मौलाना हामिद रज़ा खाँ ने मवाज़ेअ (सजदे की जगह) पर काफ़ूर लगाया।

हज़रत सदरूल अफ़ाज़िल उस्तादुल उलमा मौलाना सय्यद नईम उद्दान मुरादाबादी अलैहिर्रहमा ने कफ़न शरीफ़ बिछाया। अल्ग़र्ज़ ग़ुस्ल व तकफ़ीन से फ़ारिग़ होने पर औरतों को ज़ियारत का मौक़ा दिया गया ज़नाज़ा तैयार हुआ तो कफ़न लाने वाले साहब इत्र लाना भूल गये थे ऐन ज़रूरत के वक़्त मोहल्ला मीरा की पैठ के एक हाजी साहब आला हज़रत क़िबला की नज़्र के लिए मदीने पाक का इत्र, ग़िलाफ़े क़ाबा, आबे ज़मज़म और ख़ाके शिफ़ा वग़ैरह लेकर आ गये। यह अतिया ऐन वक़्त पर पहुँचा यह सब चीज़ें फ़ौरन काम आईं। घर में औरतें और बाहर मर्दों का हुजूम था ऐसा जोश कभी न देखा गया। कंधा देने की आरज़ू में आदमी पर आदमी गिरता था जो जनाज़े तक पहुँच गया वह हटने का नाम नहीं लेता था। वहाबी, राफ़ज़ी, नैचरी भी बहुत शरीक थे। एक राफ़ज़ी बहुत कोशिश से जनाज़े तक पहुँचा उसे एक सुन्नी ने यह कहकर हटा दिया कि तमाम उम्र आला हज़रत को तुम लोगों से नफ़रत रही इसलिए जनाज़े को कांधा न देने दूँगा। उसने कहा भाई साहब मुझे यह अब कहाँ मिलेगें लिल्लाह अब न रोको। जनाज़ा हर वक़्त कम अज़ कम बीस कांधों पर रहा। पूरे शहर में किसी जगह नमाज़ की गुंजाइश न थी इसलिए ईदगाह के मैदान में नमाज़े जनाज़ा हुई पहले तो इस बात का ऐलान न था मगर, दूर तक छतें औरतों से और रास्ते मर्दों से भरे हुए इन्तेज़ार में थे कि इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म का यह आख़िरी जुलूस है लाओ नज़ारा कर लें। नमाज़ के बाद ईदगाह में ज़ियारत कराई गई और वापसी प तमाम राह में लोगों ने दिल खोलकर ज़ियारत की वसीअत के मुताबिक़ यह नज़ नातख़्वाह पढ़ते जा रहे थे –

क़ाबे के बदरिद दुजा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के शमसिद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद

ईदगाह पहुँचकर एक अजीब वाक़या और हुआ। वहाँ छह सात जनाज़े पहले से रखे हैं। आला हज़रत के जनाज़े का इन्तेज़ार हो रहा है। लोगों ने कहा कि तुम ने दस्तूर के मुताबिक़ अपने-अपने मुहल्ले में नमाज़े जनाज़ा पढ़कर दफ़न क्यों न किया तो उन्होंने कहा यह सब आला हज़रत क़िबला के फ़िदाई थे। इनकी जनाज़े की नमाज़ आला हज़रत के जनाज़े के साथ होगी। वह भी अजीब समा था कि इकट्ठे छह या सात जनाज़ों की नमाज़ एक साथ हो रही थी। दो एक जनाज़े देहात के थे बाक़ी शहर के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के। बीसयों लोग ईदगाह तक जनाज़े के आगे पानी छिड़कते चल रहे थे और उन्होंने ईदगाह में वुज़ू वग़ैरह का इन्तेज़ाम किया था। ज़ोहर की नमाज़ भी ईदगाह में अदा की गई उसके बाद जनाज़ा सौदागरी मौहल्ले में लाकर ख़ानकाहे रज़विया में सुपुर्दे .ख़ुदा कर दिया गया । यहाँ तमाम हाज़रीन ने अस्र की नमाज़ पढ़ी और उसके बाद .क़ुरआन ख़्वानी हुई और हिन्दुस्तान के कई शहरों और दुनिया के दूसरें मुल्कों में भी ख़त्में .क़ुरआन व इसाले सवाब किया गया। मक्का मुअज़्ज़मा से भी इसाले सवाब की इत्तेला मिली।

आला हज़रत बारगाहे रिसालत में

दारूल उलूम अशरफ़िया आज़म गढ़ के अज़ीमुल मरतबत मुहद्दिस हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब का बयान है इधर 25 सफ़र 1340 हिजरी जुमा के दिन 2 बजकर 38 मिनट पर बरेली शरीफ़ में आला हज़रत क़िबला दुनिया से रवाना हो रहे हैं, उधर बैतुलमुकद्दस के एक शामी बुज़ुर्ग 25 सफ़र 1340 हिजरी को क्या देख रहें हैं कि हुज़ूर -ए-अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं। हज़रात साहिबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम दरबार में हाज़िर हैं। ऐसा मालूम हो रहा है कि किसी के आने का इन्तेज़ार है। वह शमी बुज़ुर्ग अर्ज़ करते हैं मेरे माँ बाप हुज़ूर पर .क़ुर्बान किस का इन्तेज़ार हैं। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु ताआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अहमद रज़ा का इन्तेज़ार हैं। उन्होंने अर्ज़ की कि ये कौन हैं फ़रमाया हिन्दुस्तान में बरेली के बाशिन्दे हैं। बेदार हुए तो उन्होंने पता लगाया तो मालूम हुआ कि आला हज़रत अहमद रज़ा

हिन्दुस्तान के बड़े ही जलील–ओ– क़द्र आलिम हैं और अभी हयात हैं फिर वह मुलाक़ात के शौक़ में हिन्दुस्तान की तरफ़ चल पड़े। जब बरेली पहुँचे तो उन्हें बताया गया कि आप जिस आशिक़े रसूल की मुलाक़ात को तशरीफ़ लाये हैं वह 25 सफ़र 1340 हिजरी को इस दुनिया से रवाना हो चुका ।

शाह साहब से इस वाक़ये की तसदीक़ .खुद हज़रत मौलाना बद्रुद्दीन साहब ने की।

मज़ारे पुर अनवार

शहर बरेली शरीफ़ मौहल्ला सौदागरान में दारूल उलूम मन्ज़रे इस्लाम के पास एक पैकरे जलाल इमारत के अन्दर आपका मज़ारे पाक है आप का उर्स 23, 24, 25 सफ़र को होता है यहाँ दूर दूर से उलमा, ख़तीब, मशाइख़ तशरीफ़ लाते हैं और लाखों लोग शरीक़ होकर अपने दामनों को गाहरे मुराद से भरते है।

शजरा

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिए .खुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलायें रद्द शहीदे करबला के वास्ते
सय्यदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते
सिद्क़ सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इसलाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते
बहरे मारूफ़ो सरी मारूफ़ दे बेख़ुद सरी
जुनदे हक़ में गिन जुनैदे बासफ़ा के वास्ते
बहरे शिबली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अब्दे वाहिद बे रिया के वास्ते
क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अब्दुल क़ादिरे .क़ुदरत नुमा के वास्ते
अहसनुल्लाहु लहु रिज़क़न से दे रिज़्क़े हसन
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल अस्फ़िया के वास्ते

नसरबी स्वालेह का सदका स्वालहो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहईए जाँ फ़िज़ा के वास्ते
नूरे इरफ़ानो उलू हम्दो हुसना ओ बहा
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते
बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे गम गुलज़ार कर
भी दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते
खानए दिल को ज़िया दे रूए इमाँ को जमाल
शाहे ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते
दे मुहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए
ख्वाने फ़ज़्लुल्लाह़ से हिस्सा गदा के वास्ते
दीनो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्के़ हक़ दे इश्क़ीए इश्क़ इन्तिमा के वास्ते
हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीदे इश्के़ हमज़ा पेशवा के वास्ते
दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे शम्स दीं बदरूल उला के वास्ते
दो जहाँ में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रत आले रसूले मुक़तदा के वास्ते
कर अता अहमद रज़ाए अहमदे मुरसल मुझे
मेरे मौला हज़रते अह़मद रज़ा के वास्ते
सदक़ा इन अयाँ का दे छः ऐन इज़्ज़ इल्मो अमल
अफ़्वो इरफ़ाँ आफ़ियत इस बेनवा के वास्ते

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मायनी

असरार	भेद
अग़निया	अमीर लोग
असफ़िया	सूफ़ी लोग
इत्तेबाए सुन्नत	सुन्नत की पैरवी
इमदाद	मदद
इश्तेयाक़	शौक़
इसयाँ	गुनाह
इफ़्ता	फ़तवा
कुतबुल वक़्त	अपने वक़्त का कुतुब
.खुसरवा	बादशाह
ज़हर तक़वा	परहेज़गारी
फ़करे तसव्वुफ	फ़क़ीरी
फिरासत	अक्लमन्दी
बाअज़मत	इज़्ज़त वाला
बाहवाला	हवाले से
जूद	बिना मांगे मिलना
मुहिब	जिससे इश्क़ किया जाय
मोअज़्ज़िज़	माननीय
मशक्कत	मेहनत
मुख़्लिस	.खुलूस वाला
मसावात	बराबरी
मनाज़रा	साक्षातकार
मुताकब्बिर	.गुरूर करने वाला
मुखालिफ़	विरूद्ध
मुवाफ़िक़	पक्ष में
मुरतद	दीन से फिर जाने वाला
तहक़ीर	हक़ीर समझना
शफ़ीअ	सिफ़ारिश करने वाला
मुसदा	.खुशख़बरी

साजिद	सजदा करने वाला
सादिक़	सच्चा
तसद्दुक़	सदक़ा
रिफ़अत	बलन्दी
चश्म	आँख
चन्द्राने	जानते बूझते धोका देने वाले
अहबाव	रिश्ते दार
शमसुददुहा	चमकता सूरज
खुल्क़	आदत
अर्ज़	ज़मीन
खुल्द	जन्नत
रिजा	उम्मीद
अहानत	तौहीन
यास	ना उम्मीदी
मिल्क	मिल्कियत
दुवल	दौलत वाले

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमे बज़्म-ए-हिदायत पे लाखों सलाम
महर चर्ख़े नुबुव्वत पे रौशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम
शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहार-ए-शफ़ाअत पे लाखों सलाम
शबे असरा के दूल्हा पे दाएम दुरूद
नौश ए-बज़्म-ए-जन्नत पे लाखों सलाम
अर्श की ज़ेब ओ ज़ीनत पे अर्शी दुरूद
फ़र्श की तीबो-नुज़हत पे लाखों सलाम
साहिबे रजअत-ए-शम्स-ओ-शक़्कुल क़मर
नाइब-ए-दस्त-ए-क़ुदरत पे लाखों सलाम
जिनके ज़ेरे लिवा आदम-ओ-मन सिवा
उस सज़ाए सयादत पे लाखों सलाम
अर्श ता फ़र्श है जिसके ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत में लाखों सलाम
ख़ल्क़ के दादरस सबके फ़रयाद रस
कहफ़-ए-रोज़े मुसीबत ये लाखों सलाम
मुझसे बेकस की दौलत पे लाखों दुरूद
मुझसे बेबस की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम
जिसके आगे सरे सरवरां ख़म रहें
उस सरे ताज-ए-रिफ़अत पे लाखों सलाम
दूर-ओ-नज़दीक के सुनने वाले वह कान
कान-ए-लाल-ए-करामत पे लाखों सलाम
जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा
उस जबीन-ए-सआदत पे लाखों सलाम
जिनके सजदे को महराब-ए-काबा झुकी,
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम
अश्कबारी-ए-मिज़गा पे बरसे दुरूद
सिल्के दुर्रे शफ़ाअत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाह-ए-इनायत पे लाखों सलाम
नीची आंखो की शर्म-ओ-हया पर दुरूद
ऊंची बीनी की रिफ़अत पे लाखों सलाम
पतली पतली गुल-ए-क़ुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
वह ज़ुबा जिसको सब कुन की कुन्जी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

वह दुआ जिसका जोबन बहारें क़ुबूल
उस नसीम-ए-इजाबत पे लाखों सलाम
जिसकी तसकीं से रोते हुए हंस पड़े
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम
हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौज-ए-बहरे समाहत पे लाखों सलाम
जिसको ब़ार-ए-दो आलम की परवा नहीं
ऐसे बाजू की कुव्वत पे लाखों सलाम
नूर के चश्मे लहराएं दरया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम
ईद मुश्किल कुशाई के चमके हिलाल
नाख़ूनों की बशारत पे लाखों सलाम
दिल समझ से वरा है मगर यूँ कहूँ
ग़ुन्चा-ए-राज़-ए-वहदत पे लाखों सलाम
कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम
खाई कुरआँ ने ख़ाक-ए-गुज़र की क़सम
उस कफ़-ए-पा की हुरमत पे लाखों सलाम
जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफरोज़ साअत पे लाखों सलाम

पहले सजदे पे रोज़-ए-अज़ल से दुरूद
यादगारी-ए-उम्मत पे लाखों सलाम
किसको देखा यह मूसा से पूछे कोई
आँख वालो की हिम्मत पे लाखों सलाम
अलग़रज़ उनके हर मू पे लाखों दुरूद
उनकी हर ख़ू-ओ-ख़सलत पे लाखों सलाम
उनके हर नाम ओ निसबत पे नामी दुरूद
उनके हर वक़्त ओ हालत पे लाखों सलाम
उनके मौला के उन पर करोरो दुरूद
उनके असहाब-ओ इतरत पे लाखों सलाम
जिस मुसलमाँ ने देखा उन्हें एक नज़र
उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम
जिसके दुश्मन पे लानत है अल्लाह की
उन सब अहल-ए-मुहब्बत पे लाखों सलाम
ग़ौस-ए-आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवा-ए-शान-ए-क़ुदरत पे लाखों सलाम
बे अज़ाब-ओ-इताब-ओ-हिसाब-ओ किताब
ता अबद अहल-ए-सुन्नत पे लाखों सलाम
तेरे इन दोस्तों के तुफ़ैल ऐ ख़ुदा
बन्दा-ए-नंग-ए-ख़लक़त पे लाखों सलाम

मेरे उस्ताद माँ बाप भाई बहन
अहले बुलदो अशीरत पे लाखों सलाम
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत में लाखों सलाम
काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के क़ुदसी कहें हाँ 'रज़ा'
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

रुबाई

बलाग़ुल उला बे कमालिही
(पहुंचे बलन्दी को अपने कमाल से)
कशाफ़द्दुजा बे जमालिही
(दूर कर दिया अन्धेरे को अपने जमाल से)
हसुनत जमीओ ख़िसालिही
(हसीन हैं उनकी सब ख़सलतें)
सल्लू अलैहि व आलिही
(दुरूद भेजो उन पर और उनकी आल पर)
[शेख़ सादी रदियल्लाहु तआला अन्हु]

रुबाई

अल्लाह की सर ता बक़दम शान हैं ये
इनसा नहीं इन्सान वो इन्सान हैं ये
कुरआँ तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान ये कहता है मेरी जान हैं ये
[आला हज़रत मुहम्मद अहमद रज़ा खा रदियल्लाहु तआला अन्हु]